विश्लेषणात्मक उपकरणः प्रासंगिकता / उत्तरदायित्व

1. भूमिकाः

जैसा कि भूमिका में बताया जा चुका है कि एक दिए गए संदर्भ में गुणात्मक शिक्षा व्यवस्था को बनाने वाले आरंभिक निर्धारक बिंदुओं के रूप में यह रूपरेखा (Framework), दीर्घकालीन विकास उत्तरदायित्व एवं प्रासंगिकता को देखती है। पूरे विश्व में ना सिर्फ व्यक्ति, अपितु उनके परिवार उनके राष्ट्र शिक्षा में निवेश करते हैं, सिर्फ इसलिए नहीं कि यह मानव अधिकार है बल्कि इसके प्रलेख (दस्तावेज) के रूप में पड़ने वाले दीर्घाकालीन विकास के प्रभाव के कारण। चूंकि विकास आवश्यक रूप में प्रासंगिक होता है, तो विकास को आगे बढ़ाने वाली व्यवस्थाएँ शिक्षा एवं प्रशिक्षण पसंद करती हैं, एवं उनके लिए यह आवश्यक होता है कि वे प्रासंगिक रूप में उत्तरदायी हों। विकास संदर्भ के राष्ट्रीय, क्षेत्रीय, वैश्विक एवं समय से संबंधित विभिन्न आयाम होते हैं। ऐसी शिक्षा एवं प्रशिक्षण व्यवस्था जो वैयक्तिक एवं सामुहिक विकास आवश्यकताओं एवं आकांक्षाओं को पूरा करने में असमर्थ होती है उसे गुणात्मक शिक्षा नहीं माना जा सकता है। फिर भी नहीं के बजाए, अकसर, शिक्षा एवं प्रशिक्षण व्यवस्थाओं को उनकी वैयक्तिक एवं सामुहिक आवश्यकताओं एवं आकांक्षाओं की अप्रासंगिकता के कारण दोषी ठहराया जाता है। इस अप्रासंगिकता के चिन्ह्, व्यवस्थाओं के द्वारा शिक्षार्थी को निम्न बातों में योग्य बनाने का अनुभव की गई या वास्तविक अक्षमताओं से उभर कर आते हैं :– व्यवस्था के विभिन्न स्तरों पर प्रभावपूर्ण ज्ञानप्राप्ति में, शिक्षा प्राप्ति के विभिन्न स्तरों के अनुरूप निपुणता अर्जन में (अन्तर्राष्ट्रीय कौशल / निपुणता परीक्षा तकनीकी टिप्पणी 1 से प्रमाण), श्रम बाजार एवं कार्य संसार में प्रभावपूर्ण गतिशीलता में, दीर्घकालीन वृद्धि में प्रभावपूर्ण योगदान में (आर्थिक वृद्धि को गणित एवं विज्ञान के अंको से जोड़ने वाले प्रमाण, तकनीकी टिप्पणी 2) शिक्षा व्यवस्था को यह दोष भी दिया जाता है कि यह शिक्षार्थी को राष्ट्रीय एवं वैश्विक नागरिकता, नागरिक जवाबदेही, सामाजिक जुड़ाव, शांतिपूर्ण सहअस्तित्व एवं साथ रहने की भावना के लिए भी तैयार नहीं करती है। यह रूपरेखा बताती है कि शिक्षा एवं प्रशिक्षण व्यवस्था के विकास संदर्भ की अपर्याप्त समझ ही इसके भौगोलिक एवं क्षणिक विकास

संदर्भों से अप्रासंगिकता होने का, इसकी वैयक्तिक एवं सामुहिक विकास आवश्यकताओं के प्रति अप्रासंगिकता का, इसके उद्देश्य के प्रति अप्रभावशाली होने का एवं इस सभी कारणों से इसके खराब होने का आधारभूत कारण है। प्रभावपूर्ण एवं गुणात्मक शानार्जन उपलब्ध कराने हेतु व्यवस्था की पर्याप्तता को निर्धारित कराने करने वाले एक महत्वपूर्ण आरंभिक बिंदु के रूप में यह रूपरेखा शिक्षा एवं प्रशिक्षण व्यवस्था के विकास संदर्भों की एवं संरचनात्मक समझ एवं गहरा विश्लेषण करती है।

राष्ट्र के द्वारा परिभाषित एवं विचारित किए गए विकास के प्रति प्रभावपूर्ण योगदान देते हुए किस प्रकार एक सामान्य शिक्षा व्यवस्था विकास के प्रति संघर्षों को पर्याप्त रूप से कम कर सकती है – इस कार्य में राष्ट्र को सहयोग देना इस विश्लेषात्मक उपकरण का एक मुख्य बिन्दु है। (ज्यादा जानकारी हेतु मुख्य रूप version देखें)

इस विश्लेषात्मक उपकरण के द्वारा उठाया गया सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न हैः क्या हमारी सामान्य शिक्षा व्यवस्था अपने उद्देश्य एवं योजना नीति की दिशा अपने विकास संदर्भों से जोड़कर निकलती है। यह विश्लेषणात्मक उपकरण, उपयोग करने वालों के विश्लेषण को एवं सामान्य शिक्षा व्यवस्था एवं इसके विकास संदर्भों में विषमताओं, प्राथमिकता के आधार पर, इन विषमताओं के सुधार के लिए विश्लेषणात्मक ज्ञान को दृढ़ता प्रदान करता है। प्रासंगिकता निश्चित करने वाली कला के प्रति एवं किसी राष्ट्र विशेष को विकास संदर्भों के प्रति कुछ मुख्य प्रश्न उठाकर यह विश्लेषण सरल बनाया गया है।

2. पहचान – निदान एवं विश्लेषण :–

राष्ट्रीय स्तरीय प्रासंगिकता :–

1. हम अपने राष्ट्र के विकास के लिए अपनी धारणा/दर्शन के किस प्रकार वाणी देते हैं? यह धारणा/दर्शन कहाँ स्पष्ट होता है? कैसे एवं किसके साथ यह धारणा/दर्शन साझा करते हैं? इस धारणा/दर्शन की साझी समझ के प्रमाण कहाँ है? किस प्रकार यह धारणा/दर्शन को हम क्रियाशील बनाते है? यह हमारी सामान्य शिक्षा

व्यवस्था को सूचित करता है। इसके प्रमाण कहाँ है? इस धारणा/दर्शन को प्रवाहमान बनाये रखने के लिए क्या संरचना है? (तकनीकी टिप्पणी 3 विकास हेतु दृष्टिकोंण)

2. विकास की धारणा की परिभाषा के क्रियाशील होने हेतु क्या मुख्य आयाम है? इस क्रियाशील परिभाषा में कौन–कौन शामिल है? उनके इसमें शामिल होने का प्रमाण कहाँ है? (वचनबद्ध अभ्यास 1).

3. राष्ट्र मे विकास की क्रियाशीलता धारणा बनाने का उत्तरदायित्व कहां है? उत्तरदायित्व की कड़ियाँ किस प्रकार संबंधित होती हैं एवं सामान्य शिक्षा व्यवस्था की विकास प्रासंगिकता की दृढ़ता बताती है? उत्तदायी संरचनाएँ किस प्रकार पर्याप्त एवं दीर्घकालीन हैं?

4. हमारी विकास की अवधारणा के प्रति हमारी सामान्य शिक्षा व्यवस्था का उत्तरदायित्व किस प्रकार आश्वस्त किया जाता है एवं दीर्घकालीन है? इस दीर्घकालीन उत्तरदायित्व के प्रमाण कहां है?

5. राष्ट्रीय विकास से लाभ प्राप्त करने की स्थिति में हमारी सामान्य शिक्षा व्यवस्था कहां स्थित है? राष्ट्रीय विकास के मुख्य चरणों में शिक्षा व्यवस्था कहां स्थित है/इसे क्या स्थान प्राप्त है?

श्रम बाजार एवं श्रम उत्तरदायित्व का संसार

1. सामान्य शिक्षा का श्रम बाजार/श्रम उत्तरदायित्व का संसार आश्वस्त रूप से बनाए रखने के लिए क्या रचना है? (वचन बद्ध अभ्यास 2) इन रचनाओं के क्रियान्वयन के प्रमाण कहां है? (वचन बद्ध अभ्यास 3)
2. श्रम बाजार/श्रम उत्तरदायित्व का संसार हम किस प्रकार प्राप्त करते हैं एवं इसे दीर्घकालीन बनाते हैं? इस श्रम बाजार/श्रम उत्तरदायित्व के मुख्य चिन्ह् क्या हैं? इस दीर्घकालीन प्रासंगिकता के प्रमाण कहां है? (वचन बद्ध अभ्यास 4)

बह्य वैश्विक स्तर पर उत्तरदायित्व

1. वैश्विक विकास की चुनौतियों एवं अवसरों के प्रति हम सामान्य शिक्षा व्यवस्था के उत्तरदायित्व के प्रति किस प्रकार आश्वस्त होते हैं? एवं इसे दीर्घकालीन बनाते हैं? दीर्घकालीन वैश्विक प्रासंगिकता के प्रमाण कहां हैं?
2. वैश्विक विकास अवसरों से लाभ प्राप्त करने हेतु सामान्य शिक्षा व्यवस्था कहां स्थित है? वैश्विक विकास के खतरों से सामान्य शिक्षा व्यवस्था किस प्रकार संरक्षित है?

बह्य वैयक्तिक स्तर पर उत्तरदायित्व

1. वैयक्तिक रूप से शिक्षार्थियों की विकास आवश्यकताओं के प्रति उनकी महत्वाकांक्षाओं के प्रति एवं उनके परिवार, घर एवं समुदाओं की महत्वाकांक्षाओं के प्रति, सामान्य शिक्षा व्यवस्था सकारात्मक रूप से उत्तरदायी है। यह हम किस प्रकार सुनिश्चित करते हैं? व्यवस्था, इन महत्वाकांक्षाओं एवं आवश्यकताओं के विभिन्न स्तरों के बारे में किस प्रकार जानकारी लेती है? यह रचनाएँ काम कर रहीं हैं यह कैसे प्रमाणित होता है?

आंतरिक व्यवस्था का मेल एवं उत्तरदायित्व

1. सामान्य शिक्षा व्यवस्था के विभिन्न स्तर आंतरिक रूप से संगत है, एक दूसरे को सहारा देते हैं एवं समान रूप से एक दूसरे का शांतिवर्धन करते हैं – यह सुनिश्चित करने हेतु क्या कला रचना है? हम यह कैसे सुनिश्चित करते हैं कि सामान्य शिक्षा व्यवस्था के विभिन्न पक्ष आंतरिक रूप से एक दूसरे के प्रति संगत है, एक दूसरे को सहारा देकर उनका शक्ति वर्धन करते हैं?

2. विभिन्न रास्तों के ऐसे ही स्तरों के पार सामान्य शिक्षा व्यवस्था के स्तरों के मध्य, शिक्षार्थी के बदलाव को हम कैसे सहारा देते हैं?

कार्य की प्राथमिकताएँ

1. सामान्य शिक्षा व्यवस्था एवं राष्ट्र की विकास आवश्यकताओं के मध्य अलगाव के सबसे भयावह स्त्रोत कैसे एवं कहां है? इस अलगाव को हम कैसे ठीक कर सकते हैं? सामान्य शिक्षा व्यवस्था एवं अलग–अलग ग्राहक वर्ग की विकास आवश्यकताओं के मध्य साम्य न होने के सबसे गंभीर स्त्रोत कहां एवं कौन से हैं? इस साम्य ना होने की स्थिति को कैसे ठीक किया जा सकता है?

2. सामान्य शिक्षा व्यवस्था को दीर्घकालीन एवं पर्याप्त उत्तरदायित्व को सुनिश्चित करने एवं अलगाव कम करने के लिए सबसे त्वरित कदम क्या उठाए गए हैं?

विश्लेषणात्मक उपकरणः निष्पक्षता एवं समावेश

शिक्षा के सम्पूर्ण विकास के प्रभाव के निर्धारण तत्व के रूप में की भूमिका शैक्षिक उपलब्धि (गुण) को अलग करके देखती है बजाए के केवल शिक्षा प्राप्ति (शिक्षा में भागीदारी) के (तकनीकी टिप्पणी 1) यह, वास्तव यह तथ्य भी सामने लाती है कि संक्षेप में कहा जाए तो शिक्षा की गुणवत्ता एवं प्रभावपूर्ण ज्ञानार्जन में पक्षपात असमान विकास के बराबर होता है। अतः निष्पक्ष एवं समावेशी गुणात्मक शिक्षा एवं ज्ञानार्जन में प्रभावपूर्णता निष्पक्ष एवं समावेशी समाज को दीर्घकालीन रूप में बनाए रखने के लिए ज्यादातर रूप से आवश्यक माने जाने लगे हैं। इसी क्रम में, अन्तर्राष्ट्रीय मानव अधिकार संधियों के साथ शिक्षा के सारे अधिकारों की जिम्मेदारी लेनी ही पर्याप्त नहीं है। आवश्यक यह है कि सभी के प्रति गुणवत्ता शिक्षा एवं प्रभावपूर्ण ज्ञानार्जन के अवसरों की जिम्मेदारी ली जाए। फिर भी, अभी भी वैश्विक रूप से बहुत से ऐसे तत्व है जो (तकनीकी टिप्पणी 2) जो लाखों बच्चों, युवाओं एवं वयस्कों को गुणात्मक शिक्षा एवं प्रभावपूर्ण ज्ञानार्जन के अधिकार से वंछित किए हुए है। शिक्षा से जुड़ाव के मख्य बिन्दु के रूप मे सामान्य शिक्षा, शिक्षा एवं प्रशिक्षण के अन्य स्तरों की तुलना में सबसे ज्यादा सामाजिक निष्पक्षता को आवश्यक रूप से वहन करती है। यह ना केवल शिक्षा एवं प्रशिक्षण के लिए एक रास्ते का काम करती है बल्कि एक समावेशी एवं दीर्घकालीन विकास के भी दस्तावेज का कार्य करती है। सामान्य शिक्षा में पक्षपात व अपवर्जन के तत्वों को पहचानकर ठीन करना निर्णायक होता है।

इस प्रकार इन विश्लेषणात्मक उपकरण (ज्यादा जानकारी के लिए पूर्ण स्वरूप देखें) का उद्देश्य है कि सदस्य राज्यों को अपनी सामान्य शिक्षा व्यवस्था में अपवर्जन एवं पक्षपात के निर्णायक तथ्यों को पहचान कर उनका निदान एवं विश्लेषण करने में सहायता करें एवं इस विश्लेषण के आधार पर व्यवस्था के सभी स्तरों पर निदानात्मक हस्तक्षेप की योजना क्रियान्वित करें। यह विश्लेषणात्मक उपकरण जो सर्वाधिक

महत्वपूर्ण प्रश्न उठाता है वह है – गुणात्मक शिक्षा एवं प्रभावपूर्ण ज्ञानार्जन में सभी शिक्षार्थियों के लिए निष्पक्षता एवं समावेश, हमारी सामान्य शिक्षा व्यवस्था कैसे सुनिश्चित करती है ?

पहचान निदान एवं विश्लेषण

शिक्षा में, हमारी सामान्य शिक्षा व्यवस्था में एवं राष्ट्र में पक्षपात एवं अपवर्जन की स्थितियों की समझः

1. लिंग, आर्थिक स्थिति, योग्यता, भाषा, निवास स्थान, सामाजिक मूल, सजातिविषयक मूल, अयोग्यता, राष्ट्रीयता आदि के सामाजिक रूप से बनाई गई या मानी गई भिन्नताओं या विभेदों के आधार पर लोगों को प्रदत्त शैक्षिक अवसरों में क्या कोई अंतर है ? हमारे संदर्भ में अपवर्जन के महत्वपूर्ण तत्व क्या है ? शिक्षा में, किस श्रेणियों के लोग सर्वाधिक रूप से अपवर्जन अनुभव करते हैं ? किन श्रेणियों के लोगों के मध्य वृहद रूप से पक्षपात अस्तित्व मे है ? (किन्हें अपवर्जित (अलग) किया गया है इसकी सूचना एवं आंकड़े आवश्यक हैं तकनीकी टिप्पणी 3)

2. सामान्य शिक्षा के वह निर्णायक बिंदु कौन से हैं जिन पर अपवर्जन दृढ़ता से प्रकट होता है ? इन बिंदुओं के पहले क्या आता हैं इसे समाप्त कैसे किया जा सकता है ?

3. जो लोग अपवर्जन को महसूस करते हैं उनके प्रति यह कैसे प्रकट होता है? पक्षपात कैसे प्रकट होता है ?

शिक्षा में (असमानता) पक्षपात एवं अपवर्जन को समाप्त करने के लिए नीतियां एवं कार्य योजनाएं

1. शिक्षा में अपवर्जन को समाप्त करने हेतु वर्तमान रूप से कौनसी नीतियां, कार्यक्रम एवं हस्तक्षेप अस्तित्व में है ? यह प्रभावशाली हैं इसका क्या प्रमाण है, वर्तमान समय में मौजूद अपवर्जन के कुछ प्रकार क्या हैं एवं यदि है तो उन्हें किस प्रकार समाप्त किया जा सकता है ?

2. अपवर्जन के ठीक करने के लिए वर्तमान रूप से किन हस्तक्षेप कानून, नीतियां, व्यवस्था की संरचना, आर्थिक एवं क्रियाशील रूपरेखाएं, कार्यक्रम आदि लागू किए गए हैं ? इनके प्रमाण की प्रकृति क्या है ? इनका प्रमाण कहां है ? इस प्रमाण को हम दीर्घकालीन रूप से कैसे जांच/माप सकते हैं ?

3. शिक्षा में अपवर्जन के अपर, शिक्षा व्यवस्था से परे, कौन से वर्तमान हस्तक्षेप जैसे स्वास्थ्य, सामाजिक, न्यायिक सेवाओं का प्रभाव है? इसका प्रमाणा कहाँ है? इस प्रमाण को हम दीर्घकालिक रूप से कैसे पकड़ सकते है?

4. उपरोक्त प्रश्नों पर आधारित आपके विश्लेषण के आधार पर वे कौन सी बड़ी दरारे, रोड़े, बाधाएँ विरोधाभास एवं द्वन्द है जो आपके राष्ट्र में निष्पक्ष एवं समावेशी रूप से गुणात्मक शिक्षा एवं प्रभावपूर्ण ज्ञानार्जन उपलब्ध कराने के प्रयासों के बीच में आते है? इन दरारों को भरने के, रोड़ो को हटाने के, विरोधाभासों को मिटाने के एवं द्वन्द्वों को सुलझाने के क्या रास्ते हैं?

3. कार्य की प्राथमिकताएं

1. प्रभावपूण ज्ञानार्जन अनुभव एवं गुणात्मक शिक्षा के समावेशी एवं निष्पक्ष स्वरूप को प्रतिबंधित करने वाले तत्वों को दूर करने हेतु प्राथमिक रूप से लिए जाने वाले आवश्यक कदम कौन कौन से है ?

2. पक्षपात एवं अपवर्जन को समाप्त करने हेतु शिक्षा व्यवस्था की प्रभावशीलता को सुधारने के लिए, कौन से निर्णायक कदम हमें उठाना चाहिए ?

3. इन कदमों को उठाने में विभिन्न भागीदारों की क्या भूमिका होती है ?

III विश्लेषणात्मक उपकरण : निपुणता कौशल/सक्षमता

भूमिका :–[30]

गुणात्मक शिक्षा एवं प्रभावपूर्ण ज्ञानार्जन के विकासकारी प्रभाव को वास्तविक जामा उन निपुणताओं के क्रियान्वयन से पहनाया जाता है जिन्हें विशिष्ट सन्दर्भों में विकास हेतु अत्यावश्यक माना जाता है। विकास के सन्दर्भ बहुत तेजी से एवं कई बार अप्रत्याशित रूप से परिवर्तित हो रहे हैं। (विश्लेषणात्मक उपकरणः प्रासंगिकता/उत्तरदायित्व से जोड़ कर देखें)

गुणात्मक शिक्षा व्यवस्थाओं के न केवल उत्तरदायी शिक्षार्थी निपुणताओं की प्राप्ति को प्रभावशाली बनाने में सहायक होना चाहिए बल्कि इन शिक्षा व्यवस्थाओं को दीर्घकालीन रूप से उत्तरदायी बनाए रखने की आश्वस्ति भी देनी चाहिए। गुणात्मक शिक्षा व्यवस्था को शिक्षार्थियों को सतत् रूप से अपनी निपुणताओं का अनुकूलन करने के साथ साथ नई निपुणताओं को विकसित करने में सक्षम बनाना चाहिए। [31] (जीवन पर्यन्त शिक्षार्थी विश्लेषणात्मक उपकरण से जोड़ कर देखें।) यह निपुणताएं अपने कार्यक्षेत्र में विभिन्नता लिए होती है एवं आधारभूत कौशल, विषयक ज्ञान, संज्ञानात्मक कौशल एवं मृदूल कौशल से उभरकर व्यावसायिक कौशल तक आती हैं और हमें जटिल मांग को पूरा करने या एक निश्चित सन्दर्भ में जटिल मांग को पूरा करने या एक निश्चित सन्दर्भ में जटिल कार्य को सफलता पूर्वक एवं कुशलता पूर्वक संपन्न करने योग्य बनाती हैं। इन निपुणताओं का स्वरूप एवं पंहुच उतनी ही विभिन्नता लिए होते हैं जितनी कि स्वतंत्र अस्तित्व वाले राष्ट संस्थाएं एवं व्यक्ति [32] – जो उन्हें परिभाषित करते हैं। (तकनीकि टिप्पणी III.1) ज्ञान चक्र के द्वारा व्यक्ति जीवन पर्यन्त इन निपुणताओं/कौशल को अर्जित करता है। (जीवन

30

31

32

पर्यन्त शिक्षर्थी विश्लेषण उपकरण से जोड़े) औपचारिक अनौपचारिक एवं सामान्य शिक्षा एवं वातावरण से इन्हें प्राप्त किया जाता है। यदि जीवन चक्र के आरंभिक दौर में बंचित लोगों में इन कौशल/निपुणताओं को विकसित किया जाय सब यह कौशल एवं दीर्घकालीन समावेशी विकास के लिए सकारात्मक वातावरण तैयार करने में महती भूमिका निभा सकते है एवं सामाजिक आर्थिक असमताओं को कम कर सकते हैं। (वि0उ0 : निष्पक्षता एवं समावेश से जोड़ें) इन कौशलों की श्रंखला विकास की विभिन्न आवश्कताओं को पूरा करती हैं जिनमें एन लोकसंतुलन, न्यासशील, शांतिपूर्ण दीर्घकालिक समाज को सांस्कृतिक विभिन्नता एवं परस्पर मेल के आधार पर निर्मित करना एवं शिक्षार्थियों की योग्यताओं एवं क्षमताओं को पूर्णरूप से जीवनपर्यन्त विकसित करना भी शामिल है। जिससे वे प्राथमिकता के आधार पर जीवन व्यतीत कर सकें, जिम्मेदार नागरिक बनें, श्रम संसार एवं समाज के जटिल एवं सरल परिवर्तनों के अनुकूल बने एवं समाज को समालोचनात्मक रूप से विश्लेषित एंव परिवर्तन कर सकें।

ज्ञानार्जन के परिणाम कौशल सीख लेने के पर्याप्त प्रमाण होते हैं। यह प्रभावपूर्ण ज्ञानार्जन एवं गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा प्रदान करने वाली शिक्षा व्यवस्था के प्रभाव को बताते हैं। यह विश्लेषणात्मक उपकरण वांछित ज्ञानार्जन परिणामों को कौशल की अवधारणा पर केन्द्रित कर के देखता है। (निपुणताओं/कौशल की अवधारणा एवं विवाद के क्षेत्र, तकनीकि टिप्पणी III.2) यह, सदस्य राज्यों को उन कौशलों के गहन निदान में सहायक होने का उद्देश्य रखता है जो शिक्षार्थियों को दी गई विकास की कार्यसूची को प्रभावशाली रूप से सशक्त बनाते हों। शिक्षार्थी जो सीखते हैं वह ना केवल वांछित कौशलों एवं ज्ञानार्जन के परिणामों की स्पष्ट परिभाषा पर निर्भर करता है अपितु GEGAF के विभिन्न अन्तर्निहित तत्वों पर भी निर्भर करता है कि वे किस प्रकार चुने व प्रस्तुत किए जाते हैं (पाठ्यक्रम पर वि0उ0 से शिक्षकों पर एवं शिक्षण पर से जोड़े) वे कहां सिखाए एवं प्राप्त किए जाते हैं। (ज्ञानार्जन वातावरण पर वि0उ0 से जोड़) किस

प्रकार शिक्षार्थियों को सहूलियते दी जाती है (शिक्षार्थियों, शिक्षण एवं ज्ञानार्जन पर वि0उ0 से जोड़े)। हम उनके ज्ञानार्जन को कैसे जांचते हैं (मूल्यांकन पर वि0उ0 से जोड़े)। (ज्यादा जानकारी हेतु पूर्ण स्वरूप देखें) इस प्रकार इस विश्लेषणात्मक उपकरण को दूसरों के साथ जोड़कर एवं पूरक मानकर उपयोग में लाया जाना चाहिए।

इसका महत्वपूर्ण प्रश्न है कि हमारी कार्यसूची में मत्वपूर्ण योगदान देने हेतु ज्ञानार्जन के परिणाम प्राप्त करने के लिए हमारे सामान्य शिक्षा के शिक्षार्थियों के लिए कौशलों/निपुणताओं के महत्वपूर्ण समूह क्या है? इस प्रश्न को दो पक्षों में देखा जाता हैः–

(1) वांछित ज्ञानार्जन परिणामों की अवधारणा/मुख्य कौशलों का समूह (कौशलों की परिभाषा एवं चयन : सैद्धांन्तिक एवं संकल्पनीय आधार [33] तकनीकि टिप्पणी II.3) एवं आवश्यक ज्ञानार्जन परिणामों को प्राप्त करने हेतु नीतियों एवं हस्तक्षेपों का पुर्ननिरीक्षण एवं साथ ही साथ शिक्षा व्यवस्थाओं के दर्शन एवं तत्वों का पुर्ननिर्माण।

2. पहचान निदान –विश्लेषण :–

ज्ञानार्जन परिणामों की संकल्पना

1. **दर्शन एवं राष्ट्रीय रूपरेखाएँ :–** वर्तमान एवं भविष्य में हमें किस प्रकार का समाज हमें चाहिए – हमारें राष्ट्र का क्या दर्शन है? क्या हमारा दर्शन निप्पक्षता एवं समावेशी मुद्दों पर आधारित है? शिक्षा ने हमारे उद्देश्य व लक्ष्य हमारें वर्तमान एवं भविष्य के समाज के दर्शन के प्रति प्रासंगिक हैं?

   (वि0उ0 विकास प्रासंगिकता, निष्पक्षता एवं समावेश से जोड़े)

33

2. **कौशल/वांछित ज्ञानार्जन परिणाम :–** वांछित समाज बनाने हेतु हमारे नागरिकों को कौन कौन से मुख्य कौशल से सुसज्जित करना होगा – हमारी क्या समझ है इस विषय में ? (दीर्घकालिक एवं अल्पकालिक) हमारे कौन–कौन से वांछित ज्ञानार्जन के परिणाम हैं जिन्हें वर्तमान दरूप से समझा गया है एवं जो हमारे रष्ट्र के सन्दर्भ (स्तर, कौशल, ज्ञानार्जन के लक्ष्य) में संकल्पित किए गए हैं एवं भागीदारों के द्वारा साझे किए जाते हैं ? वांछित ज्ञानार्जन परिणामों में किस स्तर तक हमारे वर्तमान राष्ट्रीय विकास एवं शिक्षा नीति व कार्यक्रमों के उद्देश्य झलकते हैं ?

3. **वांछित कौशलों की पहचान/ज्ञानार्जन के परिणाम :–** हमारे राष्ट्र में वांछित मुख्य कौशलों को तय करने एवं इनके विकास में भागीदारों के योगदान को तय करने हेतु क्या किया गया है ? वांछित ज्ञानार्जन परिणामों की पहचान करने हेतु एवं प्राथमिकता तय करने हेतु शिक्षा व्यवस्थामें आन्तरिक एवं बाह्य रूप से, भागीदारों की हिस्सेदारी को लागू करने एवं इसे बढ़ाने हेतु क्या योजना है ?

(वि0उ0 शासन से जोड़े)

वांछित ज्ञानार्जन परिणामों को सुनिश्चित करना : नीतियों हस्तक्षेपों को सामने लाना साथ ही साथ शिक्षा व्यवस्था के तत्वों का समायोजन करना :–

1. **नीतियाँ :–** क्या वर्तमान राष्ट्रीय शिक्षानीतियाँ वांछित ज्ञानार्जन परिणामों के प्रति प्रसांगिक है ? कौशलों की समक्ष एवं कौशलों के विकास के प्रति क्या मतभिन्नता या विवाद जाता है। ज्ञानार्जन के परिणामों में निष्पाक्षता को व्यवहार में लाने हेतु क्या कुछ विशिष्ट नीति मापक अपनाए गए हैं ?

2. **पाठ्यक्रम :–** वर्तमान पाठयक्रम किस सीमा तक, शिक्षार्थियों को वांछित कौशलों तक ले जाने हेतु प्रासंगिक है ? पाठ्यक्रम को प्रभावपूर्ण रूप से विकसित करने हेतु कौन सी प्रक्रियाएं उपयोग में लाई गई है जो वांछित

कौशलों पर आधारित प्रक्रिया एवं मुख्य पाठ्यक्रम संयोजक हो सकती हैं एवं ज्ञानार्जन एवं शिक्षण का क्रय कम कर सकती है ? ज्ञानार्जन के क्षेत्र एवं विरोधाभासी मुद्दे एवं संबंधित सामग्री पाठ्यक्रम में किस प्रकार संयोजित की गई है ?

3. **शिक्षक साथ ही साथ शिक्षण व ज्ञानार्जन :–** शिक्षण की क्या समझ है कि शिक्षार्थियों को कौन सी कौशल सीखने चाहिए ? शिक्षक के कौशल को सुधारने हेतु क्या कार्य किए गए है ? शिक्षार्थियों की विभिन्नतापूर्ण आवश्यकताओं को वर्तमान शिक्षक नीतियाँ, प्रबंधन एवं शैक्षिक प्रक्रियाएं कैसे स्थान देती हैं ? शाला एवं कक्षा के स्तर पर कौशल कैसे सिखए एवं सीखे जाते हैं ?

4. **मूल्यांकन :–** मुख्य कौशलों को जिन्हें मापा जाना चाहिए वर्तमान मूल्यांकन प्रणाली कैसे समाहित करती है ? ज्ञानार्जन परिणामों (कौशलों के प्रकार, सीखने के स्तर एवं ज्ञानार्जन के परिणाम) की वर्तमान खामियां एवं उपलब्धियाँ क्या है सीखी गई निपुणताओं/कौशलों (तकनीकि सक्षमता, पाठ्यक्रम सुधार शिक्षक प्रशिक्षण, शासन, आर्थिक मुद्दे) को मापने की मुख्य चुनौतियां क्या है ? शिक्षार्थियों द्वारा मुख्य कौशलों के सीखे जाने को सुनिश्चित करने हेतु लागू किए गए हस्तक्षेपों व नीतियों के प्रभाव को हम कैसे मापते है ?अपेक्षित ज्ञानार्जन परिणामों की प्रासंगिकता को सुधारने हेतु मूल्यांकन के परिणाम कैसे उपयोग में लाए गए है ?

5. **ज्ञानार्जन हेतु वातारणः–** वांछित ज्ञानार्जन परिणामों की प्राप्ति हेतु किस सीमा तक हमने आवश्यक सीखने एवं सिखाने का वातावरण उपलबध कराया है ? वास्तविक जीवन परिस्थितियों की समझ सुलभ कराने हेतु सीखने के वातावरण का क्या योगदान है ?

3. कार्य की प्रथमिका :–

1. वैयक्ति एवं विकास आवश्यकताओं हेतु प्रासंगिक कौशलों के समूह को सीखने एवं विकसति करने में शिक्षार्थी को सक्षम बनाने हेतु एक प्रामाणिक नीति/अभ्यास की राह में कौन–कौन से ज्ञान विदार (gap) है जिन्हें दूर करना आवश्यक है ?

2. वांछित ज्ञानार्जन परिणामों ज्यादा प्रभावपूर्ण रूप से प्राप्त करने हेतु, हमारी शिक्षा व्यवस्था में क्या परिवर्तन (दर्शन, नीतियॉ, कार्यक्रम, हस्तक्षेप) करना चाहिए ? इन परिवर्तनों को सुलभ बनाने हेतु हमारी वर्तमान व्यवस्था में मौजूद कौन–कौन सी उपलब्धि कारक बाते हैं ? किस प्रकार से इन्हें और शक्ति शाली बनाया जा सकता है ?

3. पहचाने गए विदार (gaps) एवं प्रतिबंधों को प्राथमिकता के आधार पर समाप्त करने हेतु क्या आवश्यक कदम उठाने है ? वर्तमान आवश्यकताएं कौशलों की सतत् रूप से जानकारी प्राप्त करने की पुष्टि करतो हैं यह ना सिर्फ श्रम संसार के लिए अपितु वर्तमान समाजों में भागीदारी रखने हेतु एक घिर कर हो रही प्रक्रिया के लिए जीवन पर्यन्त ज्ञानार्जन हेतु अन्तर्राष्ट्रीय समुदायों ने 'मुख्य कौशलों' की एक अवधारणा विकसित करने में प्रगति की है, जिसमें ज्ञान, कौशल एवं विचार भाव के मूल को शामिल किया गया है। (वि0उ0 कौशल/निपुणता से जोड़े)

   विद्यालय जाने वाले बच्चों के लिए शिक्षार्थी एवं शिक्षार्जन/ जानार्जन के विषयों को GAGAF के दूसरों विश्लेषणात्मक उपकरणों में शामिल किया गया है। अतः यह विश्लेषणात्मक उपकरण मुख्यतः इन चुनौतियों पर प्रकाश डालता है कि क्षमताओं एवं जीवन पर्यन्त ज्ञानार्जन की संस्कृति को बनाया व निभाया कैसे जाए एवं किस प्रकार व्यवस्थित रूप से अवसर उपलब्ध कर कर उनकी उपयोगिता का संदेश दिया जाय जिससे ज्ञानार्जन एक ऐसा कार्य बन जाए जो लोगों के पूरे जीवन काल में

निर्बाध–सतत चलता रहे। (ज्यादा जानकारी के लिए पूर्ण रूप देखें) इस विश्लेषणात्मक उपकरण के द्वारा उठायागया सर्वाधिक महत्वपूर्ण प्रश्न है कि क्या हमारी शिक्षा व्यवस्था जीवन पर्यन्त ज्ञानार्जन की क्षमता विकसित कराती है एवं क्या हम अपने नागरिकों को जीवन पर्यन्त जानार्जन के प्रभावशाली अवसर उपलब्ध कराते हैं? जीवन पर्यान्त ज्ञानार्जन को बढावा देने हेतु अभ्यास एवं नीतियों के पक्ष में कुछ महत्वपूर्ण प्रश्न उठाने के द्वारा यह उपकरण, प्रत्येक राष्ट्र में जीवन पर्यन्त ज्ञानार्जन की व्यवस्थाओं एवं ऐसे ज्ञानार्जन के वातावरण के मूल्यांकन को सुलभ बनाने का उद्देश्य रखता है।

IV विश्लेषणात्मक उपकरण : जीवन पर्यन्त शिक्षार्थी

1. भूमिका :–

जैसा कि विश्लेषणात्मक उपकरण विकास की प्रासंगिकता एवं उत्तरदायित्व में बनाया गया है कि विकास सन्दर्भ तेजी से सतत् रूप से एवं कभी कभी अप्रत्याशित रूप से परिवर्तित हो रहें है। विकास प्रासंगिकता इस प्रकार सामयिक, भौगोलिक सन्दर्भों एवं विभिन्न भागीदारों से बदलती रहती है। इस परिवर्तन की तेजगति एवं जटिलता हमें मजबूर करती है कि विभिन्न सन्दर्भों एवं जीवन के विभिन्न पक्षों पर प्रभावपूर्ण कार्य करने हेतु हम तेजी से नए नए कौशलों के प्रति स्वयं को अनुकूल बनाएं। (वि0उ0 कौशल/निपुणता से जोड़े) यदि एक व्यक्ति जीवन पर्यन्त एक शिक्षार्थी के रूप में सीखता नहीं रहता है तो वह जीवन की चुनौतियो का सामना नहीं कर सकता है एवं समाज भी, यदि सीखने वाला समाज बन कर नहीं रहता है, तो दीर्घकालीन रूप से अस्तित्व नहीं बनाए रख सकता है। जीवन पर्यन्त ज्ञानार्जन को यूनेस्को के सदस्य राज्यों में अपनी प्रमुख अवधारणा के रूप में एवं सही मार्ग पर दीर्घकालिक अस्वित्व वाले भविष्य के निर्देशक तत्व के रूप में स्वीकृत किया है। केवल औपचारिक शालेय शिक्षा के द्वारा शिक्षा की गुणात्मकता निर्धारित नहीं होती है। अपितु यह सामान्य एवं अनौपचारिक ज्ञानार्जन अवसरों के सतत् प्रावधान से भी निर्धारित होती है। तकनीकि टिप्पणी IV.1) सामान्य, औपचारिक एवं अनौपचारिक ज्ञानार्जन अवश्यकताओं को परिभाषित करती हो, उन्हें विकसित कर, सभी वर्गों को उपलब्ध कराने की आवश्यकता है। सामाजिक, जनसंख्या संबंधित एवं आर्थिक कारक जुड़कर युवाओं एवं वयस्कों के ज्ञानार्जन एवं शैक्षिक आवश्कताओं पर ज्यादा गंभीर ध्यान देने की आवश्यकता पर बल डालते हैं। यह प्रश्न, उलझाने वाले ना होकर, जीवन पर्यन्त ज्ञानार्जन के विकास एवं सतत्ता में आने वाले प्रतिवंधों/बाधाओं की संरचनात्मक एवं व्यवस्थित पहचान सुलभ कराते है।

2. निदान पहचान एवं विश्लेषण :–

1. सामान्य शिक्षा के सुधारों व विकास में हम जीवन पर्यन्त ज्ञानार्जन को नीति निर्देशक सिद्धांत एवं मुख्य अवधारणा के रूप में कैसे प्रभावशाली रूप से अपनाते हैं।

2. सभी के लिए जीवनपर्यन्त ज्ञानार्जन के अवसर हम कैसे उपलब्ध कराते हैं? इन अवसरों के प्रभावशाली रूप से लोगों द्वारा अपनाए जाने के क्या प्रमाण है?

3. इन अवसरों में निष्पादता के क्या प्रमाण है? ज्ञानार्जन के अवसरों में कोई भेदभाव/अलगाव नहीं होगा इस बात को सुनिश्चित करने के लिए क्या नीति विकसित कर क्रियान्वित की गई है?

4. (तकनीकि टिप्पणी IV.2) क्या यह शिक्षा व्यवस्था ज्ञानार्जन के लचीले रास्तों को महत्व देती है जिससे कि स्त्री/पुरूष शिक्षार्थी अपने लिए आसानी से ज्ञानार्जन का रास्ता ढूढ़ निकालें। इस प्रकार क्या विभिन्न शैक्षिक उनुशासनों, पाठ्यक्रमों व स्तरों, औपचारिक एवं अनौपचारिक शिक्षा के मध्य के बनावटी अवरोध समाज किए गए है एवं क्या अनौपचारिक ज्ञानार्जन को एकीकृत दिया गया है?

5. (तकनीकि टिप्पणी IV.3) हमारे राष्ट्र में जीवन पर्यन्त ज्ञानार्जन की प्रगति को जांचने एवं मूल्यांकन करने की क्या पद्धति है?

लम्बवत् समाकलन :–

1. लोगों (शिक्षा, बच्चें, किसोर, वयस्क एवं वृद्ध) के जीवन की विकास की विभिन्न अवस्थाओं पर ज्ञानार्जन को सुलभ बनाने हेतु क्या कानून एवं नीतियॉ बनाई गई है?

2. सुर्दीर्घ आत्म शिक्षार्जन एवं ज्ञानार्जन को सुलभ बनाने हेतु ज्ञानार्थियों को मूल शिक्षा व्यवस्था कितने प्रभावशाली रूप से आधारभूत कौशलों से

सुसज्जित करती है ? (पाठ्यक्रम, शिक्षार्जन, शिक्षण, मूल्यांकन एवं कौशल पर आधारित वि0उ0 से जोड़े) इसके क्या प्रमाण हमारे पास है ?

3. शिक्षा कि विभिन्न क्षेत्रों एवं स्तरों (आरंभिक बचपन, प्राथमिक, द्वितीयक, व्यवसायिक, वयस्क एवं उच्च) कार्ययोजना विकसित की गई है ? इसके क्या प्रमाण है ?

4. जीवन पर्यन्त ज्ञानार्जन के अवसरों हेतु क्या संस्थागत व्यवस्थाएं की गई हैं जो अलग–अलग लचीचे, सुविधाजनक व प्रासंगिक उपाय उपलब्ध कराना सुनिश्चित करती है ?

क्षैतिज समाकलन

1. सीखने के विभिन्न तरीकों के मध्य आपसी प्रबलन, परिवर्तन एवं कटाव खत्म होने को सुनिश्चित करने की क्या योजनाएं है ? इस आपसी प्रबलन, आसान परिवर्तन एवं कटाव के खत्म होने के क्या प्रमाण है ?

2. औपचारिक एवं अनौपचारिक ढ़चों में हो रहे ज्ञानार्जन के मध्य मध्य सहक्रियाओं को उतपन्न करने एवं जुड़ाव पैदा करने के लिए क्या कार्ययोजना विकसित की जा रहीं है ? सामान्य एवं अनौपचारिक साधनों व ढांचों में अर्जित किए गए कौशलों को पहचानने हेतु कार्ययोजना कितनी प्रभावशाली है ? (तकनीकि टिप्पणी IV.4)

3. परिवार, विद्यालय, कार्यस्थल, संस्कृतिक एवं सामुदायिक ढ़ाचों के सन्दर्भ में पूर्ण जीवन कालिक व आयामी ज्ञानार्जन के अवसरों में ज्ञानार्जन को आगे बढ़ाने हेतु क्या कार्य योजना अपनाई गई है ? इस विभिन्न ज्ञानार्जन ढ़ाचों में ज्ञानार्जन के अवसरों के निष्पादन रूपसे मिल रहे लाभ का क्या प्रमाण है ?

4. जीवन पर्यन्त ज्ञानार्जन को सुलभ बनाने हेतु विभिन्न संस्थाएं एवं अन्य श्रृंखलाएं (संग्रहालय, पुस्तकालय, बगीचे, मनोरंजन स्थल, सांस्कृतिक

संस्थाएं, विश्वास आधारित संस्थाएं, मीडिया एवं सूचना व संचार प्रौद्योगिकी) किस प्रकार कार्य करते हैं ?

5. जीवन पर्यन्त शिक्षार्थियों को किन बड़े अवरोधों का सामना करना होता है एवं इन पर काबू पाने हेतु किन लक्ष्य आधारित नीति संगत उपायों का उपयोग होता है ? क्या कोई प्रमाण है कि यह लक्ष्य आधारित उपाय प्रभावशाली है ?

सक्षम बनाने वाले ज्ञानार्जन वातावरण का विकास :–

1. हमारे देश में गांवों, समुदायों शहरों एवं क्षेत्रों द्वारा क्या उपाय किए जा रहें हैं प्रत्येक नागरिक को जीवन पर्यन्त शिक्षार्थी बने रहने हेतु उत्साहित करने हेतु ? (तकनीकि टिप्पणी IV.5) इन प्रयत्नों से क्या सबक सीखे गए हैं ?

2. ज्ञानार्जन क अवसरों की सूचना प्रसारित करने एवं इनके आरंभ होने में मीडिया (सूचना तंत्र) सरकार से क्या आदेश प्राप्त करती है ? जीवन पर्यन्त ज्ञानार्जन के अवसरों को उपलब्ध कराने में सूचना तंत्र की पूर्ण शक्ति को उपयोग करने हेतु क्या नीतियां व योजनाएं विकसित व क्रियान्वित की गई है ? सूचना तंत्र यह भूमिका निभा रहा है इसके क्या प्रमाण है।?

3. मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा की गुणवत्ता सुनिश्चित करने हेतु क्या मुख्य उपाय किए जा रहे हैं ? यह उपाय कितन प्रभावकारी है ? क्या तक सूचना संचार तकनीकि को औपचारिक सामान्य एवं अनौपचारिक ज्ञानार्जन हेतु प्रभावशाली रूप से एकीकृत किया गया है ?

4. ज्ञानार्थियों को साभ्यवान बनाने एवं क्रियाशील करने हेतु एवं प्रोत्साहित करने हेतु एवं प्रोत्साहित करने हेतु 'ज्ञानार्थी' सप्ताह 'सप्ताह' एवं ज्ञानार्थी

महोत्सव जैसे और कौन से कायक्रम व गतिविधियॉ आरंभ की गई है। यह कार्यक्रम व गतिविधियां कितनी प्रभाव कारी हैं

कार्य की प्राथमिकताएं :–

1. एक ज्ञानर्थी समाज की ओर अग्रसर होने हेतु प्रगति में जीवन पर्यन्त ज्ञानार्जन के लिए आगे एकीकृत व्यवस्था को त्वरित रूप से व्यवहार में लाने हेतु मुख्य क्षेत्र है ?
2. जीवन पर्यन्त ज्ञानार्जन के लिए स्थितियों व अवसरों की उपलब्धता हेतु प्रमाण आधारित नीति हेतु कौन–कौन से ऐसे ज्ञान विदार gaps है। जिन्हें पूरा किया जाना है ?
3. पहचाने गए ज्ञान विदारों एवं अवरोधों को प्राथमिका के आधार पर समाप्त करने हेतु क्या आवश्यक कार्य करने है ?

V विश्लेषणात्मक उपकरण : ज्ञानार्जन

1. भूमिका :–

जिस प्रकार शैक्षणिक उधमों के अंतिम उत्पादक अधिगमकर्ता–शिक्षार्थी है ठीक उसी प्रकार इस उद्यम की अंतिम उत्पादन प्रक्रिया ज्ञानार्जन– अधिगम है। जैसा कि कौशलों पर आधारित विश्लेषण उपकरण में बनाया गया है ''किस प्रकार सीखना है'' यह सीख जाना अंतिम कौशल है एवं एक गुणवत्ता शिक्षा व्यवस्था की अंतिम जांच हैं। 21वी शताब्दी के बाजारो में नई चीजों को सीखना, अनुकूलन में त्वरित होना अंतिम आवश्यकात पेती है एवं तेजी से सीखना ही पूर्णता रखता है। मानव किस प्रकार सीखते हैं इस समक्ष के प्रति चिंता शैक्षिक अभ्यासों की सबसे बड़ी चुनौती बनी हुई है। ''लोग किस प्रकार सीखते है'' इस विषय में हम क्या जानते है इस बात से अधिगम के परिणाम एवं अधिगम के प्रति हमारी धारणाएॅ प्रभावित होती है। अधिगम प्रक्रियाएं एवं वातावरण जो हम तैयार करते हैं एंव विद्यालय के बाहर का वातावरण भी हमरी धारणाओं को प्रभावित करते हैं। विभिन्न दृष्टिकोणो से एवं विभिन्न अनुशासको जिनमें मानविकि, दर्शन, समाजशास्त्र, मानव जीवन विज्ञान, व्यवहारिक विज्ञान, संज्ञानात्मक विज्ञान, कप्यूटर विज्ञान, तंत्रिका विज्ञान पोषण एवं स्वास्थ शामिल हैं इन सभी के द्वारा एवं अन्य दृष्टि कोणों के द्वारा अधिगम का अध्ययन किया गया है। (तकनीकी टिप्पणी V.1 ज्ञानार्जन/अधिगम को सबसे प्रभावशाली सिद्धांत) वर्तमान समय में हमने 'अधिगम के विज्ञान' को विकसित होते देखा है जो कि तंत्रिका विज्ञान से जुड़ा हुआ है एवं तकनीकी विकास से मदद पाते हुए अधिगम प्रक्रिया के दौरान मस्तिष्क क्रियाशीलता के विश्लेषण में सक्षम होना है। इसी के साथ–साथ सामाजिक अधिगम सिद्धांत[34] (बंडूरा 1977) ने जे दस्तावेज प्रस्तुत किया था कि अधिगम, मूलभूत रूप से एक सामाजिक या समूहिक घटना है।

---

34 बंडूरा 1977

इस बात की जानकारी दिन प्रतिदिन बढ़ रही है। यह जानकारी ''कोमल कौशल'' एवं ''सामाजिक अधिगम परिणाम'' जो ना सिर्फ अपने स्वयं के अधिकारों में कौशल के रूप में बल्कि ''कठोर कौशल'' एवं ''संज्ञानात्मक अधिगम परिणय'' जैसे ज्ञान उपार्जन के बहुत महत्व के सरल साधनों के सामने हित कम स्तर के माने जाते थे, इन बिन्दुओं को शैक्षिक प्रक्रिया के मध्य बिन्दुओं के यप में ला रही है। (कौशल के विश्लेषणात्मक उपकरण से जोड़े) अधिगम को एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया के रूप में समझने में, तंत्रिका विज्ञान एवं सामाजिक अधिगम सिद्धांत की पूरकता नई सीमाएं दे रही है। प्राकृतिक एवं समाजिक विज्ञान दोनों से अधिगम हेतु शोध के प्रमाणों का एकत्रि करण, अधिगम से शिक्षा में एक महत्वपूर्ण अंतर बताता है जिसमें शिक्षा के ऊपर अधिगम का महत्व बढ़ता गया एवं शिक्षा को एक कम हमत्व को कल की बात समझ कर हटा दिया गया। अधिगम शिक्षा के बारे में 21वीं शताब्दी की चर्चा शुरू करता है। मुख्यतः यह प्रारंभिक दस्तावेजों जैसे डेलोर्स रिपोर्ट (1996) में दिखाता है जहाँ से 21वी शताब्दी की शिक्षा का हर स्तम्भ अधिगम के साथ आरंभ होता है। वर्तमान समय की सारी शैक्षिक कार्य योजनाएं अपने शीर्षकों में केवल अधिगम को स्थान देती है शिक्षा को नहीं। प्राथमिक नीति फोरम का विषय अधिगम है। (तकनीकि टिप V.2 2011 नीति के मुख्य निर्णय अधिगम हेतु) अधिगम मूल्यांकन एवं नेतृत्व एवं नेतृत्व जैसी दूसरी शैक्षिक प्रक्रियाओं के लिये विशेषक बन रहा है। 'अधिगम का मूल्यांकन' (विश्ले. उप. मूल्यांकन से जोड़े), अधिगम नेतृत्व (तक.टिप. V.3 शैक्षिक नेतृत्व एवं अधिगम नेतृत्व में अंतर) जैसी धारणाएं सामान्य होती चली आ रही है। मानव संस्थाओं एवं दूसरी संरचनाओं को, पर्याप्त रूप से अधिगम समाजों, अधिगम संस्थाओं, अधिगम राष्ट्रों एवं अधिगम शहरों की बात करने हेतु, अधिगम/ज्ञानार्जन के द्वारा मूर्त रूप दिये जाने के प्रयास भी हो रहे हैं। मात्र एक प्रक्रिया के रूप में नहीं बल्कि एक धारणा के रूम में अधिगम की प्रमुखता भी शिक्षा से स्कूली शिक्षा के दुर्भाग्यपूर्ण जुड़ाव को अलग करती है। गलत रूप से शिक्षा को स्कूली शिक्षा

के बराबर कर दिया गया है। शिक्षा जो विद्यालयों में नहीं होती है उसे अलग तरीके से नाम दे दिया गया ''अनौपचारिक'' एवंउसे द्वितीय स्थान या अनौपचारिक की तरह तैयार कर स्वतः घटित हुई अवस्थिति के समदा रख दिया गया। सही रूप से, अधिगम पहचाना जाना चाहिए पूरे समय पर हर कहीं पूर्ण जीवन में चलने वाली प्रक्रिया के रूम में। GEGAF अधिगम को शिक्षा के पहले की स्थिति मानता है। सभी सजीवों में अधिगम एवं प्राकृतिक प्रक्रिया है एवं मानव में तो विशेषतः है ही। अनुवांशिक रूप से मानव अधिगमकर्ता है। मानव अधिगम एक मूलभूत तत्व है। दूसरी ओर शिक्षा मानव द्वारा रचित है एवं शैक्षिक व्यवस्थाएं, प्राथमिक रूप से ही, अधिगम को सुचारू रूप से घटित होने एवं केन्द्रित रूप से नियंत्रित होते हुए संरचित करने हेतु बनाई गई थी। आज की स्थिति में, इस स्वीकारोक्ति के बाद कि शैक्षिक व्यवस्थाएं वांछित अधिगम को सुचारू रूप देने में ज्यादातर अप्रभावशाली रही है, अधिगम के ऊपर एक ताजे 'मूलभूत बातों के आधार' के रूप में ध्यान देने की आवश्यकता है। सर्वाधिक चिंतनीय है कि यह वास्तविकता कि शैक्षिक व्यवस्थाओं की एक बड़ी संख्या अधिगम को सरल बनाने में असफल रही है एवं इससें भी ज्यादा बुरी बात है कि इन व्यवस्थाओं ने मानव की अधिगम की सहज प्रवृत्ति के निष्फल कर दिया है। यहाँ चुनौती अधिगम को शिक्षा के विरूद्ध उठाने की नहीं है, परन्तु यह चुनौती है अधिगम को शैक्षिक उद्यम के मूलभूत स्वरूप में वापस लाने की। वर्तमान में अधिगम पर ध्यान देने की आवश्यकता है जिससे स्कूल शिक्षा से शिक्षा को सुलझाया जा सके एवं अधिगम हेतु बहु संरचनाओं, बहुपाथों एवं बहु संसाधनों को उपयोग में लाया जाय जिसमें ICTs के द्वारा संभव प्रयास भी शामिल हो। इस विश्लेषणात्मक उपकरण का मुख्य प्रश्न है (अधिक जानकारी के लिए पूर्ण रूप देखें) : हमारी सामान्य शिक्षा व्यवस्था के मूलभूत कार्य के रूप में अधिगम को रखने में क्या क्या बाधाएँ है एवं इन बाधाओं को कैसे समाप्त किया जा सकता है ?

(2) पहचान, निदान एवं विश्लेषणः–

अधिगम की स्थिति एवं समक्षः–

1. अधिगम एवं शिक्षा एवं विद्यालयीन शिक्षा के प्रति हमारी समझ क्या है? विवेचनात्मक भागीदारों के साथ इस समय को कैसे बांटा जाता है? इसे बांटा जाता है इसके प्रमाण कहां है? हमारी शिक्षा व्यवस्था में अधिगम, शैक्षिक नीतियों, कार्ययोजनाओं, कार्यक्रमों, दूसरी प्रक्रियाओं, संस्थाओं, संस्थागत् ढ़ाचों की आर्थिक व्यवस्थाओं एवं दूसरे स्त्रोतों को कैसे चलाता है? हमारी शिक्षा व्यवस्था को अधिगम चलाता है। इसके क्या प्रमाण है? इन प्रमाणों का दस्तावेजीकरण कैसे किया गया है एवं इनकी जांच कैसे की जाती है? हमारी सामान्य शिक्षा व्यवस्था में 'कैसे सीखा जाय' यह सीखना क्या यह एक महत्वपूर्ण परिणाम है? इस परिणाम की प्राप्ति को हम कैसे प्राप्त करते हैं? इसकी उपलब्धि को कैसे जांचते है?

2. अधिगम के विभिन्न स्वरूपों को हम कैसे पहचानते है? हमरी शिक्षा व्यवस्था में वह विभिन्न स्वरूप क्या है? इन स्वरूपों को परस्पर पूरकता को हम कैसे सुनिश्चित करते हैं? यह परस्पर पूरकता कितनी प्रभावशाली है? इसके प्रभव के प्रमाण कहां है? परस्पर पूरकता एवं इसके प्रभाव को हम कैसे बढ़ाते है?

3. अधिगम की हमारी समझ व ज्ञान दूसरी शैक्षणिक प्रक्रियाओं जैसे मूल्यांकन, शिक्षण, प्रबंधन एवं प्रशसन को किस प्रकार प्रभावित करती है? यह मुख्य स्त्रोतों जैसे पाट्यक्रम, अधिगम सामग्री, शिक्षक, भौतिक एवं मानसिक सामाजिक वातावरण को कैसे प्रभावित करते हैं? इस प्रभाव के प्रमाण क्या है? इस प्रभाव की लोकप्रियता को हम कैसये सुनिश्चित करते है? (तकनीकि टिप. V.4 छात्र अधिगम पर संयुक्त दृष्टिकोण)

प्रभावशाली अधिगम एवं नव परिवर्तन हेतु शोध प्रमाणों का उपयोगः–

1. अधिगम पर शोध प्रमाणों के विषय में हम क्या जानते हैं ? विवेचनात्मक भागीदार इस प्रमाण के विषय में जानते हैं यह हम कैसे सुनिश्चित करते हैं ? यह भागीदार कौन है ? इस ज्ञान की लोकप्रियता को हम कैसे सुनिश्चित करते हैं ? यह प्रमाण हम ठोस प्रभाव में कैसे बदलते हैं ? इस प्रभाव के क्या प्रमाण हैं ? इस प्रभाव को हम कैसे बढ़ाते है ? शोध–प्रमाणों एंव अभ्यास तथा इनके बदले स्वरूपों में हम संबंध कैसे बनाए रखते हैं ?
2. अधिगम के सरलतम प्रभावपूर्ण होने को बढ़ाने के लिए हमारे नए नवपरिवर्तन क्या है ? इन नवपरिवर्तनों को कैसे आरंभ किया गया है ? इनकी जांच के साथ प्रभावी रूप से इन्हें कैसे दस्तावेज में रखा गया है ? जब प्रभाव पूर्ण होते है तब इन्हें कैसे मापा जाता है ?

प्रभावपूर्ण ज्ञानार्जन/अधिगम को सम्यिक बनाना।

1. हम प्रभावपूर्ण अधिगम अवसरों की साम्यता कैसे सुनिश्चित करते हैं ? इस साम्य को स्थापित करने वाले कारक एवं आयाम क्या है ? प्रभावपूर्ण अधिगम अवसरों की जांच हम कैसे करते हैं ? प्रत्यक्ष व छदम प्रमाणों के रूप में हमारे पास क्या है ?

(3) कार्य की प्राथमिकताएँः–

1. हमारी शिक्षा व्यवस्था में प्रभावपूर्ण अधिगम प्राप्त करने हेतु किन मुख्य चुनौतियों व बाधाओं को समाप्त करना है ?
2. हमारे सभी अधिगम कर्ताओं के प्रति गुणवत्ता अधिगम देने हेतु हमारी शिक्षा व्यवस्था में, प्रमाण आधारित नीति व कार्य योजना बनाने के लिए अधिगम प्रक्रिया की हमारी समक्ष में कौन–कौन से ज्ञान विदार है जिन्हें भरना आवश्यक है।

3. प्राथमिक बाधाओं एवं पहचाने गए ज्ञान विदारों को समाप्त करने हेतु कौन–कौन से आवश्यक कदम उठाने हैं ? पहचाने गए कार्यों को कार्यान्वित करने हेतु क्या सहभागिता एवं स्त्रोत हैं ?

VI विश्लेषणात्मक उपकरण : शिक्षण

1. भूमिकाः–

अधिगम कर्ताओं की अपेक्षित कौशलों को प्राप्त करने हेतु योग्य बनाने एवं अधिगम को सुगम बनाने में शिक्षण सर्व प्रथम प्रक्रिया है। कक्षा में क्या होता है यह शिक्षा की गुणवत्ता के लिए बहुत महत्व रखता है।[35] शोध यह भी दर्शाते है कि कथा में वास्तव में क्या हो रहा है। यह सुनिश्चित करने के लिए केवल शिक्षक की रूपरेखा को निर्धारित करन ही पर्याप्त नहीं है[36] : शिक्षक व शिक्षण दो अलग यद्यपि बहुत ही आपस में जुड़े हुए मुद्दे हैं। शिक्षण व अधिगम प्रक्रियाएं न सिर्फ शिक्षा की गुणवत्ता के लिए एवं प्रभावशाली अधिगम अनुभवों के लिए महत्वपूर्ण हैं अपितु शिक्षा गुणवत्ता एवं अधिगम के बीच साम्य स्थापित करने के लिए भी आवश्यक हैं। प्रत्येक व्यक्ति अलग तरीके से सीखता है। अतः उन्हें सिखाया भी अलग तरीके से जाना चाहिए। अधिगमकर्ता अपनी पूर्ण अन्तः शक्ति को प्राप्त कर सकें इसके लिए शिक्षण विधियॉ, तरीके एवं मूल्यांकन प्रकारताएँ उन सभी लोगों को पूर्ण रूप से समझ लेने के कार्योंमें संलग्न है। शोध–भी इस तथ्य को दर्शाते हैं कि संदर्भों से अनुकूलन की महत्ता होती है क्योंकि विभिन्न राष्ट्र एवं छात्र विभिन्न शिक्षण पाठ्यक्रम की आवश्यकता महसूस कर सकते हैं (विषयवस्तु के ज्ञान के संदर्भों में एवं अनुदेशों के माध्यम के संदर्भों में) एवं छात्रों की रूपरेखा हेतु विभिन्न स्तरों की संरचनएं बुनी जा सकती हैं। सइ प्रकार विभिन्न सन्दर्भों में वर्तमान एवं पूर्व नियोजित उद्देश्यों की प्रसंगिकता को समालोचनात्मक रूप से (पाठ्यवस्तु, संरचना एवं शिक्षण के सन्दर्भों का ध्यान रखते हुए) मूल्यांकन करना महत्वपूर्ण है। किस प्रकार का शिक्षण आवश्यक है जिसे उपलब्ध कराया जाना चाहिए–इसे आकार देने। निर्धारित करने का कार्य अधिगमकर्ता एवं अधिगम परिवेश के द्वारा किया जाना

---

35 Bernard J.M. Tiyab B.K. 4 Vianou k. (2004)

36 UNESCO (2004) EFA Global Monitoring Report 2005, The quality Imperative.

चाहिए। शोघ [37] शोध बताता है कि जिन राष्ट्रों ने अपनी शिक्षा व्यवस्था को सुधरा है उन्होंने कहा सामान्य सिद्धान्तों का पालन किया है एवं साथ ही साथ अपनी शिक्षा व्यवस्था की वर्तमान स्थिति से संगत हस्तक्षेप को भी अनुकूल बनाया है। तकनीकि टिप्पणी VI. I : अच्छे शिक्षण के सामान्य लक्षण)

इस विश्लेषणात्मक उपकरण का सम्पूर्ण उद्देश्य (ज्यादा जानकारी हेतु पूर्ण रूप देखें) है कि प्रभावपूर्ण अधिगम एवं सामान्य शिक्षा की गुणवत्ता एवं साम्य में योगदान देने हेतु शैक्षिक प्रक्रियाओं के विश्लेषण को सबल बनाया जाय। यह विश्लेषण उप. जिस सर्वाधिक महत्वपूर्ण प्रश्न को उठाता है यह है कि क्या हमारी शिक्षण प्रक्रियाएं, हमारे सभी शिक्षार्थियों/अधिगम कर्ताओं के लिए गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा एवं प्रभावपूर्ण अधिगम अनुभवों की प्राप्ति को सुगम बनाती हैं अथवा इनमें बाधा उत्पन्न करती है? शिक्षा पर असर करने वाले एवं प्रभाव डालने वाले महत्वपूर्ण कारकों के संबंध में कुछ मुख्य प्रश्न उठाकर इस सर्वाधिक महत्वपूर्ण प्रश्न की जांच को सरल वनाया गया है।

2. पहचान निदान व विश्लेषण :–

एक प्रभाव पूर्ण शिक्षण प्रक्रिया को समझानाः–

1. गुणवत्ता शिक्षा या प्रभावशाली शिक्षा की महारी कार्य में आने वाली समझ कया है? इसे किसने परिभाषित किया है? प्रभावशाली या गुणवत्ता कि कार्य में आने वाली शिक्षा परिभाषा को निर्धारित करने में शोध व नवप्रवर्तन की क्या भूमिका है? हमारे प्रमाण शोध एवं नवप्रवर्तन के द्वारा सूचित किए जाने हैं इसके प्रमाण कहां है? इस समक्ष का दस्तावेजीकरण एवं बांटने की क्या प्रक्रिया है? यह साझा हो रही है इसके प्रमाण कहां है? हमारी शिक्षा संरचना की विभिन्नता की जानकारी

---

37 Mc kinsey 4 Cie (2010) How the world's most Improved school systems keep getting better.

लेते हुए, हमारी गुणवत्त/प्रभावशाली शिक्षण की परिभाषा में अधिगमकर्ताओं एवं शिक्षकों को प्रमुख कारकों के रूप में देखते हुए हमारी समक्ष कैसे कार्य कारती है ?

2. मूलभूत शिक्षण बिधियों की जानकारी हम कैसे प्राप्त करते हैं (तकनीकी टिप्प. VI. 2 विभिन्न शैक्षिक विधियाँ एंव सामान्य शिक्षा व्यवस्था में सूचीपत्रों का संग्रह कैसे करते हैं ? इन सूचीपत्रों का चयन कैसे होता है ? वांछित कौशलों की प्राप्ति में एंव अधिगम के प्रभावपूर्ण बनने में सुगमता लाने में यह किस प्रकार प्रभावशाली होते हैं ?

महत्वपूर्ण शिक्षण एवं साम्यः–

1. जैसे कि हम क्रियान्वयन में बनाते हैं कि हमारी सामान्य शिक्षा व्यवस्था के हमारे सारे अधिगमकर्ताओं को प्रभावपूर्ण शिक्षण की अवस्थिति प्राप्त होती है। इसे हम कैसे सुनिश्चित करते है ? प्रभावशाली शिक्षण के प्रति साम्यपूर्ण प्रदर्शन के प्रमाण कहाँ है ? जहां साम्य नहीं है वहा उपलब्ध निदानात्मक उपाय क्या है ? यह उपाय कम करते हैं इसके प्रमाण कहां है ? विभिन्न रखने वाले अधिगम भांतियों/ज्ञानार्थियों हेतु प्रभावपूर्ण शिक्षा के विभिन्न विभिन्न प्रभावों को हम कैसे माप पाते है ? इन विभिन्न विभिन्न प्रभावों को मापने के लिए विभिन्नता के किन आयामों का उपयोग हम करते है ?

<u>शिक्षण की सबल बनाना एवं जांचनाः–</u>

1. प्रभावपूर्ण शिक्षण को पहचानने एवं इसका दस्तावेजी करण करने हेतु हम किन तकनीकों को अपनाते हैं ? एक बार पहचानने के बाद हम कया निदानात्मक उपाय अपनाते है ? यह निदानात्मक शिक्षण को सबल बनाने में यह उपाय कितने प्रभावशाली हैं ? यह काम करते हैं इसका प्रमाण कहां है ?

2. शिक्षण का मूल्यांकन कौन करता है? इसमें कार्यरत् भागीदार कौन है? शिक्षण का मूल्यांकन करने वाले भागीदारों का चयन किस प्रकार होता है? क्या अधिगमकर्ता, पालक व शिक्षक इन भागीदारों का हिस्सा हैं? यह भागीदार कितने प्रभावपूर्ण तरीके से प्रक्रिया में भाग लेते है? इस प्रभाव के प्रमाण कहां है? शिक्षण के प्रभावपूर्ण होने के मूल्यांकन से हम किस प्रकार प्रतिपुष्टि का उपयोग करते है? इस उपयोग के क्या प्रमाण है? इस उपयोग के प्रभाव क्या हुए है? इस प्रभाव के प्रमाण कहाँ है?

3. शिक्षण प्रक्रिया के हमारे मूल्यांकन में क्षेत्रिय, राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय मूल्यांकनों के परिणाम कैसे उपयोग किए जाते है?

4. प्रभावपूर्ण शिक्षण को हम कैसे सबल बनाते हैं एवं कैसे पुरूस्कृत करते हैं? प्रभावपूर्ण शिक्षण को हम कैसे सतत् रखते हैं? (तकनीकी टिप्पणी VI. 3. शैक्षणिक स्वतंत्रता एवं निर्देशात्मक पाठ्यचर्या)

शिक्षण हेतु स्थितियाँ/शर्ते :–

1. जैसे कि हम इसे संक्रियात्मक यप से परिभाषित करते है। उस प्रकार से प्रभावशाली शिक्षण के उत्प्रेरण हेतु एवं इसें सबल बनाने हेतु उपयोगी परिवेश को हम संक्रियात्मक रूप से कैसे परिभाषित करते हैं? इन परिवेशों के स्तर क्या है?इन परिवेशों के मुख्य लक्षण क्या है? सबसे ज्यादा प्रभावपूर्ण कारक/लक्षण क्या है? हमारी सामान्य शिक्षा व्यवस्था के विभिन्न सन्दर्भो में यह कैसे डाले जाते है? विशिष्ट संदर्भो में इन परिवेशों के एवं इनके विशिष्ट तत्वों के प्रभाओं के क्या प्रमाण है? (अधिगम परिवेश वातावरण के विश्लेषण उपकरण से जोड़े)

2. अपेक्षित अधिगम परिणामों को प्राप्त करने हेंतु शिक्षण एवं अधिगम में किस प्रकार एवं किस सीमा तक सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी का उपयोग हो रहा है। जैसा कि हम संक्रियात्मक रूप से इसे परिभाषित करते है।

क्या हम जानते है कि क्या सूचना एवं संचार प्राद्योगिकी के आने से प्रभावपूर्ण शिक्षण में सुधार हुआ है ?

कार्य की प्राथमिकताएं :–

1. प्रभावपूर्ण शिक्षण के संबंध में हमारे लक्ष्यों हेतु क्या विशिष्ट शक्ति हमें प्राप्त करनी होगी ? प्रभावपूर्ण शिक्षण में बाधा डालने वाले समस्या क्षेत्र क्या हैं ?
2. शिक्षण प्रकिया के परिणामों को और उत्कृष्ठ बनाने हेतु हमें और कौन कौन से परिवर्तनों को लाना होगा ? हमारी सुधारात्मक एवं उन्नत योजना में कक्षा से परे अन्य कौन–कौन से क्षेत्र जोड़ने होंगे ?
3. सभी के लिए गुणवत्ता शिक्षा के लक्ष्य को प्राप्त करने हेतु हमारे विद्यालयों में शिक्षण में सुधार लाने के लिए एक प्रमाण आधारित नीति व कार्ययोजना में कौन–कौन से ज्ञान विदार है ? जिन्हें दूर करना है। (विदर–gap)
4. पहचाने गए शान विदारों एवं प्राथमिक प्रतिबंधों को समाप्त करने हेतु क्या आवश्यक कदम उठाने हैं ?

VII विश्लेषणात्मक उपकरण : निर्धारण

1. भूमिका :–

सामान्य शिक्षा व्यवस्था के विभिन्न स्तरों पर प्राप्त किए जाने वाले अधिगम परिणामों एवं जिन साधनों द्वारा इन्हें प्राप्त किया जाना है इन सब का विस्तार व प्रकृति शैक्षिक कार्यक्रम य पाठ्यचर्या में बताई जाती है। वहीं, दूसरी ओर पाठ्यचर्या अपने संकेत राष्ट्रीय विकास के लक्ष्यों व प्राथमिकताओं से प्राप्त करती है। (प्रसांगिकता/उत्तरदायित्व विश्ले.उप. अधिगमों) प्रक्रियाएं इन परिणामों का क्रियान्वयन कर इन्हें प्रभाव देती है। निर्धारण यह सुनिश्चित जांच करता है कि यह अनुबद्ध परिणाम प्राप्त किए गए है य नहीं यद्यपि यह, अधिगम को निर्देशित किये जाने या इसके उपयुक्त रूप से घटित होने को भी दर्शा सकता है। जिस सीमा तक अनुबन्ध परिणाम प्राप्त किए गए है। (वि.उ.–कौशल) यह निर्धारण भले ही शिक्षा की गुणवत्ता का विशिष्ट चिन्ह ना हो, पर यह एक प्रमुख [38] संकेत रहता ही है साथ ही साथ पाठ्यचर्या के क्रियान्वयन शिक्षण व अधिगम को भी एक प्रमुख संकेत के रूप में यह कार्य करता है। इसलिए यह कहा जाता है कि निर्धारण प्रक्रिया घटित हुए अधिगम, मुख्यतः परिभाषित क्षेत्रों जैसे– साक्षरता एवं संख्यापाठन में सीमित तत्व प्राप्त करने में सक्षम होती है। (Fig. I)

---

38 सामान्य रूप से दर्शाना जरूरी है कि निर्धारण एक व्याख्याता कार्य नहीं करता है (i.e. व्यवस्था की स्थिति बनाते हुए)। परन्तु एक नियामक कार्य करता है। अतः यह कहा जाता है कि परीक्षा में पहचाने गए अधिगम व शिक्षण के ढांचे होते हैं। यह क्षेत्रीय व राष्ट्रीय दोनों स्तरों पर हो सकता है। यह जटिल रूप से नकारात्मक तत्व नहीं है परन्तु एक निर्धारणकर्ता को इतना जागरूक रहना चाहिए कि वह प्रभावशाली रूप से शिक्षण – अधिगम को गति प्रदान करता रहे। अन्तर्राष्ट्रीय निर्धारण के संबंध में इसे 'PISA-effect' (PISA द्वारा प्राप्त किए जाने वाले अधिगम परिणामों हेतु कार्यक्रम में लाए जा रहे ढांचों से संबंधित लक्ष्य)।

निर्धारण स्वयं में ही एक विविध शैक्षिक प्रक्रिया है। (तकनीकी टिप्पणी VII. I) यह, उद्देश्य, निर्धारण के तरीके [39] एवं क्षेत्र में विविधता लिए रहती है। अधिगम के लिए निर्धारण एवं अधिगम के निर्धारण में एक आरंभिक अंतर करना आवश्यक होता है। अधिगम के लिए निर्धारण एक शैक्षणिक प्रक्रिया के रूप में निर्धारण कार्य से संबंधित है। इसके लिए अधिगमकर्ता के लिए प्रति पुष्टि अत्यावश्यक है। [40] एक सवन्यिी स्तर पर, सम्पूर्ण रूपेण शैक्षिक व्यवस्था की उपलब्धियों को जांचने हेतु अधिगम का निर्धारण आवश्यक हैं सर्वान्गी स्तर पर अधिगम का निर्धारण नीति पाठों में भी परिलक्षित हो सकता है। एवं इस अर्थ में इस स्तर पर अधिगम का निर्धारा (यद्यपि इस भाव को सामान्यतः सर्वान्गी अधिगम से नहीं जोड़ा जाता है।) हो सकता है इस घारे तक ऐसे बड़े पैमाने के निर्धारण आम तौर पर वास्तविक परीक्षा के अलावा अधिगम के साथ जुड़े हुए कारकों के निर्धारण के लिए ऐसे उपकरणों का उपयोग करके होता है जो किसी रूपरेखा में आधार मूल होते है। जैसे कि genesic CIPP Model (CIPP सन्दर्भ आगत, प्रक्रिया एवं उत्पाद के लिए आते हैं साथ का चित्र 2 देखें) जो कि उदाहरर्णाथ लैटिन अमेरिकी प्रयोगशाला में शिक्षा की गुणवत्ता निर्धारण के लिए उपयोग किया था।

यह विश्लेषणात्मक उपकरण (कृपया ज्यादा जानकारी हेतु पूर्ण स्वरूप देखें) लक्ष्य करता है। उपयोगकर्ताओं को सहायता देते हुए निदान करने में कि यदि है तो किस सीमा तक वर्तमान निर्धारण व्यवस्था, बाधाओं का एक हिस्सा है जो

---

39 अपने उद्देश्यों के अलावा, मूलभूत रूप से निर्धारण के लक्ष्य भिन्न हो सकते है। उदाहराणार्थ, सम्पूर्ण रूपेण स्वान्गी निष्पादन का निर्धारण करने हेतु छात्रों का निर्धारण किया जा सकता है। छात्र निर्धारण का मुख लक्ष्य नही है– व्यवस्था निर्धारण का मुख्य लक्ष्य है यह याद रखना होगा। (निर्धारण के लक्ष्य Fig . 2 देखें) ।

40 Wukkuan /d, 2010 प्रभावपूर्ण अधिगम परिवेशों हेतु रचनात्मक निर्धारण H. Damont. D. Istance 4 F, Benavides (Eds.) अधिगम प्रकृति : अभ्यास प्रेरणा हेतु शोध उपयोग (PP. 135-159) Paris Oecd

शिक्षा गुणवत्ता के वांछित एवं बनाए गए लक्ष्यों तक पहुंचाने में आती है। हमारी निर्धारण व्यवस्थाओं के निदान में प्रमुख प्रश्न है कि अधिगम प्रभाव एवं हमारी शिक्षा व्यवस्था की गुणवत्त को सुधारने में निर्धारण किस प्रकार योगदान दे सकते हैं। इस प्रमुख प्रश्न का निदान कुछ प्रमुख प्रश्न उठाकर किया गया है। जो कि निर्धारण नीतियों स्थित रूपरेखाओं एवं विधियों, कार्यान्वयन के ढ़ांचों एव निर्धारण परिणामों से समुचित सबल लेने की व्यवस्थाओं, एवं शिक्षा प्रक्रियाओं व परिणामों के विभिन्न पक्षों को सुधारने हेतु इन निर्धारण परिणामों के उपयोग से संबंधित है।

2.पहचान निदान व विश्लेषणः–

निर्धारण नीतियाँ–रूपरेखाएं व विधियाँः–

1. क्या हमारे पास एक राष्ट्रीय योजना/नीति/स्थिति पत्रक शिक्षक निर्धारण पर है? इदि है तो यह कितन नवीन हैं? (ISCED एवं स्थिति स्थानीय क्षेत्रीय, एवं राष्ट्रीय के संदर्भ में) कौन से शैक्षणिक स्तर एवं विषम इसके अर्न्तगत आते है? क्या इसका मूल्यांकन हुआ है?
2. निर्धारण हेतु, उद्देश्यों, लक्ष्यों, एवं विषयवस्तु को चुनने की सीमा, उदाहरणार्थ राष्ट्रीय निर्धारण में, किस तरह से इस बात से जुड़ी है कि निर्धारण हेतु क्या सरल है न सिर्फ इस विषय में बल्कि इसके अधिगम कर्ताओं के अधिगम परिणामों के संबंध में भी, इन सभी विषयों पर देश क्या सोचता है?
3. निर्धारण के क्षेत्र को निश्चित करने हेतु क्या कसौटियॉ उपयोग में लाई गई है? राष्ट्रीय निर्धारण जिसमें किया जा रहा है उसके स्तर पर क्या कसौटियां निर्धारण के लक्ष्यों व उद्देश्यों को स्पष्ट करने हेतु आपस में जोड़ी गई हैं। क्या प्रमाण है कि क्षेत्र के निर्धारण एवं स्तर जिन पर

निर्धारण हो रहा है उन्हें शिक्षा व्यवस्था की गुणवत्ता में सुधार हेतु योगदान देने योग्य बनाया गया है ?

4. सामान्यतः इस देश में किस सीमा तक निर्धारण प्रभावकारी है ? किस छोर तक ? क्या यह समावेशी है ? किस स्वरूप में ? इसके क्या प्रमाण हमारे पास है ? प्रत्येक स्तर पर उपलब्धियों की दृष्टि में यह व्यवस्था कहां खरी उतरती है क्या हम जानते है ? (विश्ले. उप. समानता एवं समावेश)

निर्धारण का कार्यान्वयनः–

1. क्या कोई शैक्षिक निर्धारण नीति है जिसे क्रियान्वित/कार्यरूप में आरंभ किया गया है ? हम कैसे जानते है ? निर्धारण का क्रियान्वयन किन स्तरों पर किया गया है ? इसके उद्देश्य क्या हैं ?

2. क्या प्रमाण है कि निर्धारण का क्रियान्वयन समावेशकिरण एवं वास्तविक अभ्यासों के नियमों के अनुसार किया गया है ? यह किस पर आधारित है ? (समानता एवं समावेश पर विश्ले. उप.)

3. निर्धारण का क्रियान्वयन कौन करता है ? निर्धारण के प्रकारों के द्वारा यह किस प्रकार भिन्न होते हैं ?

4. परीक्षणों की अवधारणा कैसे होती है, (i.e. परीक्षण किस प्रकार विकसित किए जाते हैं ?) एवं इसके लिए अवधारणात्मक आधार क्या है ? (उदाहरणार्थ एव पाठ्यक्रम विश्लेषण या जीवन कौशलों का एक अनुस्थापन) विषय [41] को वर्गीकृत करने हेतु क्या मनोमिति से संबंधित

---

[41] मुख्य मनोमिति संबंधित विषयों के लक्षणों में कठिनाई व अंतर शामिल होते हैं परन्तु दूसरे लक्षण भी इनमें उपस्थित होते हैं। शोध कार्यप्रणाणी के अनुसार मापन उपयोग करते समय विषय कठिनाई उत्पन्न होती है। इसे करने की प्रक्रिया को विषय अशांकन कहलाती है। मापन के नए नमूने जैसे कि 2P2 एव 3P2 भी महत्व पा रहे हैं।

व तकनीके उपयोग में लाई गई है एवं किस सीमा तक विषय लक्षणों को उपलब्धि परिक्षणों के विकास में ध्यान में रखा जाता है? क्या बंद व खुले विषय उपयोग में लाए जाते हैं? परीक्षण अवधारणा के संबंध में क्या मानक एवं अमानक परीक्षणों का अच्छा मिश्रण उपलब्ध है? (तकनीकि टिप्पणी VII.3 वैकल्पिक निर्धारण)

5. क्या उन 'सम्बद्ध कारकों' को भी निर्धारण माप रहा है जो विश्लेषण को सुगम बनाते हैं (उदाहरण आयु, लिंग, सामाजिक आर्थिक स्तर एवं दूसरी पृष्ठभूमि सूचनाओं को ध्यान में रखते हुए)? विश्ले.उप. समानता एवं समावेश)

6. यदि उपयोग में लाए जाएं तो किस प्रकार आंकड़ों को केंन्द्रीय सूचना व्यवस्था में डालकर प्रक्रिया की जाती है?

7. क्या प्रमाण है कि अन्तर्राष्ट्रीय गुणवत्ता निर्धारण में भाग लेना हमारी शिक्षा व्यवस्था की गुणवत्ता में महत्वपूर्ण योगदान देना है? अन्तर्राष्ट्रीय निर्धारण के हमारे एंव दूसरों के क्या अनुमान रहें हैं? यदि हमने भाग नहीं लिया तो क्या यह एक जान–बूझ कर लिया गया निर्णय था यदि हाँ तो ऐसा क्यों था?

निर्धारण परिणामों का उपयोग :–

1. निर्धारण परिणामों के मूल्यांकन को शैक्षणिक नीति एवं अभ्यास (कक्षा में, शाला, क्षेत्रीय व राष्ट्रीय स्तर पर) से जोड़े रखने के क्या कार्यरूप हमारे पास है? इस कार्यरूपों को हम कितनी आवृत्ति से उपयोग में लाते हैं? (प्रसंगिकता पर विश्ले. उप.) (शासन पर विश्ले.उप.) हम एक उद्देश्य पूर्ण व्यवस्थित रूप से ऐसे मूल्यांकन करते हैं इसका क्या प्रमाण है?

2. निर्धारण परिणामों की प्राप्तियों के मूल्यांकन से हम प्राप्तियों को कैसे व्यक्त करते हैं एवं अधिगम प्रभाव व शैक्षिक व्यवस्था गुणवत्ता को

सुधारने हेतु शैक्षिक निधारणों ने वांछित प्रभाव डाला यह कैसे सुनिश्चित करते हैं? हमारे मूल्यांकन को हम कैसे संचारित करते हैं इस बात पर ध्यान केन्द्रित करते हुए हम कैसे और अच्छा कर सकते हैं? परिणामों के आंकडे किस प्रकार दूसरे परिवर्तन जैसे वित्तीय आंकड़ों से जुड़े हुए हैं जो सघन विश्लेषणों को आसान बनाते है। (वित्त पर विश्ले.उप.)

3. क्या निर्धारण के परिणाम सार्वजनिक किए गये हैं? एवं किसे किए गये है? (उदाहरणार्थ प्रत्येक छात्र परिणाम पालकों के/ ध्यान रखने वालों को, विद्यालय की स्थिति सामान्य जनता को आदि) (शासन पर विश्ल. उप.)

कार्य हेतु प्राथमिकताएँ :–

1. तुरन्त सभालने हेतु मुख्य क्षेत्र क्या है? जिनसे निर्धारण हमारी शिक्षा व्यवस्था की गुणवत्ता में योगदान दे सकें?

2. राष्ट्रीय निर्धारण, विद्यालय आधारित अभ्यास एवं प्रमाण आधारित नीति में आने वाले कौन–कौन से ज्ञान विदार है जिन्हें भरना आवश्यक है?

3. पहचाने गए ज्ञान विदारों को एवं प्राथमिक वाधाओं को समाप्त करने हेतु क्या आवश्यक कदम उठाने चाहिए?

VIII विश्लेषणात्मक उपकरण : पाठ्यचर्या

1. भूमिका :–

पाठ्यचर्या कौशल की एक अभीष्ठ एवं व्यवस्थित पैकेजिंग (ज्ञान, कौशल एवं वृत्तियों मूल्यों से जुड़ी होती है।) वे कौशल जो अधिगमकर्ता को औपचारिक एवं अनौपचारिक ढाँचे में व्यवस्थित अधिगम अनुभवों के द्वारा प्राप्त करने चाहिए। (तकनीकी टिप्पणी 8 –1 पाठ्यचर्या के विभिन्न अर्थ) जीवन पर्यन्य अधिगम कौशलों हेतु अच्छी पाठ्यचर्या एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। इसी के साथ–साथ सामाजिक वृत्तियाँ व कौशल जैसे – सहनशीलता व आदर विभिन्नता का रचनात्मक प्रबंधन विवाद का शांतिपूर्ण प्रबंधन मानव अधिकारों के प्रति आदर व इन्हें बढ़ावा, लैंगिक समानता, न्याय व समावेशी करण भी जीवन पर्यन्त अधिगम के लिए महत्वपूर्ण होते हैं। इसी के साथ पाठ्यचर्या विचारात्मक कौशलों एवं प्रासंगिक ज्ञान जो कि अधिगमकर्ता को उनके अध्ययन रोजमर्रा जीवन व कैरियर में प्रयोग करना होता है, को प्राप्त कर इनके विकास में योगदान करती है। अधिगमकर्ताओं के आत्म सम्मान, आत्म विश्वास, प्रोत्साहन व महत्वाकांक्षाओं को बढ़ा कर अधिगमकर्ता को व्यक्तिगत विकास में पाठ्यचर्या सहायक होकर बहुत महत्व की होती जा रही है। इनके अलावा बहुत सी नई एवं उभरती हुई चुनौतियाँ हैं। शिक्षा के एवं पाठ्यचर्या के सन्दर्भ में जैसे सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी, अन्तर्संस्कृतिय समझ, धारणीय विकास, साथ रहने हेतु अधिगम एच.आई.व्ही एवं एड्स, जीवन कौशल, जीवन हेतु कौशल विकास, आदि जो अपनी ओर ध्यान आकर्षित करती हैं शैक्षिक कर्मचारियों व भागीदारों के लिए निर्देशकीय कारकों के द्वारा स्पष्ट, प्रेरणादायी एवं प्रोत्साहन देने वाले पाठ्यचर्या दस्तावेज एवं सामग्री शैक्षिक गुणवत्ता को बनाए रखने में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। पाठ्यचर्या शिक्षकों द्वारा कार्यान्वित की जाती हैं एवं शिक्षण की गुणवत्ता, अधिगम योजनाओं, अधिगम सामग्री एवं निर्धारण पर निर्भर होती है। सामान्य शिक्षण गुणवत्ता विश्लेषण/निदान रूपरेखा यूनेस्को में

कई विश्लेषण उपकरण है जो पाठ्यचर्या के क्रियांवयन एवं इससे संबंधित कई अन्य मुद्दों एवं प्रक्रियाओं को व्यवहार में लाने का प्रयत्न करते हैं। इनमें से यह विश्लेषणात्मक उपकरण एक महत्वपूर्ण उपकरण है। (शिक्षक, शिक्षण एवं अधिगम सर विश्ले. उप. से जोड़े)

यह विश्लेषणात्मक उपकरण (ज्यादा जानकारी हेतु पूर्ण रूप देखें) राष्ट्रीय शैक्षिक प्राधिकारियो (निर्णय बनाने व लेने वाले) पाठ्यचर्या विशेषज्ञ, शिक्षक प्रशिक्षक, निर्धारण विशेषज्ञ) को सहायता देने की इच्छा से उनकी पाठ्यचर्या व्यवस्था की समालोचनात्मक जांच करता है साथ–साथ उन मजबूत तत्वों को पहचानने की दृष्टि रखता है जिन पर गुणवत्ता शिक्षा दी जा सकती है एंव कमजोरियों व कमियों को, जो गुणवत्ता कम करती हैं, दूर करने का प्रयत्न करता है। इस विश्लेषणात्मक उपकरण का महत्वपूर्ण प्रश्न है कि जो पाठ्यचर्या हमारे पास उपलब्ध है वह हमें, उस प्रकार के कौशलों, (ज्ञान, कौशल, एवं वृत्तियाँ जो मूल्यों के द्वारा जुड़ी है) जिनकी आवश्यकता हमें हमें उस प्रकार के समाज को बनाने में है जिसे हम विकसित करना चाहते हैं। एवं उन चुनौतियों का सामना करने हेतु है जिन्हें लोगों को अभी एवं भविष्य में देखना हैं, का निर्माण करने योग्य बनाती है अथवा नही। इस महत्वपूर्ण प्रश्न को हम पाठ्यचर्या को राष्ट्रीय विकास लक्ष्यों से जोड़ कर उनका निर्धारण करके, विकास एवं पाठ्यचर्या नीतियों के प्रभावकारी होने एवं पाठ्यचर्या के स्वरूप एवं आकर में समझ के द्वारा व्यवहारिक रूप से देख सकते हैं। पाठ्यचर्या के क्रियान्वयन की जांच एवं मूल्यांकन करके इसके उत्तरदायित को नई चुनौतियों व आवश्यकताओं के संदर्भ मं देखना भी एक महत्वपूर्ण तत्व है। जिसका निर्धारण होना आवश्यक है। आगे, विश्लेषण व निदानात्मक खंड कुछ महत्वपूर्ण प्रश्न उठाता है। पाठ्यचर्या विकास के प्रत्येक चरण एवं क्रियान्वयन प्रक्रिया के संबंध में, जिससे कि पाठ्यचर्या एवं शैक्षिक गुणवत्त पर इसके प्रभाव से संबंधित मुख्य मुद्दों पर एक व्यवस्थित बहस को सहायता मिल सके :–

2. निदान एवं विश्लेषण :–

पाठ्यचर्या की विकास प्रांसगिकताः–

1. अधिगमकर्ताओं के सामाजिक अच्छे स्तर, प्रगति एवं व्यक्तिगत विकास को प्राप्त करने हेतु राष्ट्र/समुदाय क्या चाहता है ? एवं पाठ्यचर्या यह शैक्षिक स्वप्न का किस प्रकार दर्शाती है ?

2. राष्ट्रीय विकास नीतियों व कार्ययोजनाओं को प्रतिक्रिया देने योग्य बनने हेतु पाठ्यचर्या के लिए क्या संरचना है ? यह संरचना प्रभावपूर्ण रूप से कार्यरत है क्या इसके प्रमाण है ?

3. शिक्षा नीति उद्देश्यों से जुड़े हुए पाठ्यचर्या के आधारभूत/मुश्य एवं विरूद्ध कौशल कौन कौन से पहचाने गए हैं ? क्या प्रमाण है कि यह मुख्य कौशल पाठ्यचर्या विकास के मूल में है ? (वि.उ. कौशलों से जोड़े)

4. शैक्षिक भागीदारी (शिक्षक, अधिगमकर्ता, निजि वर्ग, सभ्य समाज) पाठ्यचर्या स्वप्न एवं उचित पाठ्यचर्या नीतियों के विकास में किस प्रकार शामिल है ? उनके शामिल होने से प्रभाव पड़ता है क्या इस बात के प्रमाण है ?

पाठ्यचर्या योजना, स्वरूप एवं अर्न्तवस्तु :–

1. पाठ्यचर्या विकास प्रभावपूर्ण तरीके से आगे बढ़ाया जा रहा है एवं निर्धारण शैक्षिक/ पाठ्यचर्या स्वप्न एवं गुणवत्ता मानकों के अनुसार निर्देशित किया जा रहा है क्या इसके प्रमाण है ? क्या सार्वजनिक रूप से जानी गई, मान्यता प्राप्त पाठ्यचर्या संस्थाएँ/एजेंसियाँ एवं पाठ्यचर्या प्रक्रियाओं के नेता है ? पाठ्यचर्या को आकार देने वाली, लिखने वाली, आगे बढ़ने वाली, क्रियान्वित करने वाली एवं पुनरावृत्ति करने वाली निर्देशिकाएँ विकसित की गई है। क्या यह निर्देशिकाएँ पाठ्यचर्या मूल्यांकन प्रक्रियाओं के परिणामें का ध्यान रखती है ? क्या पाठ्यचर्या को एक

सार्वजनिक दस्तावेजों के समूह जैसे कि पाठ्यचर्या रूपरेखा, विषय वस्तु पाठ्यक्रम, पाठ्यपुस्तक, शिक्षक निर्देशिका, निर्धारण निर्देशिका के रूप में रखा गया है ? भागीदार इसमें कैसे शामिल है ? (Promising Practice VIII.1 Boznia and Harzgoving)

2. क्या प्रमाण अस्तित्व में है कि पाठ्यचर्या एकदम नये एवं तेयार धारणाओं एवं अधिगम प्राप्त करने की क्षमता पर आधारित है एवं अधिगम सामग्री सुचारू रूप से चुनी गई एवं व्यवस्थित है ? (i.e. क्या अधिगमकर्ता पर केन्द्रित एवं समझपूर्ण/सम्पूर्ण अधिगम पर जोर है ? मूलभूत पाठ्यचर्या एवं विभिन्नतापूर्ण पाठ्यचर्या विकास की आयु/स्थिति की उपयुक्तता, पाठ्यचर्या का समाकलन उएवं संकलन, अर्थपूर्ण सततता एवं अर्न्तसम्बंध को पूरा करने वाले विस्तृत अधिगम क्षेत्र व विषय इसमें हैं ? आई.सी.टी.एस. एवं ई.– अधिगम, पाठ्यचर्या एवं अधिगम में सुधार हेतु क्या भूमिका निभाते हैं ?) (शिक्षण, अधिगम, समानता व समावेश विश्ले. उप. से जोड़े) (तकनीकि टिप्पणी VIII.2 गुणवत्ता पाठ्यचर्या कैसे बनती है ?)

3. विरोधाभासी एवं उभरते हुए मुद्दे पाठ्यचर्या में कैसे शामिल किए गए हैं ? (i.e. त्वरित मुद्दे कौन से हैं जिन्हें देखा जाना है ? लैगिक समानत, एच.आर. एवं नागरिक शिक्षा ई.एस.डी. एल.टी.एल.टी. शांति शिक्षा, अर्न्तसांस्कृतिक समक्ष, एच.आई.व्ही. एवं एड्स जीवन कौशल, जीवन व कार्य की तैयारी इन सभी मुद्दों को कैसे पाठ्यचर्या में डाला गया है ? नये/उभरत मुद्दों को सभालने में पाठ्यचर्या को किस प्रकार मुक्त व लचीला रखा जाय .....) (promising practics VII.2 Vietnam)

4. मूलभूत कौशल को उपलब्ध कराने में आप संतुलन कैसे रखते हैं ? (पढ़ना, लिखना, अंकज्ञान) विभिन्न विषय क्षेत्रों में प्रासंगिक ज्ञान देने की आवश्यकता एवं विरोधाभासी व उभरते हुए मुद्दो जैसे– एल.टी.एल.टी. एवं

ई.एस.डी. से व्यवहार करने में संतुलन कैसे रखते हैं ? (तकनीकि टिप्पणी VIII.3 पाठ्यचर्या सामग्री को परिभाषित करना)

<u>पाठ्यचर्या क्रियान्वयन, जांच एवं मूल्यांकन :–</u>

1. पाठ्यचर्या को परिभाषित एवं क्रियान्वित करने में छात्र व शिक्षक एन प्रभावशाली भूमिका निभाते हैं इसके क्या प्रमाण हैं ? (i.e. कितने अच्छे रूप में शिक्षक पाठ्यचर्या को समझते एवं प्रशिक्षित है ? क्या शिक्षक पाठ्यचर्या विनास प्रक्रिया में भाग ले सकते हैं ? क्या शिक्षक नई भूमिकाएं, जैसे सुगन बनाने वाले, सलाहकार, परिनियामक, पाठ्यचर्या विकासकर्ता, छात्र, जो कि अपनी अधिगम क्रियाओं को चुन कर संरचित कर सकें, निभा सकते हैं ?)
2. अधिगम परिवेश को सदाम बनाकर पाठ्यचर्या क्रियान्वयन को सहायता दी गई हैं इसके क्या प्रमाण हैं ? विद्यालय अपने अधिगम परिवेश को सुधारने के प्रयत्न करते हैं इसके क्या प्रमाण है ? (संचार–संवाद योजनाएं, छात्र सहभागिता, अधिगम सुविधाओं एवं स्त्रोंतो पर आसान पहुंच, सलाह द्वारा, शाला के बातावरण व सौन्दर्य द्वारा) (विश्ले. उप. अधिगम परिवेश से जोड़े)
3. पाठ्यचार्य के लक्ष्यों कसे निर्धारण कैसे जुड़ा है ? निर्धारण से संबंधित कौन से तत्वों ने पाठ्यचर्या क्रियान्वयन में बाधा पहुँचाई है इस प्रकार शिक्षा गुणवत्ता में बाधा पहुचाई है ? (निर्धारण पर विश्ले. उप. से जोड़े)
4. क्या पाठ्यचर्या प्रक्रियाओं के राष्ट्रव्यापी मूल्यांकन एवं जांच के प्रमाण हैं ? पाठ्यचर्या के सतत् विकास हेतु क्या इनका उपयोग किया गया है ? क्या प्रमाण है कि पाठ्यचर्या एवं पाठ्यपुस्तक पुनरावृत्ति पर प्रभाव डाला है ? (विश्ले. उप. शिक्षण व अधिगम से जोड़ें)

5. पाठ्यचर्या एवं अधिगम के क्षेत्र में भविष्य के विकास हेतु क्या कदम उठाए जा रहे हैं? (राष्ट्रीय एवं/या अन्तर्राष्ट्रीय पाठ्यक्रम शोध–कार्य, राष्ट्रीय पाठ्यचर्या संगोष्ठीयाँ, फोरम व टास्क फोर्स जो विकासशली विचारधार की पाठ्यचर्या नीतियों को परिभाषित करें)

3. कार्य की प्राथमिकताएँ :–

1. हमारी पाठ्यचर्या की गुणवत्ता को सुधारने हेतु बड़ी उपलब्धियाँ प्राप्त करने के लिए त्वरित रूप से कौन से मुख्य क्षेत्र एवं बाधक तत्वों से निपटना है?

2. एक प्रमाण आधारित नीति एंव पाठ्यचर्या विकास के अभ्यास के लिए कौन–कौन से शान विदार हैं जिन्हें भरना हैं?

3. पहचाने गऐ ज्ञान विदारों एवं प्राथमिक बंधनों से निपटने हेतु कौन से आवश्यक कदम उठाना है?

IX विश्लेषणात्मक उपकरण : अधिगमकर्ता

1. भूमिका :–

प्राप्त कौशलों को अधिगम प्रभाव एवं गुणवत्ता शिक्षा व्यवस्था के मूलभूत प्रमाण के रूप में चिन्हित करते हुए कौशलों पर विश्लेषणात्मक उपकरण अधिगम परिणामों को रेखांकित करता है। चूंकि कौशल ज्ञानार्थियों/अधिगमकर्ताओं को प्राप्त करना होता है इसलिए, दूसरी ओर, अधिगमकर्ता/ज्ञानार्थी अधिगम परिणामों के उत्पादन हेतु बांकी सभी तत्वों –शिक्षक, पाठ्यचर्या, जी.ई.जी.ए.एफ. – यूनेस्को के सामान्य शिक्षा गुणवत्ता विश्लेषण/निदान रूपरेखा में वर्णित अधिगम परिवेश–सभी को अधिगम कर्ताओं के लिए सुगमता देनी चाहिए। जी.ई. जी.ए.एफ. अधिगमकर्ता को न सिर्फ इन सुगम साधनों से लाभ प्राप्तकर्ता के रूप में देखता है अपितु एवं ऐसे स्वयं लाभ प्राप्त करने वाले कारक के रूपमें देखता है अपितु एक ऐसे स्वयं लाभ प्रप्त करने वाले कारक के रूपमें 'हितकारी' के रूप में 'प्रमुख मानव स्त्रोत' रूप में देखता है जिस पर पूरी गुणवत्ता शिक्षा व्यवस्था अपने प्रभाव के लिए निर्भर करती है। यद्यपि अधिकांश शिक्षा व्यवस्थाएं अधिगमकर्ताओं को ऐसे लाभ प्राप्त करने वाले के रूप में देखती हैं जिन पर कार्य करने की आवश्यकता है, जिन्हें मदद की आवश्यकता है एवं जिन्हें विकसित किया जाना है। जहाँ अधिगमकर्ताओं के स्थान पर अधिगम नहीं कर सकता है एवं बिना अधिगमकर्ताओं की स्वयं ज्ञान लाभ प्राप्त करने की क्षमता के बिना कोई अधिगम पारित हो सकता है। अतः गुणतत्ता शिक्षा व्यवस्थाओं के एक शक्तिशाली–प्रमुख मानव स्त्रोत के रूप में अधिगमकर्ता को देखना, प्रभावशाली अधिगम एवं अस्तित्व बनाए रखने वाली गुणवत्ता शिक्षा व्यवस्था तक पहुंचाने हेतु मूलभूत आवश्यकता है।

एक उत्पादन उद्यम के सारे प्रमुख मानव स्त्रोतों की तरह शिक्षा उद्यम को भी अधिगमकर्ताओं में अपने मुख्य उत्पादकों के रूप में योजनावद्ध एवं बुद्धि मत्ता पूर्ण रूप से निवेश करने की आवश्यकता है। सामान्य रूप से शिक्षा एवं

विशेष रूप से अधिगम पर प्राप्त शोध–प्रमाण यह बताते हैं कि अधिगमकर्ताओं को स्वयं लाभ प्राप्त कर्ता बनने हेतु उनके जीवन चक्र के विभिन्न चरणों में भिन्न प्रकार की सुगमताओं की आवश्यकता होती है। उदाहरण के लिए चंहुमुखी मस्तिष्क शोध में प्रगति एवं विशेषतः मस्तिष्क सुघट्यता को न सिर्फ निवेश की प्रकृति निर्देशित करनी चाहिए जो अधिगमकर्ताओं को कुशलता हेतु सक्षम बना सके एवं अधिगम प्रक्रिया कर्ताओं को कुशलता हेतु सक्षम बना सके एवं अधिगम प्रक्रिया में प्रभाव ला सके। (तकनीकि टिप्पणी IX.1 आयु अनुसार विभिन्न अधिगमकर्ताओं की आवश्यकताओं पर शोध) 0 से 8 की उम्र तक एक सम्पूर्ण बालक विकास में निवेश, हम जानते हैं कि, (तकनीकि टिप्पणी IX.2 HEDCI) एक अपरिहार्य सुगमता है जीवनपर्यन्त, अधिगमकर्ता की अधिगम प्रक्रिया के प्रभावकारी रूप से घटित होने में) त्वरित एवं दूरगामी सन्दर्भों में, आरंभिक बचपन विकास में निवेश सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्त्रोत कुशल निवेश है एवं यह समावेशी विकास एंव भागीदारी पूर्ण विकास के लिए एक आरंभिक कदम है। (तकनीकि टिप्पणी IX.3 आरंभिक वर्षा में निवेश पर बहुवर्गीय परिणाम) (तकनीकि टिप्पणी IX.4 समावेशी विकास पर प्रमाण) इसी के सदृश–मस्तिष्क मस्तिष्क सुघट्यता पर शोध हमें अधिक आयुवर्षो पर अधिगम कर्ताओं के लिए उचित अवसरों के विषय में बनाते हैं। (विश्ले.उप. जीवन पर्यन्त अधिगमकर्ता/ज्ञानार्थी से जोड़े) WFP ने लेटिन अमरीका एवं कैरेबियन क्षेत्र के एिल गणना की है कि श्रम बाजार न्यूज उपलब्धियों में शासन ने महत्वपूर्ण आय खोदी एवं निम्न अधिगम परिणाम क्योंकि मस्तिष्क अल्प विकसित था जो कि पोषण एवं खाद्य कमियों [42] की बजह से हुआ था। सामाजिक व व्यवहारवाद विज्ञान, दर्शन विशेषतः एपिस्टेंमोलॉजि, समाज शास्त्र, नृविज्ञान एवं

[42] क्षुधा का मूल्य :– केन्द्रिय अमरीका, डोमिनियन रिपब्लिक रोक्कियों मार्टिनेज एवं एन्ड्रेस फर्नीडीस, आर्थिक कमीशन लेटिन अमरीका एवं कैरेवियन (ECLAC) Feburary 2008 में शिशु कुपोषण पर सामाजिक एवं आर्थिक प्रभाव।

मनोविज्ञान, विशेषतः अधिगम मनोविज्ञान से भी प्रमाण मिलते हैं। अधिगमकर्ता के प्रभाव को किस प्रकार सबसे अच्छे से सुगम बनाया जाय एवं शिक्षा में सामान्य रूप से एवं अध्यापक कलामें विशेष रूप से अधिगमकर्ताओं की केन्द्रीयता किस प्रकार सुनिश्चित की जा सकती है। सशक्तिकरण की मुख्य धारणा के यप में से एक बनकर अधिगमकर्ता को अध्यापन कला संबंधों के केन्द्र में रखना होगा। हम एक अधिगम परिवेश का निर्माण करना कैसे प्रबंध करते हैं। यह अधिगमकर्ता को उसकी अधिगम आवश्कताओं के बारे में इस आवश्यकताओं को अधिगम शर्तों से जुड़ने में एवं उन्हें शक्ति/ऊर्जा, आत्मविश्वास, दृढ़ता देने में आत्मज्ञान पाने में मदद करेगा जिससे वैयक्तिक रूप से अधिगमकर्ता अपने अधिकार में एक अधिगम कैरियर को प्राप्त कर इसमें महारत प्राप्त कर पाएगा एवं रूकावटों व बाधाओं पर विजय प्राप्त कर पाएगा। (तकनीकि टिप्पणी IX.5 आधिगमकर्ता केन्द्रित अध्यापक कला एवं एपिस्टेयोलॉजि) अधिगमकर्ता की विविधता का स्त्रोत चाहे जो भी हो शिक्षा के प्रति अधिकार मूलक समानता आदेश सभी अधिगम कर्ताओं को गुणवत्ता शिक्षा से जोड़ते हैं। इस प्रकार GEGAf एक गुणवत्ता/सामान्य शिक्षा व्यवस्था के प्रामाणिक चिन्हों के रूप में समानता एवं समावेशीकरण को देखता हैं (समानता व सामावेशीकरण विश्ले. उपकरण से जोडे) एक अच्छी गुणवत्ता सामान्य शिक्षा व्यवस्था अधिगमकर्ता की विविधता को उसकी विविधता के स्त्रोत से जोड़कर देखें बिना उसे प्रतिक्रिया देती है। अधिगमकर्ता की विविधता को प्रतिक्रिया देने में असफलता न सिर्फ मानव अधिकारों का हनन है अपितु शिक्षा के अधिकार का भी विरोध है।

यह विश्लेषणात्मक उपकरण (ज्यादा जानकारी हेतु पूर्ण स्वरूप देखें) अपेक्षित कौशलों एवं अधिगम परिणामों के एक मुख्य उत्पादन के रूप में अधिगमकर्ता को शिक्षा उद्यम के केन्द्र में रखने के, सदस्यराज्यों के प्रयासों को सहायता प्रदान करना चाहता है। एक कुशल व प्रभावपूर्ण अधिगमकर्ता बनने हेतु

उचित सुगमता के क्रियान्वयन को लागू करने में मदद करते हुए यह उपकरण सदस्य राज्यों को अधिगमकर्ताओं की विविधता का गहराई से विश्लेषण करने में सरलता देना है। GEGAP यह मानता है कि एक अच्छी गुणवत्ता सामान्य शिक्षा व्यवस्था के सर्वाधिक महत्वपूर्ण परिणाम के रूप में शयद, जीवन पर्यान्त अधिगम की योग्यता ही आती है या एक जीवन पर्यन्त अधिगमकर्ता बने रहना आता है। इस विश्लेषणात्मक उपकरण द्वारा उठाया गया सर्वाधिक महत्वपूर्ण प्रश्न है कि : वह प्रमुख बाधाएं कौन सी है जो हमारे सभी आयु वर्गों एवं सभी विविधताओं वाले अधिगमकर्ताओं को प्रभाव शाली बनने एवं बने रहने तथा कुशल जीवनपर्यन्त अधिगमकर्ता बनने व बने रहने से रोकती है एवं हम इन बाधाओं को कैसे दूर कर सकता हैं ?

2. पहचान, निदान व विश्लेषणः–

हमारे दृष्टिकोण/अधिगमकर्ताओं का परिप्रेक्ष्य :–

1. हमारे अधिगमकर्ताओं हेतु हमारा औपचारिक/कार्यालयीन दृष्टिकोण क्या है ? (तकनीकि टिप्पणी IX.6 अधिगमकर्ताओं के विभिन्न दृष्टिकोण) इन दृष्टिकोणों को उच्चारित करने में कौन–कौन शामिल हैं ? जिन्हें वास्तव में शामिल किया जाना चाहिए क्या व शमिल हैं ? उनके शामिल होने के प्रमाण कहां हैं ? अधिगमकर्ताओं के प्रति हमारे दृष्टिकोणों कों परिवर्तित करने वाले चालक कौन–कौन हैं ? इस परिवर्तन के मुख्य बिंदु कहां है ? एवं यह परिवर्तन दृष्टिकोण को कहां दस्तावेज में बनाया गया है।

अपने अधिगमकर्ताओं को जानना एवं उनकी आवश्यकताओं पर प्रतिक्रिया देनाः–

1. हमारे अधिगमकर्ताओं की विविधिता को हम कैसे पहचानते एवं पकडते हैं, इस विविधता के मुख्य कारण कारक क्या है ? राष्ट्रीय संदर्भो में यह कारक किस प्रकार भिन्न होते हैं ? अपने अधिगमकर्ताओं एवं उनकी आवश्यकताओं को जानने में हम निर्धारण का उपयोग कैसे करते है ?

उदाहरणार्थ :– निर्धारण यह दर्शाता है कि कुछ निश्चित अधिगमकर्ता–अधिगम चुनौतियां रखते हैं।

2. अधिगम विविधता के हमारे ज्ञान के प्रमाण कहां है? इस ज्ञान को सतत् नया हम कैसे बनाए रखते हैं? यह ज्ञान किन्हें है एवं वे इसे कैसे प्रप्त करते है। यह ज्ञान किसे होना चाहिए यह हम कैसे निर्धारित करते है।

3. अधिगमकर्ताओं की प्रभावशाली हेतु विभेदीय सहायता में हमारा अधिगम कर्ता की विविधता का ज्ञान किस प्रकार उपयोग में लाया जाता है? इस विभेदीय सहायता के प्रमाण कहा है? अधिगम कर्ताओं की सहायता हेतु विभिन्न स्त्रोत क्या है? यह काम करते हैं इसके प्रमाण कहॉ है? विविधतापूर्ण अधिगमकर्ताओं को प्रदत्त हमारी सहायता के प्रभावों को हम कैसे मापते हैं एवं हम अधिगम में अधिगमकर्ता की प्रभावशीलता के सतत समान होने के कैसे सुनिश्चित करते है? अधिगमकर्ता की प्रभावशीलता को मापने के हमारे परोक्षी क्या है? विविध अधिगमकर्ता आवश्यककर्ता आवयकताओं की प्रतिक्रिया हेतु हम क्या योजनाएं अपनाते है? (तकनीकि टिप्पणी IX.5 संभाव्य कार्ययोजना एवं उदयिमान अभ्यास)

4. अपनी अधिगम आवश्यकताओं को परिभाषित करने में अधिगमकर्ताओं के विभिन्न प्रकारों की क्या भूमिका है एंव यह आवश्यकताएं कैसे सर्वाधिक व्यवस्थओं में हम अधिगमकर्ताओं को दृष्टिकोण को कैसे डाल सकते है? इस प्रकार दृष्टिकोण डालने के प्रभाव के प्रमाण कहां है?

कार्य हेतु प्राथमिक :–

1. समानता एवं प्रत्येक अधिगमकर्ता को सम्पूर्ण रूपेण एक प्रभावशाल व प्रभावकारी अधिगमकर्ता बनने में प्रभवपूर्ण सहायता में कौनकौन सी मुख्य चुनौतिया एंव प्राथमिक बाधाएं है जिन्हें हमें दूर करना है?

2. अधिगमकर्ताओं की विविध आवश्यकताओं को प्रभवशाली व समान सहायता देने से हमें रोकने वाले सूचना व ज्ञान विदार एवं प्रमाण क्या हैं ?

3. हमारी शिक्षा व्यवस्थ को अधिगमकार्ता केन्द्रित बनने से रोकने वाले पहचाने गए शान विदारों एवं प्राथमिक बाधाओं से निपटने हेतु आवश्यक कदम कौन कौन सी सहभागिताओं एंव स्त्रोतो की आवश्यकता है ?

X विश्लेषणात्मक उपकरण :– शिक्षक

1. भूमिकाः–

शिक्षण एवं अधिगम प्रक्रियाओं में शिक्षक मुख्य स्तम्भ होते हैं। शिक्षकों पर उचित प्रकाश डाले बिना सभी के लिए उपागम, शिक्षा की गुणवत्ता एवं समानता उपलब्ध कराना संभव नहीं है। अधिगम परिणामों में महत्वपूर्ण अंतरों की व्याख्या करने में शिक्षकों की गुणवत्ता पाई जाती है। अधिगम परिणामों के वितरण एवं इस प्रकार समानता [43] के उपर योग्य शिक्षकों का संयमतापूर्ण प्रस्तरण एक महत्वपूर्ण उत्तरदायित्व रखता है। गुणवत्ता शिक्षा की शर्तें सबसे ज्यादा वंचित [44] एवं पराजेय छात्रों पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालने की वृत्ति रखती है– इस बात में स्पष्ट सूचक मौजूद हैं, एवं इस प्रकार असमानता की समस्या से निपटने में सभी शैक्षिक संस्थाओं एवं विद्यालयों में गुणी शिक्षकों की उपलब्धता एवं महत्वपूर्ण रास्ता है। जैसे कि नए और ज्यादा जटिल भूमिकाएं शिक्षकों को दी जाती हैं तब सुसंगत व पर्याप्त चयन, तैयारी एवं सतत व्यावसायिक विकास कार्य योजनाओं को सामने रखा जाना चाहिए ताकि जो लोग शिक्षण में रत् हैं उन्हें वांछित ज्ञान, कौशल, वृत्तियों व मूल्यों से प्रदत्त बनाया जाना चाहिए एवं उन्हें इस व्यवसाय में जोडे रखना चाहिए। (अधिगमकर्ता, अधिगम व शिक्षण विले0 उप0 से जोडें)

यह विश्लेषणात्मक उपकरण शिक्षकों की एक ऐसी गंभीर उपव्यवस्था के रूप में देखता है जो सदस्य राज्यों को या तो सहायता कर सकता है या इसमें बाधा डाल सकता है सभी के लिए गुणवत्ता शिक्षा प्रदान होने के लक्ष्य की उपलब्धता में/यह विश्लेषणात्मक उपकरण UNESCO के सामान्य शिक्षा गुणवत्ता निदानात्मक/विश्लेषण एवं रूपरेखा GFGAF के 14 उपकरणों में से एक है जिसे

---

43 स्कीरेन्स, जे. 2004 संस्थागत प्रभावकारी शोध एवं विद्यालय पर पुर्नदृष्टि, पृष्ठभूमि पेपर ई.एफ.ए. के लिए, ग्लोबल मॉनिटरिंग रिपोर्ट 2005

44 UNESCO (2006) शिक्षक एवं शिक्षा गुणवत्ता, मॉनिटरिंग ग्लोबल नोडस फॉर 2015 मॉन्ट्रियल UNESCO सांख्यिकी संस्था

सदस्य राज्यों की शिक्षा व्यवस्था के सभी पक्षों का गुणवत्ता एवं समानता को सुधारने के लिए निर्धारण में मदद करने हेतु तैयार किया गया है। विशेषतः इसे शिक्षण व अधिगम प्रक्रियाओं के विश्लेषणात्मक उपकरणों से जोडा गया है जिससे कि इसे उनके पूरके के रूप में उपयोग किया जा सके। (ज्यादा जानकारी के लिए पूर्वरूप देखें) यह अपेक्षित है कि यह विश्लेषणात्मक उपकरण चिंतन मनन के एक पथ प्रदर्शन के रूप में कार्य करें ना कि किसी विशिष्ट पसंद या शिक्षकों एवं शिक्षा गुणवत्ता की किसी विशिष्ट प्रक्रिया के एक नुस्खे के रूप में। इस उपकरण के द्वारा उठाया गया महत्वपूर्ण प्रश्न है कि हमारी शिक्षा व्यवस्था में जिन गुणवत्ता समस्याओं से हम दो चार होते हैं उन्हें व्यक्त करने में शिखक उप व्यवस्था किस सीमा तक एक महत्वपूर्ण कारक है। शिक्षण व्यवस्था में उपयुक्त व अभिप्रेरण व्यक्तियों को आकर्षित कर लाने में, शिक्षक अभ्यार्थियों के चुने जाने एवं तैयार करने में, उनकी चयन प्रक्रिया में प्रस्तरण में, अवधारणा में एवं गुणवत्ता शिक्षा के प्रदत्त किए जाने के प्रबंधन आदि में, इस महत्वपूर्ण प्रश्न को एवं कार्ययोजनाओं को हमारी व्यवस्थाओं के सघन विश्लेषण एवं मनन के द्वारा समझाा जा सकता है। गुणात्मक शिक्षा के प्रदत्त किए जाने में व्यवसाय में आरंभ से ही, प्रत्येक गंभीर चरण में, हमें हमारे अधिगमकर्ताओं के प्रति गुणवत्ता शिक्षण को प्रदत्त किए जाने में हमारे शिक्षकों की योग्यता को प्रभावित करने वाले कारकों को पहचानने हेतु कुछ आधारभूत प्रश्न उठाने होंगे। शिक्षण उपव्यवस्था का निदान पहचान दृढ बनाए जाने वाले क्षेत्रों की पहचान एवं कमजोरी के क्षेत्रों तथा विदारों से निपटने को भी सुगम बनाएगा। दृढता एवं शेष चुनौतियों दोनों का निदान एवं विश्लेषण ऐसी कार्ययोजना की ओर जे जाता है जो सर्वाधिक महत्वपूर्ण चुनौतियों से निपटने में सक्षम होती है एवं यदि कार्यरूप में लाई जाए तो शिक्षा व्यवस्था में समानता एवं गुणवत्ता को सुधारने के लिए महती शक्तिशाली प्रमाणित हो सकती है।

2. निदान–पहचान एवं विश्लेषणः–

1. शिक्षण व्यवसाय में कौन उत्सुक हैं एवं रूपरेखा क्यों? जो शिक्षण प्रशिक्षण हेतु उम्मीदवारी दे रहे हैं क्या उनकी रूपरेखा आंकडें हमारे पास हैं? (उदायीमान अभ्यास X. 1 उन राष्ट्रों के उदाहरण जिन्होंने सफलतापूर्वक सर्वाधिक अच्छे छात्रों को व्यवसाय में आकर्षित किया)

2. प्रशिक्षण हेतु शिक्षकों के चयन की हमारी कसौटी (न्यूनतम अर्हता, वृत्ति व मूल्य, अभिकरण) एवं चयन प्रक्रिया (परीक्षा, सामक्षात्कार) किस प्रकार यह परिलक्षित करते हें कि हम कैसे शिक्षकों को प्रशिक्षण देना चाहते हैं?

शिक्षकों का प्रशिक्षणः–

1. शिक्षकों के प्रशिक्षकों की रूपरेखा क्या है? उन्हें किए प्रकार चयनित, प्रशिक्षित एवं पारिश्रमिक दिया गया है? क्या प्रशिक्षण संस्थानों की वित्तीय स्थिति गुणवत्ता शिक्षा हेतु शिक्षकों की केन्द्रिय भूमिका को दर्शाती है? (वित्तीय स्थिति पर विश्ले0उप0 से जोडें)

2. नये शिक्षकों के अपेक्षित कौशल शिक्षण निर्धारण किस प्रकार दर्शाता है? क्या व्यवहारिक प्रशिक्षण का निर्धारण हुआ है? निर्धारण के तरीके क्या है?

3. क्या शिक्षकों को अपेक्षित ज्ञान एवं कौशल प्रदान करने वाले शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों की कुशलता विश्लेषित हुई है? क्या प्रशिक्षित शिक्षक के अधिगम कार्य की उपलब्धियों पर प्रभाव का विश्लेषण हुआ है? (उदीयमान अभ्यास X-3)

शिक्षकों का प्रस्तरण एवं अवधारण :–

1. सर्वाधिक अच्छी योग्यता वाले लोगों को शिक्षण में आकर्षित एवं परिमियोजित किए रखने के लिए क्या कार्ययोजना है? (विश्ले0 उप0

गुणवत्ता हेतु बिना से जोडें) क्या यह प्रभावकारी है? हमारे राष्ट्र में शिक्षकों के अनुशय की क्या सीमा है? यह शिक्षण क्यों व्यवसाय छोडते हैं?

2. अपने शिक्षण के लिए शिक्षकों को पुरूस्कृत करने एवं पहचाने जाने के लिए सर्वाधिक अच्छे शिक्षकों हेतु क्या कार्य योजनाऐं हैं? (विश्ले0 उप0 वित्त से जोडें)

3. पाठ्यचर्चा आवश्यकताओं से संबंधित होकर, शैक्षिक ढांचे में, एवं सभी शैक्षिक स्तरों पर क्या समान रूप से योग्य-अहर्ताधारी शिक्षक प्रस्तारित /परियोजजित किए गए हैं? यह सुनिश्चित करने हेतु कि शिक्षकों का प्रस्तरण समानता लिए हुए है एवं यह कार्य योजना सतत् रूप से चालू है क्या कार्ययोजना कार्यान्वित की गई है, (विश्ले0 उप0 समानता एवं समावेश से जोडे)

शिक्षकों का प्रबंधनः-

1. अपने कैरियर के सभी क्षणों मे ंसहायता प्राप्त करने हेतु शिक्षकों के लिए क्या कार्य योजनाऐं हैं? क्या यह अभिप्रेरण जागृत कर शिक्षकों के कार्य प्रदर्शन को प्रोत्साहित करने में सहायक हैं?

2. निर्देशन एवं कार्य प्रदर्शन के मूल्यांकन के क्या स्वरूप उपस्थित हैं एवं यह कितने प्रभावकारी हैं? (विश्ले0 उप0 शासन से जोडें)

3. शिक्षा व्यवसाय के सभी स्तरों पर योजना बनाने एवं निर्णय लेने में शिक्षक किस सीमा तक सहभागी होते हैं?

कार्य हेतु प्राथमिकताएँः-

1. वर्तमान एवं भविष्य के हमारे शिक्षकों की गुणवत्ता में महती सुधार प्राप्त करने हेतु त्वरित रूप से किन मुहावरों बंधनों को समाप्त करना है इनके मुख्य क्षेत्र क्या हैं?

2. एक प्रमाण आधारित नीति एवं अभ्यास हेतु कौन–कौन से शान विदारों को भरना है ?

3. पहचाने गए शान विदारों को भरने एवं प्राथमिक बंधनों को दूर करने हेतु क्या आवश्यक कदम उठाने हैं ?

4. कौन कब क्या करता है ? वह समन्वय कार्य प्रणाली जो कि एक व्यवस्थित एवं सम्पूर्ण रूप से परिवर्तनों को प्रभावित करे–क्या होगी ?

   क्या प्रशिक्षित शिक्षक के अधिगमकर्ता की उपलब्धियों पर प्रभाव का विश्लेषण हुआ है ? (उदीयमान अभ्यास X-3)

शिक्षकों का चयन, प्रस्तरण एवं अवधारणः–

1. सर्वाधिक अच्छी योग्यता वाले लोगों को शिक्षण में आकर्षितज एवं परिमियोजित किए रखने के लिए क्या कार्य योजना है। (विश्ले0 उप0 गुणवत्ता हेतु बिना से जोडे) क्या यह प्रभावकारी है ? हमारे राष्ट्र में शिक्षकों के अनुशय की क्या सीमा है ? यह शिक्षण क्यों व्यवसाय छोडते हैं ?

2. अपने शिक्षण के लिए शिक्षकों को पुरूस्कृत करने एवं पहचाने जाने के लिए सर्वाधिक अच्छे शिक्षकों हेतु क्या कार्य योजनाएं हैं ? (विश्ले0 उप0 वित्त से जोडें)

3. पाठ्यचर्चा आवश्यकताओं से संबंधित होकर, शैक्षिक ढांचे में, एवं सभी शैक्षिक स्तरों पर क्या समान रूप से योग्य–अहर्ताधारी शिक्षक प्रस्तारित/परिनियोजित किए गए हैं ? यह सुनिश्चित करने हेतु कि–शिक्षकों का प्रस्तरण समानता लिए हुए है एवं यह कार्य योजना सतत् रूप से चालू है क्या कार्ययोजना कार्यान्वित की गई है ? (विश्ले0 उप0 समानता एवं समावेश से जोडें)

शिक्षकों का प्रबंधनः–

1. अपने कैरियर के सभी क्षणों में सहायता प्राप्त करने हेतु शिक्षकों के लिए क्या कार्य योजनायें हैं? क्या अभिप्रेरण जागृत कर शिक्षकों के कार्य प्रदर्शन को प्रोत्साहित करने में सहायक हैं?
2. निर्देशन एवं कार्य प्रदर्शन के मूल्यांकन के क्या स्वरूप उपस्थित हैं एवं यह कितने प्रभावकारी हैं? (विश्ले0 उप0 शासन से जोंडे)
3. शिक्षा व्यवस्था के सभी स्तरों पर योजना बनाने एवं निर्णय लेने में शिक्षण किस सीमा तक सहभगी होते हैं? (उदीयमान अभ्यास X-4)

कार्य हेतु प्राथमिकतायें :–

1. वर्तमान एवं भविष्य के हमारे शिक्षकों की गुणवत्ता में महती प्राप्त करने सुधार हेतु त्वरित रूप से किन मुहावरों –बंधनों को समाप्त करना है इनके मुख्य क्षेत्र क्या हैं?
2. एक प्रमाण आधिारित नीति एवं अभ्यास हेतु कौन कौन से ज्ञान विदारों को भरना है?
3. पहचाने गए ज्ञान विदारों को भरने एवं प्राथमिक बंधनों को दूर करने हेतु क्या आवश्यक कदम उठाने हैं?
4. कौन कब कया करता है वह समन्वय कार्य प्रणाली जो कि इस व्यवस्थित एवं सम्पूर्ण रूप से परिवर्तनों को प्रभावित करे–क्या होगी?

XI विश्लेषणात्मक उपकरण :– अधिगम परिवेश :–

1. भूमिकाः–

सहायक परिवेशों में अधिगमकर्ताओं में आत्म प्रभावोत्पादकता एवं आत्म अभिप्रेरण के उच्च स्तर होते हैं एवं वे अधिगम को एक प्राथमिक रूपान्तर शक्ति के रूप में उपयोग करते हैं। [45] एक ऐसे परिवेश में अधिगमकर्ता– बालक, युवा या वयस्क का स्वागत करना जहाँ वे सुरक्षित अनुभव कर सकें एवं पोषित किए पा सकें– बहुत ही महत्वपूर्ण होता है प्रत्येक व्यक्ति एवं पूर्ण समाज के चहुंमुखी विकास की दृष्टि से। सीमित वित्तीय साधनों वाले राष्ट्रों में अधिगम परिवेश के मुददे का निर्धारण एक समझपूर्ण–व्यवस्थित तरीके से करना ज्या गंभीर होता है। अधिगम हेतु साक्ष्य परिवेश बनाने वाले तत्वों की स्पष्ट परिभाषा एवं इस परिवेश की प्राप्ति हेतु स्पष्ट परिलक्षित होने वाले विकास के साथ इन सीमित संसाधनों का निवेश होना चाहिए। निर्णय लेने की परतों की जटिलता एवं अधिगम व्यवस्था की विस्तृत विविधता के बाबजूद यह महत्वपूर्ण है कि अधिगम परिवेशों के निर्माण का महत्व करना हो एवं उपरोक्त वर्णित बिनदुओं को एक राष्ट्रीय व नीति संदर्भ में लेकर जोडा जाये।

गुणात्मक ढाँचों में अधिगम घटित होता है एवं अधिगम परिवेश संरचित एवं विघटित किए जा सकते हैं एवं विभिन्न परिवेशों में अधिगम एक दूसरे के पूरक हो सकते हैं। संस्थायें (केन्द्र, अधिगम ग्राम–शहर आदि) के रूप में संरचित परिवेशों में, मूख्यतः औपचारिक एवं अनौपचारिक शिक्षा स्वरूप लेती है वहीं दूसरी ओर अनियमित शिक्षा संचरित एवं विघटित दोनों ही परिवेशों में आकार लेती है। यह विश्लेषणात्मक उपकरण संरचित परिवेशों पर ध्यान केन्द्रित करता है। (ज्यादा जानकारी हेतु पूर्ण स्वरूप देखें) सर्वाधिक महत्वपूर्ण प्रश्न जो यह उपकरण उठाता है वह है :– क्या हमने प्रत्येक अधिगमकर्ता हेतु ऐसा परिवेश सुनश्चित करया है जो भौतिक/शारिरीक एवं मनो सामाजिक रूप दोनों

[45] (Bereiler & Scardamalia, 1987)

ही में उनके अधिगम को सक्षम बनाता है एवं इस प्रकार शिक्षा की गुणवत्ता एवं अधिगम प्रभवशीलता को सुधारने हेतु सकारात्मक है ?

संरचित प्रश्नों की एक श्रृंखला के द्वारा यह उपकरण नीति संदर्भ भौतिक/शारिरीक एवं मनो–सामाजिक दोनों ही अधिगम परिवेशों के विभिन्न पक्षां को एक गहराई पूर्ण विश्लेषण करने में सहायक होता है।

2. निदान–पहचान एवं विश्लेषणः–

एक अच्छेअधिगम परिवेश हेतु नीतियाँ, उपकरण एवं प्रक्रिया :–

1. अधिगम परिवेशों को सक्षम बनाने में किस प्रकार मौजूदा नीति निर्देश एवं उपकरण सुनिश्चितता देते हैं ? अधिगम परिवेशों के निर्माण एवं सक्षम होने के लक्ष्यों के साथ हमारी कानूनी रूपरेखाऐं किस प्रकार/सीमा तक संगत है ? वे एक अधिकार आधारित पहुंच के लिए सहायक होती हैं इसका क्या प्रमाण हैं ? (सभी के लिए उपलब्धता एवं उपागम के सिद्धान्त, भेद का ना होना, अवसरों की समानता, आधारभूत स्वतंत्रता)
2. सभी के लिए गुणवत्ता शिक्षा प्राप्त करने हेतु मुख्य कारक के रूप में अधिगम परिवेश को शिक्षा गुणवत्ता सुधार प्रयत्न किस सीमा तक दर्शाते हैं ? किन उपकरणों का उपयोग करके किन मुख्य आयामों के साथ इन परिवेशों का ध्यान किया गया है ?
3. एक अच्छे अधिनियम परिवेश की संरचना की अर्हता के रूप में (प्रशासकों, प्राधानाध्यकों, शिक्षकों, अधिगमकर्ताओं, सलाहकारों व सहायकों) शैक्षिक समुदाय की सहभागिता हेतु क्या कार्य योजना है ? हम लैंगिक संतुलन को कैसे सुनिश्चित करते हैं ? क्या कार्य योजना प्रभावशाली है ? यह हम कैसे जानते हैं ?
4. एक सक्षम अधिगम परिवेश को परिभाषित करने में केन्द्रित एवं विकेन्द्रित संरचनाओं की क्या भूमिका है ? (विश्ले0उप0 शासन के जोंडे)

5. अधिगम परिवेशों के सुधार में वर्तमान नीतियां, कानूनी रूपरेखाऐं एवं उपकरण प्रभावशाली रहे हैं इसके क्या प्रभाव हैं? एक अच्छे अधिगम परिवेश को बनाने एवं बनाए रखने में साधनों को सहायक बनाने हेतु आँकडे एकत्रित करने एवं विश्लेषण हेतु क्या कार्य योजनायें लागू की गई हैं?

भौतिक अधिगम परिवेशः–

1. हमारे अधिगम स्थानों की निर्माण प्रक्रिया, स्वरूप स्थिति के चयन हेतु क्या कार्य योजनायें (निर्देशिकाएं, मानक स्तर, आदर्श एवं सुरक्षा कदम) अपनाए गए हैं, इस योजना एवं स्वरूप में समुदाय, सहयोगी स्टाफ, अधिगमकर्ता एवं ग्रामीणों से किस सीमा तक सलाह ली गई है? यह मानदण्ड व आवश्यकतायें साथ रखी गई हैं। इसका क्या प्रमाण है? (उदीयमान अभ्यास XI%1) (बालक सहयोगी शाला संरचना मानदण्ड एवं निर्देशिकायें खान्डां स)

2. हमारी शैक्षिम नीतियों एवं कार्यक्रमों में निश्चित की गई आवश्यकताओं (प्ब्ज के स्थान, विज्ञान कार्यक्रमों के प्रदत्त होने में प्रयोगशालाओं की उपलब्धता को सुनिश्चितता को हमारे भौतिक स्थान किस प्रकार सुनिश्चित करते हैं)

3. अधिगम स्थान तक अपागम मार्ग सभी के लिए सुरक्षित हैं विशेषतः लडकियों एवं स्त्रियों के लिए इसे सुनिश्चित करने हेतु हमने क्या ठोस कदम उठाएं हैं?

4. (साफ पीने योग्य जल की उपलब्धता उपयुक्त शौचालयों की सुविधा, रोशनी, हवादार वातावरण, गर्माहट, नाली व्यवस्था, नमी) अधिकतम ढांचे में क्या भोतिक स्थितियाँ हैं जो अधिगमकर्ता के स्वास्थ्य को प्रभावित

करती हैं ? क्या लडकियों एवं लडकों के लिए अलग–अलग शौचालयों की व्यवस्था है ?

5. (ग्रामीण व शहरी) पूरे राष्ट्र में भौतिक अधिगम परिवेश के समान बंटवारे को हम कैसे सुनिश्चित करते हैं ? भौतिक आधार संरचनायें एवं सुविधायें नीति लक्ष्यों के अनुसार समान रूप से बांटी गई हैं इसका क्या प्रमाण है ?

6. भौतिक परिवेशों को कितनी कुशलता से संभाला व उपयोग में लाया जाता है ? किस सीमा तक इसे सूक्ष्मता से जाँचा जाता है ? खराब प्रबंधन को ठीक करने एवं आधार संरचना के रखरखाव हेतु क्या किया जा रहा है ?

मनो सामाजिक अधिगम परिवेशः– (तकनीकी टिप्पणीXI-I)

1. साथ रहने की कला को बढावा देने, विविधताओं का सम्मान सुनिश्चित करने एवं विरोधों से निपटने हेतु क्या रचनात्मक कदम उठाए हैं ? (विश्ले0 उप0 समानता एवं समावेशविरण से जोडे) (उदयिमान अभ्यास XI-2) अधिकार, सम्मान, सम्मान एवं पूर्ण विद्यालय पहुँच यूनाइटेड किंगडम)

2. हिंसा (बच्चों के दैहिव एवं दैहिव एवं अवमानित करने वाले दण्डों को मिला दर) से अधिगमकर्ताओं को सुरक्षित रखने एवं बचाने जैसे कौन–कौन से कदम उठाए गए हैं ? हिंसाः शारीरिक हिंसा, धमकाना, मानसिक मनोवैज्ञानिक हिंसा, साइबर धमकाना, बाहय हिंसा (दुविधा की स्थिति गैंग का प्रभाव) हिंसा के विरूद्ध हमारी पाठ्यचर्चा कौन कौन से आवश्यक प्रकरणों को सम्बद्ध कर किस सीमा तक जोडती है ? (उदयिमान अभ्यास XI 3) फिनलैंड में धमकाना रोकने का अभियान)

3. हमारे अधिगमकर्ताओं पर हिंसा के प्रकार स्वरूप एवं हद के क्या प्रमाण हैं ? हिंसा के आंकडों को एकत्रित करने, जांच करने एवं मूल्यांकन करने हेतु क्या राष्ट्रीय कार्ययोजना है ?

4. अधिगम परिवेश के अन्दर चौकसी (राष्ट्रीय क्षेत्रीय /स्थानीय स्तरों पर) की क्या कार्ययोजना है ?

5. विद्यालयों में स्वास्थ्य एवं पोषण के संदर्भ में क्या हमारे पास राष्ट्रीय नीति/योजना/रूपरेखा है ? यदि है तो यह क्या पक्ष्ज्ञ (HI, AIDS, मलेरिया, कीडों से मुक्ति (Deworming) शाला में भोजन) समाहित करती है ? इसका कार्यान्वयन कितना प्रभावशील है ? कौन से विशिष्ट स्वास्थ्य एवं पोषण के मुददे ज्यादा विशिष्ट नीतियाँ/योजनायें/रूपरेखाऐं उच्च स्थान लेते हैं ?

6. हमारी शैक्षिक नीतियों किस सीमा तक उन प्रभावपूर्ण निर्देश एवं सलाहकार नव प्रवर्तन कार्यक्रमों को बढावा देती हैं ? जो ज्यादा समय तक बने रहते हैं, माँग आधारित होते हैं एवं क्रियान्वित होने योग्य होते हैं ? हमारी निर्देशकीय एवं सलाहकार कार्यक्रम नीति में किस प्रकार की सेवाएं व विषयवस्तु क्षेत्र समाहित हैं ?

3. कार्य की प्राथमिकताएँः–

1. हमारे सभी अधिगमकर्ताओं हेतु गुणवतत्ता शिक्षा के प्रदत्त होने में हमारे अधिगम परिवेश को सुचारू बनाने के लिए किन मुख्य क्षेत्रों को तुरंत देखा जाना आवश्यक है ?

2. पर्याप्त एवं गुणवत्ता भौतिक एवं मनोसामाजिक अधिगम परिवेश की उपलब्धता हेतु एवं प्रमाण आधारित नीति के लिए कौन कौन से ज्ञान विदार हैं जिन्हें भरा जाना है ?

3. पहचाने गए शान विदारों एवं प्राथमिक बंधनों से निपटने हेतु उठाए जाने वाले आवश्यक कदम क्या हैं ?

XII विश्लेषणात्मक उपकरण : शासन

1. भूमिकाः–

शिक्षा में असमानताओं पर काबू करने एवं गुणवत्ता अधिगम हेतु सकारात्मक स्थितियों की रचना करने में शासन एवं बहुत ही महत्वपूर्ण कारक हैं यह 2009 की वैश्विक विश्लेषण रिपोर्ट (GMR) से स्पष्ट रूप से दर्शाया है। व्यवस्था के स्तर पर शासन यह निर्धारित करता है कि कौन सी शैक्षिक नीतियों एवं प्राथमिकतायें लागू करनी हैं, शिक्षा को कितना कोष उपलब्ध कराया जाएगा, इन स्त्रोतों को किस प्रकार बांटा जाएगा, उपयोग दिया जायेगा, प्रबंधित कर उत्तरदायित्व में लाया जाएगा शिक्षा पर शासन करने वाले कार्य एवं शक्तियाँ व्यवस्था के अन्तर्गत विभिन्न परतों एवं कार्यकर्ताओं में किस प्रकार बाँटें जाएगें एवं किस सीमाजन कानूनी नियम व पारदर्शिता विकसित की जाएगी जिससे वे लोग जिनके पास शक्ति हैं वे अपने कार्य के प्रति उत्तरदायी रहें। संस्थागत स्तर पर शासन योग्य, अभिप्रेरणादायी एवं उत्तरदायी व्यक्तियों के परियोजन को सुनिश्चित करता है। (उदा. शिक्षक, शिक्षा सुगमता लाने वाले/नेता एवं प्रबंधक) यह सुनिश्चित करता है कि अधिगमकर्ताओं को उच्च स्तरीय एवं प्रासंगिक पाठ्यचर्या सामग्री उपलब्ध कराई जाए एवं अधिगम में रत होकर वे अपने शिक्षकों से पर्याप्त सहायता प्राप्त करें। शासन विविध गंभीर भागीदारों (पालकों, स्थानीय सामुदायिक सदस्यों सभ्य समाज, निजी क्षेत्र आदि को अधिगम प्रक्रिया में निर्णय लेने की हिस्सेदारी देकर, योगदान देने के अवसर उपलब्ध कराता है। खराब शासन गंभीरता पूर्वक शिक्षा गुणवत्ता एवं प्रभावहीन अधिगम अनुभवों को बढावा देना है।

शिक्षा शासन केन्द्र से निम्न स्तर तक सामुदायिक स्तरों में गुणात्मक परतों के साथ बनते हुए विभिन्न कार्यकर्ताओं, भागीदारों के साथ जो शक्ति जबाबदेही उत्तरदायित्व प्रभाव व प्राधिकार रखते हैं से निर्मित होता है। तकनीकी टिप्पणी (XII-2)

सह विश्लेषणात्मक उपकरण एवं सम्पूर्ण UNESCO रूपरेखा जो कि सामान्य शिक्षा व्यवस्था एवं अधिगम प्रभावों की गुणवत्ता का निदान करती है का हिस्सा है। यह विश्लेषणात्मक उपकरण लक्ष्य करता है है कि सहायक सदस्य राज्यों को उनके शासन ढांचे में निदान में सहयोग मिले एवं शिक्षा व्यवस्था की प्रक्रिया के सभी स्तरों पर सहायता मिल पाए। (ज्यादा जानकारी हेतु पूर्ण स्वरूप देखें) यह उपकरण जिस महत्वपूर्ण प्रश्न को उठाता है वह हैः– हमारी शिक्षा व्यवस्था का शासन प्रभावपूर्ण अधिगम अनुभवों एवं उच्च स्तर की शिक्षा की प्राप्ति एवं इन्हें बनाए रखने में किस प्रकार सहायक होता है? शासन के गंभीर तत्वों के आसपास महत्वपूर्ण प्रश्न उठकर यह निदान आसान बनाया गया है।

2. निदान–पहचान एवं विश्लेषणः–

संस्थागत स्तर पर शासनः–

1. शिक्षण व अधिगम को सुधारने में मदद करने हेतु संस्थागत स्तरों (FCCF] प्रशासन शाला समिति/शाला प्रबंधन समिति, व्यस्क शिक्षा संस्थाएं, व्यस्क साक्षरता उपलब्धता, जेल प्रशासन आदि) पर वर्तमान शासन संरचनाएं कितनी प्रभावपूर्ण हैं? अपनी जिम्मेदारियों को निभाने में संस्थागत स्तर पर शासन संरचनाओं में कार्यरूप में लाई जाने वाली सहायक योजनायें क्या हैं? यह कार्य करती हैं इसके प्रभाव कहाँ हैं?
2. संस्थागत स्तर पर शासन बनाने वाली एवं जबाबदेही संरचनायें बनाने की प्रक्रिया कितनी सहभागिता पूर्ण एवं समावेशी है? क्या गंभीर भागीदारों की विविधताओं में शासन संरचना की रचना दर्शाती है? इन भागीदारों को पहचासनने के मापदण्ड क्या हैं? इनके महत्वपूर्ण संलग्न होने केक लिए कार्य योजनायें क्या हैं? इस संलग्न होने के प्रभावपूर्ण होने के प्रमाण कहां क्या हैं? (नेपाल में अच्छी अभ्यास प्रक्रिया का उदाहरण देखें

जो शाला प्रबंधन समितियों में अच्छे लोकतांत्रिक स्वरूप एवं उच्च सहभागिता को दर्शाती है। उदीयमान अभ्यास XII-1

2. अधिगम को बढावा देने में नेवृत्व की भूमिका क्या है? संस्थाओं में ऐसे प्रधान जो अनुदेशात्मक एवं अधिगम नेतृत्व को लागू कर सके के चयन हेतु वर्तमान कर्मयोजनायें कितनी प्रभावकारी हैं? (तकनीकी टिप्पणी 3) [46] हमारे राष्ट्र में अधिगम हेतु नेतृत्व ने एक अलग पहचान बनाई है यह दर्शाने के प्रमाण कहां हैं? (शिक्षक विश्लेषणात्मक उप0 से जोडें) (सिंगापुर में अच्छे अभ्यास का उदाहरण देखें जो शाला प्राचार्यों के चयन एवं विकास में कडा अनुशासन दर्शाता है) (उदयीमान अभ्यास XII-2)

3. कार्य निष्पादन हेतु संस्थागत कार्यकलापों के पारदर्शी एवं उत्तरदायी बनाने में क्या कार्य योजनायें अपनाई गई हैं? स्थानीय सामुदायिक सदस्यों, सभ्य समाज, छात्रों व अधिगमकर्ताओं के संस्थाओं, पूर्व शाला एवं शाला के बच्चों के पालकों) एवं भागीदारों को प्रबंधन के वित्त, स्टाफ के कार्य निष्पादन अधिगम उपलब्धि की गुणवत्ता या अन्य पक्षों से संबंधित सूचना उपलब्ध कराई जाती है? शिक्षा की गुणवत्ता को सुधारने हेतु यह पारदर्शी उपाय कितने प्रभावशाली हैं? (उगांडा से अच्छे अभ्यास का उदाहरण देखों जो शिक्षा के कोष में आने वाले सार्वजनिक व्यय को बनाने वाले सर्वे के उपयोग को बनाता है) (उदयीमान अभ्यास XII-3)

अर्न्तमध्यस्थ स्तर पर शासन

1. प्रान्तीय एवं जिला प्राधिकरणों के मध्य प्रधिकार एवं कार्य का उत्तरदायित्व रेखांए किस प्रकार परिभाषित एवं व्यक्त हैं जिससे कि गुणवत्ता शिक्षा हेतु प्रत्येक प्राधिकरण अपनी भूमिका हेतु जागरूक है? शैक्षिक प्राधिकरण गुणवत्ता अधिगम पर ध्यान देने दें इसे पक्का करने के प्रमाण कहां हैं?

[46] तकनीकी टिप्पणी 3 अधिगम नेतृत्व हेतु एक संक्षिप्त परिचय देती हैं।

2. गुणवत्ता शिक्षा हेतु स्थानीय संरचनायें एवं क्षेत्रीय संरचनायें किस प्रकार के कार्यक्रम एवं योजनायें बनाती हैं ? शैक्षिक संस्थओं में गुणवत्ता सुधार आरंभ करने एवं गुणवत्ता की कार्यसूची तैयार करने में यह योजनायें कितनी प्रभावकारी हैं ?

3. व्यावसायिक सहायता, शैक्षिक नेतृत्व, एवं उचित निर्देशन द्वारा गुणवत्ता शिक्षा हेतु प्रान्तीय एवं स्थानीय प्राधिकरण किस प्रकार शैक्षिक संस्थाओं, प्रशासकों एवं शिक्षकों को पर्याय रूप से संसाधन उपलब्ध करते हैं ? (वित्त पर विश्लेषणात्मक उपकरण)

4. अपने कार्य निष्पादन एवं परिणामों के प्रति प्रान्तीय, क्षेत्रीय, जिला व दूसरी स्थानीय संस्थायें किस प्रकार जबाबदेह हैं ?

राष्ट्रीय स्तर पर शासनः–

1. नीति निर्धारण प्रक्रिया में विभिन्न भागीदार/कार्यकर्ता किस प्रकार भाग लेते हैं ? शिक्षा की गुणवत्ता को सुधारने हेतु नीतियाँ एवं कार्यक्रम बनाने के लिए क्या किसी मजबूत राष्ट्रीय स्वामित्व को बनाने वाले प्रमाण हैं ?

2. अपने उपर सोंपी गई जिम्मेदारियों एवं भूमिकाओं को पूरा करने हेतु शासन के विभिन्न स्तर किस प्रकार प्रभावशाली हैं ? अपने शिक्षा शासन पर पुर्नदृष्टि हेतु हमने क्या किया है ? शिक्षा शासन के केन्द्रीयकरण एवं विकेन्द्रीयकरण के बीच संतुलन दिखाने हेतु क्या पाठ हमने सीखे हैं ? (वित्त पर विश्लेषणात्मक उपकरण)

3. नीतियों एवं कार्ययोजनाओं को योजनाओं एवं कार्यक्रमों में रूपान्तरित करने हेतु क्या हमारे पास पर्याप्त राष्ट्रीय क्षमता है ? योजना एवं कार्यक्रम प्रभावपूर्ण रूप से क्रियान्वित किए जाते हैं यह हम कैसे जानते हैं ?

4. गुणवत्ता शिक्षा प्रदत्तता को सुनिश्चित करने हेतु केन्द्रीय एवं विकेन्द्रीय संरचनाओं के बीच क्या समन्वयन कार्ययोजनायें काम करती हैं? मंत्रालयों एवं मुख्य भागीदारों के बीच सूचना बांटने, सलाह करने एवं मिलकर कार्य करने हेतु विभिन्न रेखाओं की क्या सीमा हैं? (साक्षरता समन्वय पर अच्छे अभ्यास का चीनी उदाहरण, उदीयमान अभ्यास XII 4)

5. सार्वजनिक कार्यलयीन अफसरों एवं सेवा प्रदायकों को परिणामों के प्रति जबाबदेह बनाये रखने के लिए क्या कार्य योजनायें हैं? गुणवत्ता एवं समानता लक्ष्यों के बीच उत्तरदायित्व व्यवस्था किस प्रकार इन लक्ष्यों का उत्तरदायित्व सुनिश्चित करती है? शिक्षा क्षेत्र में पारदर्शिता एवं उत्तरदायित्व को बढाने हेतु क्या सूचना तंत्र प्रभावकारी हैं? (प्रजाति के अच्छे अभ्यासों जो विद्यालयीन उत्तरदायित्व को सुधारने हेतु परिणाम पत्र से संबंधित हैं उदीयमान अभ्यास ग्प्.5)

जाँच एवं मूल्यांकनः–

1. शिक्षा के विभिन्न स्तरों एवं प्रकारों पर गुणवत्ता आश्वासन हेतु राष्ट्र में क्या कार्ययोजनायें एवं प्रक्रियायें अस्तित्व में हैं? गुणवत्ता को बढावा देने हेतु क्या स्पष्ट बहुमत के साथ इनकी संरचना है? जांच एवं मूल्यांकन के लक्ष्य गुणवत्ता अधिगम के किन पक्षों से आकार लेते हैं? (पाठ्यचर्चा, शिक्षक, प्रशिक्षण निर्धारण एवं वित्त विश्ले0 उप0 से जोंडें) गुणवत्ता सुनिश्चित करने में यह संरचनायें कितनी प्रभावकारी हैं? इनके प्रभावकारी होने के क्या प्रमाण हैं।

2. वर्तमान नियामक रूपरेखा, यह सुनिश्चित करने में कि गैर राज्य क्षेत्र वांछित न्यूनतम गुणवत्ता मानक एवं अधिगमकर्ताओं के प्रति धन का मूल्य व्यक्त करने में संतुष्टि प्रदान करते हैं कितनी प्रभावकारी हैं? (पाकिस्तान के अच्छे अभ्यास का उदाहरण जो कि गैर सार्वजनिक

विद्यालयों को गुणवत्ता शिक्षा हेतु नियामन प्रदान करता है) (उदयीमान अभ्यास XII-6) (वित्त विश्ले0 उप0 से जोडे)

3. शिक्षा व्यवस्था के कार्य करने के बारे में वर्तमान व्यस्था किस प्रकार एकदम सही एवं तैयार सूचना उपलब्ध कराती है? क्या अनुदेशों, अधिगम, परीक्षा परिणामों पर सूचना व्यवस्था आंकडे प्रदान करती है? गुणवत्ता दर्शाने हेतु कौन से दूसरे सूचकों का उपयोग किया गया है? क्या विभिन्न स्तरों पर निर्णायकों /प्रबंधकों के बीच सूचना तैयार रूप से प्राप्त की जा सकती है? निर्णायक एवं नीति निर्धारक अपने निर्णयों में आंकडों का उपयोग करते हैं क्या इसका प्रमाण हैं? (उपकरण निर्धारण से जोंडे) (विद्यालय पुर्नदृष्टि जो कि संलग्न भागीदारों तक विस्तारित की गई शैक्षिक संस्थाओं के कार्य निष्पादन की सूचना को प्रसारित करने की प्रक्रिया बताती है का न्यूजीलैंण्ड के अच्छे अभ्यास का उदाहरण उदयीमान अभ्यास (XII-7)

3. कार्य की प्राथमिकताः–

1. हमारी शासन व्यवस्था में शिक्षा क्षेत्र को गुणवत्ता शिक्षा प्राप्त करने हेतु और विकास कराने में किन मुख्य क्षेत्रों को त्वरित रूप से देखना है?

2. शिक्षा शासन की व्यवस्था में प्रमाण आधारित सुधारों हेतु कौन–कौन से ज्ञान विदार हैं जिन्हें भरना हैं?

2. पहचाने गए ज्ञान विदारों एवं प्राथमिक बंधनों से निपटने हेतु क्या आवश्यक कदम उठाने हैं?

XIII. विश्लेषणात्मक उपकरण : वित्त व्यवस्था

1. भूमिका :–

2011 की ई.एफ.ए. ग्लोबल मॉनिटरिंग रिपोर्ट यह दर्शाती है कि निम्न आय देशों में सकल घरेलू उत्पाद (GDP) के एक हिस्से के रूप में शिक्षा खर्च, 1999 के 2.9 प्रतिशत की तुलना में 2008 में 3.8प्रतिशत बढ़ गया है। न्यूज आय वाले राष्ट्रों में एक तिहाई से ज्यादा राष्ट्रों में शिक्षा व्यय कुल शासन व्यय में 20प्रतिशत तक वढ़ गया है। यहाँ तक कि सामान्य चारों में विशेषता न्यूनतम आय वाले राष्ट्रों में शिक्षा व्यय एक महत्वपूर्ण हिस्सा बनाता है। न्यून आय एवं मध्य आय वाले देशों में 90 प्रतिशत तक (लगभग US$ 30 बिलियन 2009 एवं 2008 के मध्य) होकर शिक्षा हेतु अन्तर्राष्ट्रीय सहायता भी महत्वपूर्ण रहीं है। इस बढते निवेश एवं सरकार के संकल्प के बाबजूद घरों एवं दानकर्ताओं के शैक्षिक वित्तियन में अभी भी बड़े–बड़े विदारों (gaps) का अनुभव है। 2010 ई.एफ.ए. रिपोर्ट बताती है कि US$ 16 बिलियन वार्षिक के ई.एफ.ए. लक्ष्यों तक पहुंचाने में 2015 तक का समय वित्तीय विदार को पूरा होने में लगेगा। सहसस्त्राब्दी शिक्षा लक्ष्यों एवं इनके पार पहुँचने की उपलब्धि हेतु संदेह नही हैं। यद्यपि इससे ज्यादा महत्वपूर्ण यह है कि मौजूदा उपस्थित बहुत बड़े एवं बढ़ते शिक्षा निवेश को प्रभावकारी रूप से उपयोग किया जाय यदि शिक्षा की उपलब्धियों को लम्बे समय तक बनाए रखना है तो यह बहुत ही आवश्यक है। राष्ट्रों व दानकर्ताओं को यह स्पष्ट समझ होनी चाहिए कि शिक्षा के संसाधन अधिगम परिणामों से कैसे जुड़े होन चाहिए जिससे कि शिक्षा की गुणवत्ता को सुधारने हेतु महत्वपूर्ण नीति निर्णय लिए जा सकें। इस आपस में जुड़ाव को मापने का सबसे सही रास्ता है कि व्यापक राष्ट्रीय शिक्षा खाते बनाए जाएं (NEAs)जो शिक्षा के सारे वित्तीय संसाधनों को खोज निकालें एवं इनके उपयोग के विस्तृत दस्तावेज बनाएं जाएं जबकि गुणवत्ता शिक्षा को सुधारने के यह वित्तिय संसाधन एक मात्र चालक नहीं हैं। NEAs तक पैठ अधिगम परिणामों

एवं अधिगम के दूसरे चालकों जैसे शिक्षा समानता एवं कुशलता को देशों को यह जानने में मदद करेगी कि उनके संसाधन शाला उपलब्धियों को कैसे एवं वहा केन्द्र में रख कर कार्य करते हैं। [47]

प्रमाण यह दर्शाते है कि बहुत से राष्ट्रों में निम्न गुणवत्ता शिक्षा की क्रमिक समस्या का हल ज्यादा बित्तीय नहीं है। यह भी प्रमाण है कि शिक्षा वित्तीय नहीं है। यह भी प्रमाण है कि शिक्षा विलियन, बहुत से राष्ट्रों में एक बड़ी सीमा तक संपन्न लोगों को ही लाभ पहुँचाते हैं विशेषतः शिक्षा की सीढ़ी के ऊँचे स्तरों पर। इस प्रकार सभी के लिए गुणवत्ता शिक्षा प्रदाय करने हेतु शिक्षा व्यय की समानता एवं प्रभावपूर्णता को सुधारना अभी भी एक अलिखित शक्ति की तरह है। शिक्षा परिणामों की गुणवत्ता एवं समानता कुछ विविध कारकों पर निर्मित है जिनमें शिक्षा कार्यों की गुणवत्ता एवं स्तर, शिक्षण, अधिगम एवं निर्धारण प्रक्रियाएं शामिल हैं। यूनेस्को की सामान्य शिक्षा गुणवत्ता विश्लेषण/निदानात्मक यपरेखा (GEGAF) इन सभी शिक्षा उप व्यवस्थाओं एवं इनके अन्तर्सम्बंध से व्यवहार करती है। सभी के लिए शिक्षा की गुणवत्ता प्रदान करने हेतु, अच्छे से कार्य करने वाली शिक्षा वित्त व्यवस्था सक्षम बनाने वाला एक मुख्य कारक है। यह विश्लेषणात्मक उपकरण (ज्यादा जानकारी हेतु मुख्य रूप देखें) शिक्षा की वित्तिय उपव्यवस्था से व्यवहार करेगा। सर्वाधिक महत्वपूर्ण प्रश्न है कि ''हमने अपनी शिक्षा वित्त व्यवस्था को समानता पूर्ण एवं गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा परिणामों के प्राप्ति हेतु सदाम होने के लिए कैसे साकार किया है ? यह विश्लेषणात्मक उपकरण, संरचित प्रश्नों के साथ, राष्ट्रों को उनकी शिक्षा वित्त व्यवस्था के निदान एवं विश्लेषण करने में मदद करता है जिससे मैं अपनी दृढ़ शक्ति एवं चुनौतियों को पहचान सकें एवं गुणवत्ता तथा समानता के मुद्दों को शिक्षा क्षेत्र में अपने एवं उचित नीतियों को बनाने में सहायता हो सकें। यह

---

[47] ग्लोबल लर्निंग क्रायसिस को दूर करने हेतु राष्ट्रीय शिक्षा खातों का उपयोग Jaeques Van dear Gaps and Pauline Abetti Policy Brief 2011-03

निदान व विश्लेषण, शिक्षा वित्त व्यवस्था के मुख्य क्षेत्रों पर ध्यान केन्द्रित कर कोषकी वित्त बंटवारे की, नियतन की एवं उपयोग के साथ–साथ शिक्षा वित्तियन की प्रबंधन क्षमता व्यवस्था को भी सामने रखता है।

2. निदान–पहचान एवं विश्लेषण :–

कोष की पर्यापप्तता

1. योजना में तय किए गए लक्ष्यों को प्राप्त करने हेतु वित्तिय संसाधनों को निश्चित करने के लिए क्या हमने अपनी शिक्षा कार्य योजना को सही तरीके से मूल्य निर्धारण किया है? यदि हाँ तो मूल्य निर्धारण कितना सही था? नियत किए गए शेष एवं आवश्यक कोष के मध्य विदार क्या है? दूसरे तुलनात्मक राष्ट्रों से क्या हमनें निर्देश चिन्ह प्राप्त किए हैं?

2. शिक्षा क्षेत्र में सरकार की मध्य सत्त व्यय यपरेखा (MTEF) नियमन के साथ, प्रक्षिप्त शिक्षा वित्त आवश्यकता कितनी विचार युक्त है? क्या हमने हमारे शिक्षा कार्यक्रमों की प्राथमिकताएं एवं कोष उपलब्धता के अलग अलग परिदृश्यों को समझा है? क्या सम्भाव्य कुशलता उपलब्धियों समीपस्थ सम्भाव्य वित्तिय विदारों से विचार कर रखी गई है?

3. वर्तमान एवं निवेश सर्वाधिक व्ययों से सम्बद्ध बजट निष्पादन दर पर कया आंकड़े उपलब्ध हैं? मार्ग अवरोध क्या है? क्या निदानात्मक कार्य सोचे गए हैं? (क्षमता निर्माण, संस्थागत् परिवर्तन, पक्रिया में परिवर्तन)

4. घरेरू, विकास भागीदारी एवं निजि क्षेत्र सभी संसाधनों को मिलाकर शिक्षा की कुल व्यय राशि का अंदाजा लगाने हेतु क्या कार्य योजनाएं हमारे पास हैं?(तकनीकि टिप्पणी XII.1 राष्ट्रीय शिक्षा खाते)।

क्या प्रमाण है कि हम नियमित रूप से हमारी वित्तियन योजना में इस राशि व्यय की नियमित जांच कर प्राप्त सूचना का उपयोग करते हैं ?

व्यय का नियतन

1. विभिन्न शिक्षा उपवर्गों के मध्य नियतन को निर्धारण करने के मापदण्ड क्या हैं ? क्या शिक्षा के विभिन्न स्तरों के अपेक्षित संबंधित सामाजिक व निजि लाभों का हिसाब यह मापदण्ड रखते हैं ?(व्यवस्था दक्षता विश्ले.उप. से जोड़े) संसाधनों के नियतन हेतु मापदण्ड निर्धारण करने की प्रक्रिया कितनी पारदर्शी एवं सहभागिता पूर्ण है ?

2. शिक्षा मंत्रालय को सार्वजनिक शिक्षा कोष का कितना प्रतिशत नियतन किया गया है ? इनमें से कितना शिक्षकों को तनख्वाह पर नियतन किया गया हैं ?

3. सार्वजनिक व निजि संसाधनों का कितना हिस्सा कक्षा तक पहुंच कर शिक्षण व अधिगम में योगदान देता है ?

4. कार्य निष्पादन को किस सीमा तक यह नियतन प्रोत्साहित करता है ? इस राष्ट्र में ज्यादा संसाधनों का उपयोग सुधरते अधिगम परिणामों के रूपान्तरण में हुआ है इसका क्या प्रमाण है ? विभिन्न विद्यालयों एवं विभिन्न प्रकार के विद्यालयों के मध्य अधिगम परिणामों के विभेदीय निष्पादन को किस सीमा तक संसाधनों की उपलब्धता में विभेदन के द्वारा उत्तरदायी माना गया है ?

5. क्या हमने गुणवत्ता को उभारने हेतु विभिन्न प्रयासो की संबंधित प्रभावपूर्णता का विश्लेषण किया है ? प्रमाण क्या कहता है ? वह प्रयास जो अधिगम परिणामों को सर्वाधिक रूप से सुधारते हैं उन्हें शिक्षा वित्तीयन किस प्रकार/सीमा तक प्राथमिकता देता हैं ?

6. वर्तमान उपलब्ध संसाधनों को गतिज बनाने हेतु, जिससे वे अधिगम परिणामों को सर्वाधिक रूप से योगदान द सकें, संसाधनों के उपयोग व अधिगम उपलब्धियों के बीच जुड़ाव को समझने के लिए हम उदयमान अभ्यासों एवं मौजूदा शोध से क्या पाठ सीख सकते हैं ?

शिक्षा वित्त व्यवस्था का बंटवारा

1. क्या हमने यह सुनिश्चित किया है कि विभिन्न जिलों व विद्यालयों के मध्य शिक्षा विलियन के नियतन हेतु मापदण्ड हमारे समानता एंव गुणवत्ता के लक्ष्यों को परिलक्षित करते हैं ? क्या यह मापदण्ड पारदर्शी रूप से सतत उपयोग में लाए जाते हैं ? इसे सहायता देने के क्या प्रमाण हैं ?

2. हम यह कैसे जानते है कि विभिन्न समूह (शहरी ग्रामीणा, विभिन्न आय वर्ग, क्षेत्र) शिक्षा व्यवस्था के विभिन्न स्तरों पर शिक्षा से कितने लाभान्वित हो रहे हैं ? क्या आंकड़े उपलब्ध हैं विश्लेषित कर नीति निर्धारकों को उपलब्ध कराए जाते हैं ?

3. अधिगम परिणामों में एवं शिक्षा वित्तियन में समानता को सुधारने हेतु हमने क्या उपाय किए हैं ? अधिगम परिणामों में समानता प्राप्त करने हेतु इन उपायों की प्रभावपूर्णता को जांचने हेतु कया कार्ययोजनाएं अपनाई गई हैं ?

4. घरेरू स्तर पर शिक्षा व्ययों का क्या भार है ?

वित्तीय संसाधनों का उपयोग

1. संसाधनों का रिसाव व्यवस्था में न्यूनतम स्तर पर रखा गया है यह हम कैसे सुनिश्चित करते हैं ? क्या हमने किसी प्रकार के सार्वजनिक व्यय

खोज करने वाले सर्वे करवाए है ? यदि हाँ तो इनकी मुख्य खोजे क्या है ?

2. विभिन्न प्रयासों के उपयोग एवं प्रबंध में शैक्षिक संस्थानों के प्रबंधन में क्या आवश्यक कदम उठाए है जो मूल्य रूप में प्रभावकारी बनने हेतु लिए गए हैं ?

3. शला में उपलब्ध कराए गए वित्त कोष के स्तर के लिए सर्वार्धिक संभव शिक्षा परिणाम को प्राप्त करने हेतु क्या कार्य निष्पादन आधारित कदम उठाए गए हैं ?

4. शिक्षा वित्त व्यवस्था को प्रभावकारी एवं पारदर्शी रूप से प्रबंधित करने हेतु, सभी प्रबंधन स्तरों पर हमारे पास आवश्यक मानक संसाधन एवं उपकरण किस सीमा तक है ?

5. शिक्षा व्यवस्थ के प्रत्येक स्तर पर शिक्ष वित्तियन पर हमारा आंकड़ा प्रबंधन कितना प्रभावपूर्ण है ? क्या वित्तिय आंकडे सभी भागीदारों को एक पारदर्शी रूप से उपलब्ध कराए जाते हैं ?

6. विभिन्न कार्यकर्ताओं के मध्य कोष के प्रवाह को खोजने की व्यवस्था क्या हमारे पास है ? लक्ष्य लाभार्थियों (शहरी या ग्रामीण स्त्री या पुरूष) एवं उपवर्ग (पूर्व विद्यालय, माध्यमिक एवं अनैपचारिक) के द्वारा कोषों के सतत् प्रवाह पर आंकड़ों को विघटित करने की क्षमता क्या हमारे पास है ? (तकनीकी टिप्पणी XII.2) (फोर्व्स एवं बाइडास मोरक्को नेशनल एजुकेशनल एकाउन्ट्स, 2006)

7. शिक्षा गुणवत्ता को सुधारने के लिए वित्तिय चुनाओं को चुनने हेतु किस सीमा तक हमने जांच से प्राप्त होने वाले एवं मूल्यांकन से प्राप्त होने वाले परिणामों का उपयोग किया है ? सतत् रूप से बने रहने वाली

परिणाम आधारित वित्त व्यवस्था को सुनिश्चित करने हेतु क्या हम संस्थागत एवं मानव क्षमताओं को बनाने एवं बनाए रखने में सफल हुए हैं ?

3. कार्य की प्राथमिकाएंः–

1. हमारे अधिगम कर्ताओं को गुणवत्ता शिक्षा प्रदाय करने के लिए हमारी शिक्षा वित्त व्यवस्था को सहायता देने हेतु आगे के सुधारों के लिए क्या मुख्य क्षेत्र हैं जिन पर त्वरित रूप से ध्यान देना है।

2. शिक्षा वित्ता व्यवस्था के ऊपर एक प्रमाण आधारित नीति के लिए कौन–कौन से ज्ञान विदार हैं जिन्हें भरा जाना है।

3. पहचाने गए ज्ञान विदारों एवं प्राथमिक बाधाओं से निपटने हेतु क्या अपेक्षित कार्य हैं जिन्हें क्रियान्वित किया जाता है।

XIV. विश्लेषणात्मक उपकरण : व्यवस्था दक्षता

1. भूमिका :–

यूनेस्को के सामान्य शिक्षा गुणवत्ता विश्लेषण/निदान रूपरेखा (GEGAF) में एक गुणवत्ता शिक्षा व्यवस्था की अवधारणा एक ऐसी गुणवत्ता शिक्षा के रूप में की गई है जो समानता एवं दक्षता के साथ प्रदाय की जाती है। अतः जिस प्रकार संसाधनों का नियतन किया जाता है, प्रबंधन किया जाता है एवं शिक्षा व्यवस्था के विभिन्न स्तरों पर उपयोग किया जाता है यह एक गुणवत्ता शिक्षा व्यवस्था का एक महत्वपूर्ण आयाम एवं निर्धारक है। स्त्रोतो की दक्षता में सुधार सार्थक स्त्रोत जो कि शिक्षा गुणवत्ता के लिए उपयोग में लाए जा सकते हैं, को युक्त कर सकता है। कई प्रकरणों में यह प्रमाण प्राप्त हुए हैं कि अधिगम परिणामों एवं शिक्षा गुणवत्ता के संदर्भों में ज्यादा स्त्रोत का अर्थ बेहतर परिणाम नहीं रहा है। (तकनीकी टिप्पणी XIII.1) शिक्षा वर्ग को चाहिए कि वर्ग के लिए बढ़ी हुई संख्या में स्त्रोतो को न्यायोचित ठहराने के पहले, अनेक प्रकार की अक्षमताओं/अदक्षताओं की संख्या को कम करते हुए आंतरिक रूप से स्त्रोतों की बचत करें। वे सभी (पालक, अधिगमकर्ता एवं समाज वृहत रूप में) जो शिक्षा में निवेश करते हैं, तर्कसंगत रूप से यह पूछते हैं कि क्या वे अपने निवेश से अधिकारिक संभव मूल्य प्राप्त करते हैं। यहां कोई अन्तर नहीं है कि एक उद्यमी यह पूछो कि कय वह निवेशिता पूंजी पर उच्चतम लाभ प्राप्त कर रहा है या नहीं। सरकारें गुणवत्ता एवं प्रतियोगी आवश्यकताओं का सामना करती है जिन्हें पूरा किया जाना ही चाहिए एवं इस प्रकार वित्त व्यवस्था के बनाए रखे गए या बढ़े हुए स्तर को न्यायोचित ठहराने योग्य बनने के लिए शिक्षा वर्ग को सार्वजनिक स्त्रोतो का दक्षता पूर्ण उपयोग करके दिखाना चाहिए। शिक्षावित्त व्यवस्था की

दीर्धकालीन धारणीयता, दृढ़ता से दक्षता के सतत सुधार पर निर्भर कर विकसित होती है। इस प्रकार से अधिगम प्रभावपूर्णता एवं शिक्षा गुणवत्ता के सुधार पर लक्ष्य किए गए किसी भी सुधार में सुधारी गई व्यवस्था दखता एक प्रमुख मुद्दा रहती है। अन्ततः किसी भी शिक्षा व्यवस्था की सम्पूर्ण दक्षता। अक्षमता उसकी आंतरिक एवं वाह्य दक्षता से तय की जाती है। आंतरिक दक्षता शिक्षा व्यवस्था के उत्पादन एवं परिणाम को मापती है जबकि बाह्य दक्षता उस सीमा का मापन कारती है जिसमें विद्यालय में प्राप्त किए गए कौशल निजि व सामाजिक लाभों में रूपान्तरित होते हैं। (अधिगम परिणामों पर विश्लेषणात्मक उप. से जोड़े) यह विश्लेशणात्मक उपकरण यूनेस्को के सामान्य शिक्षा गुणवत्ता निदान/ विश्लेषण रूपरेखा का हिस्सा है (GEGAF)। जैसे कि यह विश्लेषणात्मक उपकरण व्यवस्था दक्षता से व्यवहार करना है अतः यह गुणवत्ता रूपरेखा के बांकी सभी उपकरणों से जुड़ा हुआ है। क्योंकि दक्षता एवं प्रभावपूर्णता मुद्दे शिक्षा की गुणवत्ता को सुधारने के प्रयासों के सभी आयामों में बहुत ही महत्वपूर्ण है। इस विश्लेषणात्मक उपकरण का उद्देश्य (ज्यादा जानकारी हेतु पूर्ण स्वरूप देखें) यूनेस्को के सदस्य राज्यों को उनकी शिक्षा व्यवस्था में दक्षता/अक्षमता के निदान एवं विश्लेषण में सहायता करना है। यह उपकरण जिस महत्वपूर्ण प्रश्न को उठाता है वह है : हमारी शिक्षण व्यवस्था में स्त्रोतों की अदक्षता/अक्षमता शिक्षा की गुणवत्ता एवं समानता बढ़ाने में किस प्रकार एक गंभीर बाधा है? इस निदान एवं विश्लेषण को नीतियों एवं कार्ययोजनाओं के संदर्भ में व्यवस्था दक्षता को बढ़ाने हेतु एवं उपस्थित जांच व मूल्यांकन कार्ययोजना का सहायता करने से संबंधित कुछ मुख्य प्रश्न उठाने के द्वारा सरल बनाया गया है।

2. पहचान निदान एवं विश्लेषण

स्त्रोत दक्षता हेतु नीतियां एवं कार्य योजनाएं

1. हमारी शिक्षा नीतियां एवं कार्ययोजनाएं स्त्रोतों का दक्षतापूर्ण उपयोग किस प्रकार सुनिश्चित कर बढ़ाती है? हमारी स्त्रोत दक्षताओं क सूचक क्या है? किस सीमा तक हम स्त्रोत दक्षता लक्ष्यों को तय करते हैं एवं इनकी उपलब्धियों की जांच के लिए क्या कार्य योजनाएं हैं?

2. स्त्रोतो को पक्का करने के पहले, विभिन्न मापकों की मूल्य प्रभावशीलता को हम किस सीमा तक पक्का करके देखते है? विभिन्न उपवर्गो एवं कार्यक्रमों की स्त्रोत आवश्यकओं की प्रमुखता हम कैसे तय करते हैं?

3. हमारा स्त्रोत नियतन किस सीमा तक परिणायोन्मुखीहै बजाय कि आगत निवेश केन्द्रित होने के? इसके कारण क्या है? अधिगम परिणामों पर विभिन्न आगनों। निवेश (शिक्षक, शिक्षक सामग्री, प्रबंधन जांच, निर्देशन आदि) के अलग–अलग प्रभावों का ध्यान रखने के लिए हमारे स्त्रोत नियतन में हमने क्या समझौते किए है? यह सारी बातें घटित हो रही है इसका क्या कारण है?

4. अपने प्रबंध में आनेवाले स्त्रोतों के उपयोग में विभिन्न स्तरों पर कुशल/दक्ष बने रहने के लिए प्रबंधकों को क्या परिश्रमिक दिया जा रहा है? स्त्रोत नियतन कार्य निष्पादन से किस प्रकार जुड़ा है?

5. स्त्रोत दक्षता/अदक्षता अक्षमता को चालू करने वाले मुख्य कारक हमारे संदर्भ में क्या है? हम कैसे जानते हैं? यदि हम जानते है तो उनसे निपटने के लिए हमने क्या किया है? क्या यह मापन प्रभावकारी रहे हैं?

व्यवस्था दक्षता की जांच एवं मूल्यांकन

1. हमारी शिक्षा व्यवस्था में स्त्रोत दक्षता को जांचने एवं विश्लेषित करने हेतु किस सीमा तक हम मानवीय, संस्थागत् एवं तकनीकी क्षमता उपलब्ध कराने में योग्य हुए हैं ?

2. आन्तरिक दक्षता पर क्या EMIS गुणवत्ता एवं एकदम सही सूचना उपलब्ध कराती है ? (पुनरावृत्ति, शाल्य छोड़ने के प्रकरण पूर्णता एवं अवरोधन दरें) निरीक्षण की गई आन्तरिक अक्षमता में निहित कारणों को समझने हेतु आंकड़ों का क्या विश्लेषण हमने किया है ? स्थिति को सुधारने के क्या उपाय हमने किए है ? यह उपाय प्रभावकारी रहे हैं क्या इसके प्रमाण हमारे पास हैं ?

3. हमारी शिक्षा व्यवस्था की बाह्य दक्षता का स्तर क्या है ? (तकनीकी टिप्पणी XIV.2) शिक्षा पर मिलने वाले लाभों की निजि व सामाजिक पद पर कौन से क्या ताजेशोध उपलब्ध हैं ? स्नातक बेरोजगारी की सीमा क्या हम जानते हैं ? शिक्षा पर लाभ की दरों के प्रमाण हमारे देश की शिक्षा की बाह्य दक्षता के बारे में क्या बताते हैं ?

3. कार्य की प्राथमिकताएं

1. शिक्षा गुणवत्ता में सुधार हेतु दक्षता के प्रमुख लाभों को प्राप्त करने में वे कौन सी मुख्य बाधएं है जिन्हें हमें प्राथमिका से समापन करना है ?

2. व्यवस्था दक्षता को सुधारने हेतु प्रमाण आधारित नीति के लिए वे कौन से ज्ञान विदार हैं जिन्हें भरा जाना है ?

3. पहचाने गए ज्ञान विदारों एवं प्राथमिक बाधाओं का समाप्त करने के लिए कौन से अवाश्यक कदम उठाते हैं ?

XV. विश्लेषणात्मक उपकरण : शिक्षा में ICTs

(ICTs = सूचना एवं संचार तकनीकि)

1. भूमिका :–

पूरे विश्व में अधिगमकर्ताओं एवं शिक्षकों के हाथों में एक महत्वपूर्ण सशक्त उपकरण बनकर सूचना एवं संचार तकनीकि (ICTs) ने सूचना व ज्ञान की पैठ के लिए असीम संभावनाएं उत्पन्न कर दी हैं।

ICTs की कलात्मक स्थिति का उचित एवं प्रभावपूर्ण उपयोग, शिक्षा से संबंधित, व्यवहारिक रूप से अधिगम एवं शिक्षण गतिविधियों के सभी क्षेत्रों में अनगिनत लाभ दे सकता है जिसमें शिक्षकों, छात्रों एवं पालकों के बीच दक्षतापूर्ण सामाजिक वार्तालाप/व्यवहार के साथ साथ समग्ररूप से शिक्षा की गुणवत्ता पर एक सकारात्मक प्रभाव लिए हुए प्रशासकीय एवं प्रबंधन प्रक्रियाएं भी शामिल हैं।

विकसित ICTs के उपयोग के द्वारा अधिगम व शिक्षण दोनों ही गुणात्मकता के रूप में अब विशिष्ट एवं अलग है। जब छात्र नयी नयी प्रकार की सूचनाओं व ज्ञान के प्रति आपकी पहुंच रखते है तब शिक्षा प्रक्रिया विशिष्ट रूप से समृद्ध होती है एवं जब वे अपने प्रयोग पूर्णकर के सुसज्जित प्रयोगशालाओं को उस तरीके से उपयोग करते हैं जो पहले कीाी संभव नहीं हुआ साथ–साथ अपने अधिगम अनुभव, परिणाम व निष्कर्ष सामाजिक सूचना तंत्र (मीडिया) के द्वारा अपने सहपाठियों, शिक्षकों एवं साक्षात व्यवहारिक रूपसे पूरे विश्व में दूसरे छात्रों के साथ बंट सकते हों तब शिक्षा प्रक्रिया समृद्ध होती है। यह विश्लेषणात्मक उपकरण, शिक्षा तक सभी की पंहुच बढाने एवं सामान्य शिक्षा की गुणवत्ता एवं समानता को बढ़ाने के लिए ICTs की सामान्य शिक्षा में

शक्ति में निर्धारित करने एवं विश्लेषण में सहायता करने हेतु विकसित किया गया है। यह विश्लेषणात्मक उपकरण जिस सर्वाधिक महत्वपूर्ण प्रश्न को उठाता है वह है कि ICTs के संसाधनों के द्वारा सामान्य शिक्षा की गुणवत्ता, समानता एवं पहुंच/पैठ को बढ़ाने में क्या राष्ट्र के पास प्रासंगिक दृष्टिकोण एवं पर्याप्त कार्यान्वयन कार्य योजनाएं है।

2. पहचान निदान एवं विश्लेषणः–

शैक्षिक परिप्रेक्ष्य में ICTs की समझः–

1. शिक्षा में ICTs की हमारा दूरदृष्टि क्या है? यह दूरदृष्टि कैसे व्यक्त कर बांटी गई है? यह दूरदृष्टि राष्ट्रीय विकास योजना से कैसे सह संबंधित है? क्या शिक्षा की दूरदृष्टि में हमारी राष्ट्रीय शैक्षिक कार्ययोजनाएं ICTs को दर्शाती हैं?

2. सामान्य शिक्षा कोई गुणवत्ता सुधार एवं विकास में ICTs के प्रभाव कैसे पड़ता है? ICTs के साधनों द्वारा शिक्षा में ICT की दूरदृष्टि समाज –आर्थिक एवं भौगोलिक राजनीतिक कारकों को शिक्षा तक पहुच के रूप में कैसे देखती है?

3. एकीकृत ICT आधारित सूचना शिक्षण परिवेश के उपलब्धता, शिक्षा ढाचे की विविधता तथा पाठ्यचर्या विकास हेतु प्रक्रिया एवं शिक्षा स्टाफ, शिक्षकों एवं अधिगम कर्ताओं के ICT कौशलों देश में सभी ICT आधार संरचनाओं के विकास के स्तर का उत्तरदायित्व किस प्रकार लेती है?

शिक्षा में ICT पर नीति विकास एवं क्रियान्वयन कार्ययोजनाएः–

1. सामान्य शिक्षा में ICTs की वर्तमान नीतियॉ कार्ययोजना एवं कार्यक्रम क्या है? (तकनीकि टिप्पणी 1) इस प्रभाव का क्षेत्र क्या है? उपकरणों

की खरीद, पाठ्यचर्या में ICT का सम्मिश्रण, ICT शिक्षक प्रशिक्षण, मुख्य शिक्षा स्त्रोत (OER) तथा/या मुख्य पाठ्यक्रम (OCW) विकास आदि ? (तकनीकि टिप्पणी 2)

2. क्या राष्ट्र शिक्षक व्यवसायिक विकास में शिक्षको के ICT कौशल एवं कौशल आधरित राष्ट्रीय व्यवस्थाओं पर राष्ट्रीय मानकों की कुछ प्रकार है ? (यदि है तो कृपया उचित उदाहरण दीजिए)

3. सामान्य शिक्षा में विभिन्न स्तरों पर अधिगम कर्ताओं के लिए ICT कुशलता/कौशल के निर्धाण हेतु अधिगमकर्ता के ICT कौशल या कौशल आधारित राष्ट्रीय व्यवस्था के कुछ मानक हैं ? (यदि है तो कृपया उचित उदाहरण दीजिए) यह प्रभावकारी है इसके क्या प्रमाण है ? हम इन परिणामों को सही तरीके से कैसे जांचते हैं ?

4. क्या सामान्य शिक्षा में किसी प्रकार के मानक अधिगम परिवेश, अधिगम प्रबंधन व्यवस्था (LMS) अधिगम विषयवस्तु प्रबंधन व्यवस्था (LCMS) एवं विषयवस्तु निर्माण उपकरण के कार्यन्वयन पर राष्ट्र कोई निर्देश या सलाह प्राप्त करता है ?

5. शिक्षा योजनाओं एवं कार्ययोजनाओं में ICT को डालने में क्या बाधाएं है ? ऐसे नये कार्यों के प्रभावपूर्ण क्रियान्वयन को कौन–कौन सी चुनौतियाँ प्रभावित करती है ? (स्पष्टता की अनुपस्थिती, क्रियान्वयन कार्ययोजना का अभाव, एवं जांच प्रक्रिया आदि ?)

शिक्षा में ICT की पैठ एवं उपयोगः–

1. रष्ट्र में OER, OCW सुसज्जित प्रयोगशालाएँ डिजिटाइज्ड पाठ्य/विषयवस्तु सामग्री का संग्रह आदि को मिलाकर राष्ट्रीय एवं वैश्विक सूचना शिक्षा स्त्रोंतो तक पहुंच की क्या सीमा हैं ? (यदि है तो कृपया उचित उदाहरण

दीजिए) क्या शिक्षक एवं शाला प्रशासक (यदि यह अस्तित्व में है तो) अभ्यास के समुदाय से जुड़े हैं? क्या सामाजिक शिक्षा में सामाजिक सूचना तंत्र (मीडिया) शिक्षण/अधिगम प्रक्रियाओं में उपयोग होते हैं ? महत्वपूर्ण शैक्षिक परिणामों (यदि सही हो) एवं राष्ट्रीय व्यवस्था निर्धारण की सामान्य शिक्षा की रूपरेखा में उपयोग होने वाले क्या किसी प्रकार के ICT आधारित कार्य निष्पादन, निर्धारण/ मूल्यांकन, उपकरण तकनीकें हैं? क्या राष्ट्र में ग्रामीण व शहरी संस्थाओं में कम्प्यूटर उपकरणों एवं संचार पर आंकड़ों व सूचकों को मिलाकर कोई शिक्षा व ICT सांख्यिकी की व्यवस्था है ? राष्ट्र के विभिन्न शैक्षिक संस्थानों में (Internet) अन्तर्जाल की सुविधा का प्रसार क्या है? राष्ट्रीय सांख्यिकी UN संस्थाओं द्वारा विकसित किए गए ICT के क्रियान्वयन के अन्तर्राष्ट्रीय रूप में स्वीकार किए गए सूचकों व महत्वपूर्ण क्षेत्रों पर आधारित है ?

3. क्या सामान्य शिक्षा पाठ्यचर्या में ICT एवं सूचना साक्षरता प्रशिक्षण सम्मिश्रित है ? ज्यादा प्रभावकारी ICT क्रियान्वयन के लिए क्या नये सुधार एवं पाठ्यचर्या संरचना को उपयोग में लाना चाहिए ?

4. हमारे राष्ट्र में शिक्षकों के मध्य ICT कौशल एवं ICT साक्षरता के स्तर से संबंधित क्या आँकड़े उपलब्ध हैं? शिक्षक (तथा अधिगमकर्ता) ICT को किस प्रकार उपयोग करते हैं ? :– (a) छात्रों हेतु अधिगम प्रक्रिया की सहायता हेतु (b) पाठ तैयार करने हेतु, (c) स्वयं के कौशल विकसित करने हेतु आदि ? उनके ICT कौशल कैसे निर्मित हुए थे ? क्या शिक्षा शास्त्रीय संस्थाओं में शिक्षकों के ICT कौशलों बढ़ाने का लक्ष्य रखने वाले शैक्षिक कार्यक्रमों को रखा गया है ? शिक्षा में ICT का उपयोग करने हेतु शिक्षकों (एवं अधिगमकर्ताओं) जागरूकता व कौशलों को बढ़ाने के लिए क्या हमारे राष्ट्र में नियमित कार्यशालाएँ और प्राशिक्षण होते हैं? क्या राष्ट्र में सामान्य शिक्षा शिक्षकों के अन्तर्जाल (web) आधारित

व्यावसायिक जाल, साथ ही साथ, अधिगमकर्ताओं के विशेष सामाजिक जाल का अस्तित्व है ?

5. सामान्य शिक्षा व्यवस्था पर, शिक्षा में ICT के वर्तमान हस्तक्षेपों का सबसे सहस प्रभाव क्या है ? इस प्रभाव की प्रकृति क्या है एवं इस प्रभाव के प्रमाण कहाँ हैं ? क्या राष्ट्र में ICT आधारित अधिगम प्रक्रिया की ओर वैयक्तिक सामान्य पहुंच के कोई प्रकार हैं ? सामान्य शिक्षा में ICT उपयोग की प्रभावशीलता को विश्लेषित करने के लिए क्या कार्ययोजनाएं हैं ? शिक्षा में ICT सम्मिश्रण की प्रभावपूर्णता का मूल्यांकन कौन करता है ? इसमें रत् भागीदार कौन हैं ? हमारी शिक्षा में ICT उपयोग के मूल्यांकन में अन्तर्राष्ट्रीय रूप से स्वीकृत सूचकों एवं महत्वपूर्ण पक्षों को किस प्रकार उपयोग में लाया जाता है ? एक बार पहचानने के पश्चात् क्य निदानात्मक कार्य हम अपनाते है ? इस प्रभाव के प्रमाण कहाँ हैं ?

6. सारे उपरोक्त प्रश्नों के विश्लेषण पर आधारित शिक्षा में ICT के प्रभावपूर्ण सम्मिश्रण को रोकने वाली मुख्य बाधाएं एवं चुनौतियाँ क्या हैं ? हम ICT उपयोग वाले शिक्षण व अधिगम के राज्य में होने वाले कार्यक्रमों को नियमित रूप से जांच कर उनकी प्रभावशीलता का निर्धारण करते हैं क्या इसका प्रमाण है ? क्या इस जांच व निर्धारण के परिणाम हमारी वित्त व्यवस्था योजना को सुधारते हैं ?

7. ICT संबंधित शिक्षण व अधिगम के संबंध में राष्ट्रीय शिक्षा कार्ययोजना को प्राप्त करने हेतु वित्त आवश्यकताओं को परिभाषित करने के लिए क्या कार्ययोजना तय की गई थी ? बजट क्रियान्वयन के प्रभावपूर्ण मानदण्ड क्या है ? दिये गए बजट एवं वित्त योजना दस्तावेजों में शिक्षा के कौन से क्षेत्र समाहित है ?

8. क्या मेरे राष्ट्र के कोष वर्तमान अन्तर्राष्ट्रीय ICT आधारित शिक्षा कार्यक्रमों एवं स्त्रोतो को हमारी क्षेत्रिय (राष्ट्रीय) भाषाओं के लिए शिक्षकों व अधिगमकर्ताओं के लिए स्वयं या स्थानीय मौजूद कार्यक्रमों व स्त्रोतो द्वारा उपयोग में लाए जाते हैं ?

3. कार्य प्राथमिकाताएं

1. सामान्य शिक्षा में ICT सम्मिश्रण के हमारे लक्ष्यों को प्राप्त करने हेतु क्या विशिष्ट शक्ति हमें चाहिए ? प्रभावपूर्ण सम्मिश्रण में बाधक समस्या क्षेत्र कौन से हैं ?

2. शिक्षा में ICT सम्मिश्रण के क्रियान्वयन को और सुधारने वाले कौन से परिवर्तन हमें सोचने हैं ?

3. सभी के लिए गुणवत्ता शिक्षा की उपलब्धता के लक्ष्य को प्राप्त करने हेतु हमारे विद्यालयों में ICT उपयोग को सुधारने हेतु एक प्रमाण आधारित नीति व कार्ययोजना में भरे जाने वाले विदार कौन से हैं ?

4. सभी के लिए समानता एवं गुणवत्ता पूर्ण सामान्य शिक्षा के स्तर को सुधारने हेतु सामान्य शिक्षा में ICT की शक्ति को क्रियान्वयन करने में मौजूदा चुनौतियों पर काबू पाने के लिए हमारे राष्ट्र हेतु प्राथमिक कदम, आपके अनुसार, कौन से होने चाहिए ?

तकनीकि टिप्पणी 1

शिक्षा में ICT नीति, शिक्षा में उपयोग होने वाली ICT उपयोग की प्रक्रिया को नियंत्रित करने वाले नियमों एवं कानूनों को बताती है। सामान्य रूप से यह नीति मुख्य क्षेत्रों को समाहित करती हैः– शिक्षा में IT आधार संरचना, (हाई–साफ्ट वेयर, वैश्विक संचार एवं अर्न्तजाल), पाट्यचर्या में ICT का

सम्मिश्रण (विधियां, अधिगम स्वरूप, ई–स्त्रोत), शिक्षा प्रशासकों व शिक्षण स्टॉफ के ICT कौशल। नीतिगत् व योजना मुद्दे at UNESCO Sector of Education पर उपलब्ध है।

http://www.unesco.org/new/en/education/themes/planning-and-managing-education/policy-and-planning/

तकनीकि टिप्पणी –2

मुख्य शैक्षिक स्त्रोत : ''शिक्षण, अधिगम, विकास एवं शोध पर अनुकूलन एवं उपयोग के लिए स्वत्रंत्र एवं मुक्त रूप से सामग्री प्रस्तावित है। जबकि OER डिजिटल स्वरूप में ही मख्यतः बांटे जा सकते है। (Online and Offline) स्वरूपों में जैसे DVD या CDROM , OER केवल Onlinr स्त्रोतो अधिगम ऑनलाईन, अधिगम ई अधिनियम एंव विकास सन्दर्भों के मध्य पर्याप्त नहीं हे। Open Course Web शब्दावली सार्वाधिक रूपसे उपलब्ध सामग्री जो विश्वविद्यालय यया महाविद्यालय जैसे शैक्षिक संस्थानों से एक पूर्ण कोर्स/ पाठ्यक्रम य उसका एक हिस्सा है के लिए उपयोग होती है।

(http://www.col.org/esoursces/crs materials/pages/ocw-oer.aspx)

पुनर्उद्देश्य एवं अनुकूलन में सहायक दो अन्य ओ.ई.आर की प्रसिद्ध परिभाषाएं हैः–"Open Educational Resources वह शिक्षण, अधिगम व शोध सामग्रीयाँ हैं जो सार्वजनिक है या एक बौधिक संपदा अनुमति के साथ व्यक्त होती है एवं स्वतंत्र उपयोग, अनुकूलन एवं बंटवारे में सहायक होती है। "(http://www.sourceoced.org/education/9789264031746) एवं OER शिक्षण, अधिगम व शोध स्त्रोत है जो सार्वजनिक रहते हैं एवं बौधिक संपदा अनुमति जो कि उनके स्वत्रंत उपयोग व दूसरों द्वारा पुनर्उद्देशीय होने में सहायक हो, के अर्न्तगत प्रसारित किए जाते हैं। Open Education Resources के अन्तर्गत पूर्ण पाठ्यक्रम, पाठ्यक्रम सामग्री,

मॉड्यूल्स, पाठ्यपुस्तके उपयोगी दृश्य सामग्री, परीक्षण, सॉफ्टवेय, एवं ज्ञान तक पैठ वाली अन्य उपकरण, सामग्री व तकनीकि आते हैं।

(http://www.oerderves.org/wp-content/uploads/2007/03/a-review-of-the-open-educational-resources-oer-movement final.pdf)

भूमिका

पृष्ठभूमिः– सभी के लिए शिक्ष एजेंडा नकारी ना जा सकते वाली सफलाओं में से एक है औपचारिक प्राथमिक शिक्षा तक पहुंच की शुरूआत (आंकड़े 1 से जोड़े) केवल पिछले दशक में (1999–2008)52 मिलियन ज्यादा बच्चे औपचारिक सामान्य शिक्षा में नामांकित हुए। 39 मिलियन की संख्या के साथ–स्कूल छोड़ने वाले छात्रों की संख्या में कमी आई इस कमी का 80प्रतिशत दक्षिण एवं पश्चिम एशिया, साथ ही साथ उप–सहारा अफ्रीका में देखने को मिला। उत्तरीय अमरीका, पश्चिमी यूरोप, पूर्वी ऐशिया एवं पैसिफिक एवं लैटिन अमरीका भी EFA व MDG में महत्वपूर्ण लक्ष्यों तक 2015 तक पहुंच सकते हैं।

भूमिका

प्रष्ठभूमि :–

(EFA) सभी के लिए शिक्षा एजेंडा की एक नकारी ना जा सकने वाली सफलता, औपचारिक प्राथमिक शिक्षा सभी के प्रति उपलब्धता है। (आंकडे 1 से जोड़ें) 1999 – 2008 के पिछले दशक में औपचारिक प्राथमिक शिक्षा में 52 मिलियन ज्यांदा बच्चे सम्मिलित हुए हैं। दक्षिण पश्चिम एशिया के साथ – साथ सव सहारा अफ्रीका में 80 प्रतिशत तक आई कमी के साथ – साथ स्कूल शिक्षा को छोड़ने वाले बच्चों की संख्या 39 मिलियन होकर कम हो गई है। उत्तरी अमरीका, पश्चिमी यूरोप, पूर्वी एशिया एवं पैसिफिक एवं लेटिन अमरीका 2015 के सांख्यिकी EFA एवं MDG लक्ष्यों तक पहुँचने वाले है। केन्द्रीय एशिया एवं केन्द्रीय व पूर्वी यूरोप भी, 2008 तक 94 प्रतिशत प्राथमिक नामांकन दर के साथ अपने लक्ष्य के निकट पहुँच चुके हैं। द्वितीयक/ माध्यमिक शिक्षा में कुछ सामान्य परिवर्तन हुए हैं। 525 मिलियन, लगभग 60 प्रतिशत उचित आयु वर्ग वाले बच्चे कुछ यद्यपि विस्तृत क्षेत्रीय व राष्ट्रीय स्तर के अन्तरों के साथ 2008 तक नामांकित हुए थे। (आंकड़े 2 से जोड़ें) यह सन् 1991 से 91 मिलियन की बढ़त थी। राष्ट्रों की एक महत्वपूर्ण संख्या प्राथमिक एवं द्वितीयक/माध्यमिक दोनो ही स्तरों पर लिंग अनुपात में समानता के नजदीक हैं। इन सबके बावजूद 2015 के सांख्यिक लक्ष्य अभी एक चुनौती है। मुख्यतः निम्न आय वाले राष्ट्रों में। उचित आयु वर्ग के 67 मिलियन से ज्यादा बच्चे अभी भी प्राथमिक विद्यालयों में नामांकित नहीं हैं, 74 मिलियन से ज्यांदा किशोर विद्यालयों से बाहर हैं एवं लगभग 793 मिलियन वयस्कों एवं 127 मिलियन युवाओं को अभी भी मूलभूत साक्षरता कौशलों की कमी है। (आंकड़े 3 से जोड़ें)

निश्चित प्रमाणों से (तकनीकी टिप्पणी 1) एक ज्यांदा बड़ी चुनौती है कि जब बहुत सारे देशों ने सफलता पूर्वक मिलियनों अधिगमकर्ताओं को विद्यालयों में नामांकित कर दिया गया है उनकी एक बड़ी हहुलता वास्तविक रूप से प्रभावशाली अधिगम प्राप्त नहीं कर पा रही है अर्थात् अपने शैक्षिक उपलब्धियों के लक्ष्यों की दिशा में आरम्भ होने वाले स्तरों पर तो नहीं हों। यह व्यवस्था की असफता में दर्शाया गया है जिससे

अधिगमकर्ता, शिक्षा के उचित स्तरों पर प्रशिक्षित किये जाने योग्य, शिक्षा दिये जाने योग्य, अपने स्वयं के द्वारा जीवन पर्यन्त अधिगम के अवसर लेने पर, श्रम बाजार एवं श्रम की दुनिया हेतु पर्याप्त रूप से तैयार किए जा सकें। मुख्यता, वर्तमान विश्लेषणात्मक विधियों एवं उपकरणों, सामान्य शिक्षा व्यवस्था में उचित कुशलता, वृत्तियों, सौन्दर्य, जीवन दृष्टिकोंण एवं मूल मूल्यों – शांति, बहुभाषिकता, विविधता एवं सह जीवन जीने की कला के लिए सम्मान के स्पष्ट प्रमाण अपर्याप्त हीं हैं। (तकनीकी टिप्पणी 2)

प्रमाण आगे बताते हैं कि खराब गुणवत्ता शिक्षा, निम्न अधिगम प्रभाव एवं निम्न अधिगम परिणाम निम्न आय राष्ट्रों में ज्यांदा हैं एवं वैश्विक रूप से, गरीब घरों से एवं दूसरे साधनहीन समूहों से ज्यादा हैं। (तकनीकी टिप्पणी 3)

शिक्षा के आधारभूत स्तर पर खरा गुणवत्ता एवं अप्रभावशाली की चुनौतियाँ बहुत ही घातक होती हैं मुख्यतः उस स्थिति में जब अधिगमकर्ताओं की बहुतता सहभागिता का उच्चतम स्तर दर्शाती हो। आधारभूत शिक्षा की खराब गुणवत्ता ना सिर्फ आधारभूत स्तर के पश्चात् की स्थितियों में खराब गुणवत्ता लाती है अपितु साधनहीन वर्गों को अलग–अलग कर शिक्षा के सामाजिक समानता के उद्देश्य को समाप्त कर देती है। इस वास्तविकता की कड़वी सच्चाई, उच्च शिक्षा व्यवस्था एवं आधारभूत शिक्षा के पश्चात के स्तरों में साधनहीन समूहों से आने वाले अधिगमकर्ताओं के कुल रूप से कम संख्या में होने एवं साथ ही साथ अधिक आय वाली नौकरियों व अच्छे आय वाले कार्य अवसरों में भी ना होने से पता चलती है। विकसित एवं विकासशील दोनो ही देशों में शिक्षा, गुणवत्ता अधिगम अनुभवों एवं अधिगम परिणामों में असमानता, शिक्षा हेतु पहुँच से ज्यादा बड़ी चुनौती बनी हुई हैं। (तकनीकी टिप्पणी 4)

सामान्य शिक्षा गुणवत्ता/निदान रूपरेखा GEGAF

मूलाधार

यदि शिक्षा एवं अधिगम उच्च गुणवत्ता का, प्रभावशाली एवं प्रासंगिक नहीं हो तब विकास हेतु शिक्षा के सभी पूर्ण रूप से देखे गए शिक्षा के लाभ – गरीबी की

विस्तृत स्थिति से छुटकारा, व्यक्तिगत रूप से वृद्धि, आर्थिक वृद्धि, महामारी व बीमारियों की रोकथाम, उन्नत स्वास्थ्य, सहभागितापूर्ण लोकतंत्र, पर्यावरण का उचित दोहन, समानता व समावेश के विविध स्वरूप, शांति, वैश्विक नागरिकता, सामाजिक सौहार्द, राजनीतिक स्थिरता, आदि को प्राप्त करना आसान नहीं होगा। सामान्य शिक्षा, गुणवत्ता, प्रभावपूर्ण एवं प्रासंगिक शिक्षा व जीवन पर्यन्त अधिगम की आधार शिला रखती है। इस प्रकार गुणवत्ता प्रभावपूर्ण व प्रासंगिक सामान्य शिक्षा एवं इस स्तर पर प्रभावपूर्ण अधिगम में समानता में असफता, शिक्षा व अधिगम के विकास पूर्ण प्रभाव को प्राप्त करने में असफलता है। खराब शिक्षा गुणवत्ता इस प्रकार समावेशी व लम्बे समय तक चलने वाले विकास जो व्यक्तिगम, राष्ट्रीय व वैश्विक स्तर पर होता है, सारे MDGS एवं 6 EFA लक्ष्यों की प्राप्ति, जिनमें से प्रत्येक में शिक्षा गुणवत्ता एवं मुख्य स्थिति है एवं सीधे – सीधे 2,5 व 6 लक्ष्यों को प्रभावित करती है – इन सभी की राय में रूकावट बनती है।

विकासशील व विकसित दोनों ही राष्ट्र गुणवत्ता संकट एवं इसके विकास के लिए प्रभाव से पूर्ण रूप से जागरूक हैं। उनके अधिकांश शिक्षा सुधार कार्यक्रमों में शिक्षा सुधार एवं समानता में सुधार मुख्य कार्य योजना के लक्ष्यों में शामिल है। वैश्विक EFA एजेंडा में भी गुणवत्ता को एक सर्वाधिक ध्यान देने वाले बिंदु के रूप में पहचाना गया है। फिर भी चुनौतियाँ बाकी हैं एवं EFA गुणवत्ता लक्ष्य अपने स्तरों पर नहीं चल रहे हैं। UNESCO के सदस्य राज्य इस प्रकार सचिवालय को उनके शिक्षा गुणवत्ता एवं प्रभावपूर्ण अधिगम की वैश्विस चुनौती का सामना करने हेतु प्रयासों में, तकनीकी सहयोग दुगुना करने की विशेष आवश्यकता रखते हैं।

साथ ही साथ व्यवस्था विश्लेषण व गंभीर बाधाओं की पहचान हेतु उपकरणों की कमी सी सदस्य राज्यों को अपने निर्धारित किए गए अधिगम परिणामों एवं शिक्षा गुणवत्ता में समानता के अपेक्षित व सतत् चलने वाले स्तरों को प्राप्त करने से रोकती हैं। इस हेतु अपने कुछ सदस्य राज्यों के सहयोग से UNESCO सचिवालय ने सामान्य शिक्षा गुणवत्ता/निदान रूपरेखा, (GEGAF) का विकास किया है जिसका उद्देश्य सदस्य राज्यों को उनके सभी अधिगमकर्ताओं को उनकी सामान्य शिक्षा व्यवस्था में समानता के

साथ प्रभावपूर्ण अधिगम अनुभवों व उच्च गुणवत्ता शिक्षा देने की सतत्ता में बाधक गम्भीर रूकावटों का पहचान कर उनका निदान करने में सक्षम बनाना है। उच्च शिक्षा व तकनीकी व व्यावसायिक शिक्षा का प्रशिक्षण के संबंध में सामान्य शिक्षा (K to 12) में मुख्यतः उपकरणों का अभाव देखा गया है। स्पष्ट तुलनात्मकता एवं अत्यधिक सीमित क्षेत्र वाली राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय परिक्षाओं से परे, अधिकांश राष्ट्रों में सामान्य शिक्षा में एक दृढ़ व्यवस्था अनुरूप निदान/विश्लेषण एवं गुणवत्ता को सुधारने व सुनिश्चित करने की परंपरा नहीं है।

कमजोर विश्लेषण, उत्तरदायित्व पूर्ण गुणवत्ता सुधार हस्तक्षेपों के क्रियान्वयन को निर्देशित करने व इसका स्वरूप निर्धारण करने में आवश्यक ज्ञान आधारों में गंभीर विदारों (gaps)के रूप में बदल जाता है।

GEGAF के निदान/विश्लेषण, सदस्य राज्यों को उनके दोनों ही संख्यात्मक एवं गुणात्मक ज्ञान आधार को दृढ़ता प्रदान करने में मदद करता है। जिससे कि उत्तरदायित्व पूर्ण, लक्ष्य किये गये एवं समय पर पूर्ण होने वाले सामान्य शिक्षा गुणवत्ता सुधार हस्तक्षेपों को प्रभावपूर्ण रूप से स्वरूप देकर निर्देशित किया जा सके। परिणाम स्वरूप निदान/विश्लेषण से प्राप्त प्रमाण सामान्य शिक्षा व्यवस्था गुणवत्ता हेतु राष्ट्र एवं उपराष्ट्र स्तरों पर संख्यात्मक एवं गुणात्मक सूचकों को उत्पन्न किया जा सके। इन सूचको को, सामान्य शिक्षा व्यवस्था की गुणवत्ता पर एक राष्ट्रीय व उप राष्ट्रीय आधार रेखा महत्वपूर्ण बिन्दुओं जिन पर राष्ट्र को कार्य कर विकास की जांच करना चाहिए, को स्थापित करने में उपयोग किया जा सकता है।

सदस्य राज्यों की सामान्य शिक्षा व्यवस्था की गुणवत्ता के साथ – साथ, इस गुणवत्ता को सुधारनके की प्रगति की सतत् जांच के विश्लेषण को संस्थागत् बनाने व नियमित करने में, इन राज्यों को सक्षम बनाना GEGAF का उद्देश्य है। यह राष्ट्रों में एक दूसरे के प्रति तुलना हेतु नहीं है। अपितु यह एक राष्ट्र की प्रगति की जांच को सतत् रूप से जारी रखने का उददे्श्य रखता है। अपने अपने राष्ट्र की पुनर्दृष्टि के परिणामों से उभरे हुए, सभी में सामान्य सूचकों के समूह को कुछ राष्ट्र विकसित करने की इच्छा रखते हैं, इस प्रकार के क्षेत्रीय

सूचक एवं प्रगति की संयुक्त जांच को UNESCO द्वारा सहायता प्रदान की जा सकती है।

रूपरेखा की प्रकृति

GEGAF का सर्वप्रमुख पक्ष यह है कि समानता प्रदस्त अच्छी गुणवत्ता शिक्षा व प्रभावपूर्ण अधिगम अनुभवों को बहुत ही दृढ़ एवं सुव्यवस्थित कार्य करने वाली शिक्षा व्यवस्था की आवश्यकता होती है। एक विश्लेषणात्मक उपकरण के रूप में इस रूपरेखा का उद्देश्य सदस्य राज्यों को यह बताता नहीं है कि उनकी सामान्य शिक्षा व्यवस्था में क्या गलत है एवं इसे कैसे सही करना है। अपितु इसका उद्देश्य है कि सदस्य राज्यों की व्यवस्था के बारे में कुछ आवश्यक प्रश्न उठाकर, यह निर्धारित करे कि राज्यों द्वारा स्वयं के लिए तय की गई गुणवत्ता प्राथमिकताएँ यह व्यवस्था पूरी करने में सक्षम है ? यदि सक्षम नहीं हैं तो क्यों नहीं हैं ? इन प्रयासों के द्वारा सदस्य राज्यों की सहायता करना। यह रूपरेखा सदस्य राज्यों को यह निर्णय करने में भी मदद करती है कि क्या उनकी शिक्षा व्यवस्थाओं में उनके द्वारा स्वयं को जांचे जाने के पर्याप्त तरीके उपलब्ध हैं या नहीं ?

यह रूपरेखा सामान्य शिक्षा व्यवस्थाओं के राष्ट्रीय ज्ञान को एक आरम्भिक बिंदुमान कर अन्तर्राष्ट्रीय ज्ञान को इसमें लाकर स्थानीय ज्ञान को समृद्ध करती है। अपनी सामान्य शिक्षा व्यवस्थाओं के विषय में, स्वयं के द्वारा कुछ प्रश्न उठाकर

From page No. 96

इनका उत्तर देने में सदस्य राज्यों की सरलता देने के द्वारा यह रूपरेखा स्थानीय ज्ञान को पहचानकर इसका सम्मान करती है। यह रूपरेखा मानकर चलती है कि राष्ट्र के अंदर ही, उत्तरदायित्व पूर्ण दस्तावेजों को निर्मित व क्रियान्वित करने एवं चुतौतियों को पहचानने के लिए पर्याप्त दक्षता व अनुभव उपस्थित है। इसी के साथ–साथ यह रूपरेखा वैश्विक ज्ञान के अर्थपूर्ण योगदान को मानती है परंतु यह केवल इसी स्थिति में है जबकि यह वैश्विक योगदान ''स्थानीय जड़ों में समाहित होकर बस जाए''। इस प्रकार का जुड़ाव केवल तभी उत्पन्न हो सकता है जब यह राष्ट्रीय संदर्भ में पूर्ण रूप से अनुकूलन प्राप्त कर ले।

अपनी राजनीतिक, आर्थिक स्थिति की गहरी समझ के साथ–साथ सामान्य शिक्षा व्यवस्था में राष्ट्रीय व उपराष्ट्रीय विकास संदर्भ की समझ के साथ यह स्थानीय जड़ों में समाहित होने की प्रक्रिया विकसित होती है। एक शिक्षा व्यवस्था के अपेक्षित विकास प्रभाव या विकास की प्रासंगिकता/उत्तरदायित्व के विकास की समझ ही इस प्रकार एवं आरम्भिक बिन्दु है :– ''एक गुणवत्ता शिक्षा व्यवस्था को कौन – कौन से तत्व निर्मित करते हैं?'' इस प्रश्न का उत्तर देने दें।

एंव ''स्थानीय जड़ों में समाहित हो बसने'' को पहचानने या संदर्भित विकास प्रासंगिकता को पहचानने का अर्थ है कि, यह पहचान लेना कि गुणवत्ता शिक्षा आवश्यक रूप से संदर्भ संबंधित है। इस संदर्भ में भौगोलिक, समय व ग्राह्य पक्ष/आयाम होते हैं। राष्ट्रों के अनुसार व समयानुसार स्थितियाँ बदलनी है। शिक्षा व्यवस्था के सहभागीदारों की उपेक्षाएँ भी अलग–अलग हो सकती हैं। इस संदर्भित प्रकृति को स्वीकार कर लेना ''तकनीकी सहायता उपलब्ध कराने वालों की सदस्यता/विनम्रता को बढ़ावा देना है कि संदर्भ अपनी गुणवत्ता को

परिभाषित कर सकें एवं एक बार परिभाषित होने पर इस संदर्भित गुणवत्ता तक पहुँचने व इसे बनाए रखने के लिए आवश्यक प्रयासों को सहायता दें। इसी के साथ गुणवत्ता की संदर्भित प्रवृत्ति को स्वीकारना ना सिर्फ त्वरित/वर्तमान संदर्भों की पहचान करना है बल्कि राष्ट्र, क्षेत्रीय व वैश्विक संदर्भों को भी साथ लेता है। इस प्रकार क्षेत्रीय व वैश्विक स्तर संदर्भ के महत्वपूर्ण बिन्दुओं के रूप में कार्य करते हैं। ''

शिक्षा के प्रति एक व्यवस्थागत एवं समझने योग्य पहुँच के साथ यह रूपरेखा इस वास्तविकता को पहचानती है कि गुणवत्ता शिक्षा प्रदाय में उत्तरदायित्व एवं प्रभावपूर्ण अधिगम को सुगम बनाना सामान्य शिक्षा व्यवस्था के सभी पदों व स्तरों पर निर्भर है। सामान्य शिक्षा गुणवत्ता की उपव्यवस्थाओं में समानता ना होना, अक्सर सम्भवतः अलग थलग व कई बार विरोधी नीतियों, कार्ययोजनाओं व कार्यक्रमों में परिणित हो जाता है। यह कई बार सामान्य शिक्षा गुणवत्ता की और व्यवस्थाओं में असमान व असंतुलित सुधारों के रूप में भी सामने आता है। उदाहरण के लिए पाठ्यचर्या में सुधार, सदैव ही किताबों व प्रशिक्षण सामग्रियों, शिक्षकों, शिक्षण पुस्तिकाओं व निर्धारण विधियों जिनका प्रभाव उत्पादन में आवश्यकता है। उसका उल्लेख नहीं लेते हैं। छात्र पाठ्यचर्याओं में परिवर्तन, सदैव, शिक्षण व अधिगम परिवेशों जिनके अंतर्गत ऐसी पाठ्यचर्या प्रदत्त की जाती है। या शिक्षक जो ऐसी पाठ्यचर्या को क्रियांवित करते हैं का उल्लेख नहीं करते हैं। इसी क्रम में भौतिक शिक्षण व अधिगम परिवेश विभिन्न विधियों पाठ्यचर्याओं या ऐसे परिवेशों में कार्य करने वाले शिक्षको व अधिगम कर्ताओं की आवश्यकताओं का उल्लेख नहीं करते हैं। एवं इन आवश्यकताओं को पूर्ण नहीं करते हैं। अक्सर जिसे व्यवस्था कहा जाता है वह 'व्यवस्था' के रूप में उत्तीर्ण नहीं होता है। एवं थोड़े अंतर के रूप में सामान्य शिक्षा के तत्वों उपव्यवस्थाओं के रूप में आता है।

'व्यवस्था पहँच' से प्रतिबद्धता सुनिश्चित करने हेतु यह रूपरेखा अपने विश्लेषण/निदान में समझ रखती है परंतु यह उन हस्तक्षेपों के द्वारा लक्ष्य में पश्लिक्षित होती है जो निदान/विश्लेषणों के पश्चात् आते हैं। आलंकारिक रूप से यह एक गुणवत्ता शिक्षा व्यवस्था के निमार्णकर्ता को व्यवस्था की गुणवत्ता को बनाने वाले प्रत्येक स्तंभ को हिलाकर तत्पश्चात् सर्वाधिक नष्ट स्तंभों के नवनिर्माण पर ध्यान केन्द्रित करने के लिए मजबूर कर देते हैं। इस प्रक्रिया में नवनिर्माण में विशेषतः उन नष्ट स्तंभों पर ज्यादा ध्यान दिया जाता है जो ना सुधारे जाने पर व्यवस्था को पूर्ण रूप से विध्वंस कर सकते हैं। यद्यपि कमजोर स्तम्भों को सुधारते समय निर्माण कार्य पूर्व के मजबूत स्तंभों के ऊपर उनकी शक्ति के प्रभाव से संज्ञान लिए रहता है। एवं उसे नए व पुराने दोनों स्तंभों की शक्ति को आपस में व्यवस्थित करना होता है। दूसरे शब्दों में निर्माणकर्ता व्यवस्था की एकरूपता/अखंडता को सुरक्षित करते हुए व्यवस्था की पहुँच के प्रति ईमानदार रहता है एवं सभी स्तंभों की शक्ति के मध्य संतुलन बनाए रखकर निमें संतुलन का भार व्यवस्था की विशिष्ट आवश्यकताओं व प्राथमिकताओं के द्वारा निर्धारित होता है, निर्माणकर्ता यह कार्य करता है।

एक गुणवत्ता शिक्षा व्यवस्था की संकल्पना

यह रूपरेखा क्रियान्वित करने के रूप में एक गुणवत्ता शिक्षा व्यवस्था की संकल्पना एक ऐसी व्यवस्था के रूप में करना है ''जो उद्देश्य के लिए प्रभावकारी हो, इसमें वहनीय/बने रहने वाले विकास'' 7 प्रासंगिकता व उत्तरदायित्व हो, समानतापूर्ण हो, जो दक्षतापूर्ण स्त्रोत वाली हो एवं प्रत्यक्ष मूल रूप से कार्य करती हो ना कि सिर्फ प्रतीकात्मक पैठ रखती हो।'' 8 GEGAF के मुख्य बिन्दुओं से सामंजस्य रखते हुए यह परिभाषा गुणवत्ता शिक्षा व्यवस्था को एक अत्यावश्यक पूर्ण स्थिति के रूप में देखती है जो अच्छी गुणवत्ता शिक्षा

एवं अधिगम प्रभावपूर्णता के समानतापूर्वक क्रियान्वयन में अपेक्षनीय होती है। इस प्रकार हम क्रियाशील रूप से यह परिभाषित करते हैं कि एक अच्छी गुणवत्ता शिक्षा व्यवस्था को कौन से तत्व निर्मित करते हैं एवं कौन से तत्व एक गुणवत्ता शिक्षा को नहीं निर्मित करते हैं। इनमें बाद की स्थिति पूर्ण स्थिति का ही परिणाम होती है। इस प्रकार यह परिभाषा व्यवस्था के उन मुख्य तत्वों पर ध्यान केन्द्रित करती है जो गुणवत्ता शिक्षा की स्थितियाँ उत्पन्न करते हैं एवं प्रभावपूर्ण अधिगम अनुभवों की सर्वश्रेष्ठ प्रदत्ता सुनिश्चित करते हैं।

रूपरेखा की संरचना

यूनेस्को GAGAF इन मुख्य तत्वों से बना है जो संवाद रूप से एवं पुनरावृत्तीय रूप से साथ–साथ चलकर व्यवस्था को सर्वश्रेष्ठ रूप से गुणवत्ता शिक्षा एवं प्रभावपूर्ण अधिगम अनुभवों को उपलब्ध एवं शिक्षा को बहुत से बच्चों के पास नहीं है में अन्तर करने वाली रचना है। ले जाती है बजाए प्रत्यक्ष मूल पैठ शिक्षा में प्रभावपूर्ण व सफल सहभागिता की बात करती है। यह विद्यालयीन शिक्षा जो बहुत से बच्चों के पास है कराने योग्य बनाते हैं। यह तत्व उन विकास लक्ष्यों को प्राप्त करने में उपयुक्त होते हैं जो एक शिक्षा व्यवस्था के मुख्य परिणामों को निर्देशित करते हैं, एक शिक्षा व्यवस्था के उपेक्षित परिणाम होते हैं, परिणामों के उत्पादन को सक्षम बनाने वाली कार्ययोजना को सहायता देने वाले एवं इन परिणामों को लाने वाली मूल प्रक्रियाएँ व मूल स्त्रोत होते हैं।

विस्तृत रूप से यह तत्व निम्न चित्र में बतलाए गए है एवं कुल 14 विश्लेणात्मक उपकरणों में व्यक्त है जो साथ मिलकर GEGAF बनाते हैं। वेब आधारित उपयोग पर यह चित्र एक संस्थागत् अन्वेषक या योजना के रूप में कार्य कर उपयोग के दौरान GEGAF को आगे बढ़ाने हैं। योजनबद्ध उद्देश्य यह तत्व क्रम में आने हैं परंतु वास्तविक विकास में यह एक समुदाय रूप में, वार्ता रूप में, पुनरावृत्ति रूप में एवं एक दूसरे से जुड़े हुए हैं। प्रत्येक, विश्लेषणात्मक

उपकरण कुछ गम्भीर प्रश्न उठाता है जो GEGAF में प्रत्येक तत्व की पर्याप्तता के विश्लेषण के दौरान उठाए जाना आवश्यक है जिसे गुणात्मक व अधिगम प्रभाव में योगदान मिल सके। उदाहरण के लिए एक महत्वपूर्ण तत्व के रूप में शिक्षक के प्रति व्यवहार निम्न प्रश्नों को उठाता है। :– व्यावसाय की उनकी पसंद, प्रवेश मापदण्ड, पूर्व एवं सेवा में प्रशिक्षण, चयन, कार्य स्थितियाँ, प्रबंधन व उपयोग, तनख्वाह व पारिश्रमिक पुरस्कार, सेवा में बने रहना व सेवामुक्त होना।

अधिगमकर्ता के प्रति व्यवहार, उनके प्रवेश के स्तर – सामाजिक आर्थिक पृष्ठीभूमि, अधिगम हेतु त्वरितता, स्वास्थ्य स्थितियाँ, पोषण – स्वास्थ्य सेवाओं तक पैठ, कानूनी व सामाजिक सुरक्षा सेवाओं तक पहुँच, प्रवेश मापदण्ड विद्यालय में अकादमिक व व्यवहार सेवाएँ एवं अन्य सहायता सेवाओं को शामिल करता है। राजकोषीय स्त्रोंतो पर प्रश्न उनके स्त्रोंतो, पर्याप्तता, बंटवारे, समानता, प्रबंधन, उपयोग, दक्षता एवं सतत् बने रहने पर निर्भर करता है।

चित्रः सामान्य शिक्षा गुणवत्ता विश्लेषण रूपरेखा (GEGAF)

निदानात्मक प्रक्रिया को सुगम बनाने हेतु GEGAF की रीढ़ के रूप में कुछ मुख्य प्रश्न है। प्रत्येक विश्लेषणात्मक उपकरण स्त्रोत सामग्री को एक विस्तृत पुस्तकालय से जुड़ा है जिसमें तकनीकी टिप्पणी, टिप्पणियाँ एवं उदीयमान अभ्यासों के उदाहरण जो निदान एवं विश्लेषण में सहायक हैं शामिल हैं ? यह स्त्रोंतो का पुस्तकालय सतत् रूप से नए उदीयमान अभ्यासों व नये ज्ञान से भरा रहेगा। GEGAF के मूल तत्वों पर प्रश्न एक दूसरे से विपरीत रूप से संबंधित हैं जबकि ऐसे विपरीत संदर्भ एक व्याख्या को व्यवस्था रूप में समझने में कठिन होते हैं। GEGAF बनाने वाले विश्लेषणात्मक उपकरण सामान्य है एवं किसी विशिष्ट राष्ट्र हेतु नहीं बनाए गए हैं। किसी भी राष्ट्र या क्षेत्रीय खण्ड हेतु

इस रूपरेखा को उपयोग करने का आरंभिक बिंदु इस रूपरेखा का विशिष्ट सीानीय या क्षेत्रीय संदर्भ में अनुकूलन है।

रूपरेखा का अनुप्रयोग

इस रूपरेखा के अनुप्रयोग को तीन मुख्य कारणों से बनाया गया हैं (a) आरम्भिक मार्गदर्शिका (b) सतत् चल रहा अंगीकार्य करने का एवं अनुकूलन का कार्य (c) रूपरेखा का सतत् सुधार। प्रारम्भिक मार्गदर्शिका की स्थिति में राष्ट्रों का एक समूह अपनी व्यवस्था में रूपरेखा की जांच करेगा। यह मार्गदर्शिका व्यवस्थित व समझपूर्ण होनी चाहिए कयोंकि यह रूपरेखा के व्यवस्था संबंधित मुद्दों के वास्तविक निर्धारण की ओर लक्ष्य करती है। इस मार्गदर्शिका में भाग ले रहे राष्ट्र एवं वैश्विक सार्वजनिक उत्पाद उपलब्ध करा रहे होते है जो रूपरेखा द्वारा जांचे जाकर अन्य राष्ट्रों द्वारा उपयोग होते हैं। परंतु यह उन्हें स्वयं को भी लाभ देते हैं क्योंकि यह रूपरेखा उनसे कुछ ऐसे निश्चित प्रश्नों को पूछती है जो पहले कभी नहीं पूछे गए थे एवं कभी ऐसे व्यवस्थित रूप से व्यवहार में नहीं लाए गए थे। प्रभावपूर्ण मार्गदर्शिका को सुगम बनाने हेतु UNESCO ने मार्गदर्शिका निर्देशिकाएँ एवं मार्गदर्शिका व प्रतिपुष्टि उपकरण तैयार किया है। मार्गदर्शिका की प्रतिपुष्टि पर आधारित, GEGAF, अपनी निर्देशिकाएँ एवं मार्गदर्शिका उपकरण आगे भी और परिष्कृत होता रहेगा एवं रूपरेखा अंगीकार्य होने एवं अनुकूलन हेतु तैयार रहेगी। जैसे–जैसे अधिकाधिक राष्ट्र इस रूपरेखा को उपयोग करेंगे इसके अनुपयोग में ज्यांदा अनुभव की प्राप्ति होगी नियमित रूप से सुधार किए जाएंगे। एक वेब आधारित उपकरण होकर GEGAF सतत् परिष्कृत होने एवं उपयोगी बने रहने हेतु उपयुक्त है।

मुख्य उपयोगकर्ता, लाभ प्राप्तकर्ता एवं लक्ष्य जनता

इस रूपरेखा की लक्ष्य जनता मुख्यतः नीति निर्धारक, शिक्षा योजना निर्माता एवं अभ्यासकर्ता है जो अपनी सामान्य शिक्षा व्यवस्था की गुणवत्ता एएवं समानता को सुधारने की इच्छा रखते हैं। मुख्य लाभ प्राप्तकर्ता वह राष्ट्र होंगे जिनकी अपनी व्यवस्थाओं में गुणवत्ता बाधाओं को पहचानने की एवं उन बाधाओं से प्रभावपूर्ण पूर्ण रूप से निपटने की क्षमता बढ़ेगी। अधिगमकर्ता, उनके परिवार एवं समुदाय अंतिम लाभ प्राप्तकर्ता होंगेः विशेषतः गरीब घरों एवं अन्य साधनहीन वर्गों के अधिगमकर्ता जिनके द्वारा गुणवत्ता शिक्षा को प्राप्त करने एवं इसके प्रभाव से और लाभ प्राप्त होने के अवसर महत्वपूर्ण रूप से बढ़ जाएंगे।